केनरा बैंक की
त्रैमासिक
हिंदी गृह पत्रिका

केनरा ज्योति

अंक : 39

जनवरी-मार्च 2024

महिला दिवस विशेषांक 2024

Canara SHG e-MONEY

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking
सिंडिकेट Syndicate

Together We Can

दिनांक 18.04.2024 को श्री के. सत्यनारायण राजु, एमडी व सीईओ द्वारा कार्यपालक निदेशक श्री देबाशीष मुखर्जी, श्री अशोक चन्द्र एवं श्री हरदीप सिंह अहलूवालिया की उपस्थिति में प्रोजेक्ट आरोहण टूल्स लॉन्च किए गए। श्री डी. सुरेन्द्रन, मु.म.प्र एवं श्री अमिताभ चटर्जी, म.प्र., मानव संसाधन विभाग तथा टीम एचआर ट्रांस्फोर्मेशन भी तस्वीर में नज़र आ रहे हैं।

प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु में दिनांक 05.03.2024 को 191वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान बैंक की गृह पत्रिका केनरा ज्योति के 38वें अंक का विमोचन करते हुए श्री अशोक चंद्र, कार्यपालक निदेशक तथा उपस्थित अन्य कार्यपालकगण।

श्री के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक
व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

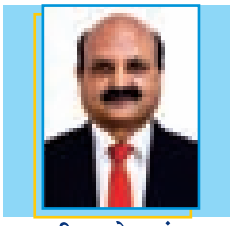

श्री अशोकचंद्र
कार्यपालक निदेशक

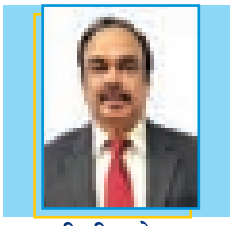

श्री डी. सुरेन्द्रन
मुख्य महाप्रबंधक

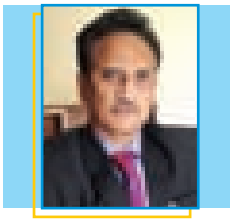

श्री टी. के. वेणुगोपाल
महाप्रबंधक

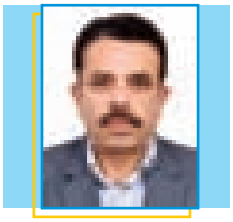

श्री ई. रमेश
सहायक महाप्रबंधक
मुख्य संपादक

संपादक
रीनु मीना, प्रबंधक

संपादन सहयोग
श्री जी. अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री राघवेन्द्र कुमार तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री मयंक पाठक, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री डी. बालकृष्ण, वरिष्ठ प्रबंधक
श्री विजय कुमार, अधिकारी

बिक्री के लिए नहीं

प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बेंगलूरु - 560 002
दूरभाष : 080-2223 4079
ई-मेल: hool@canarabank.com
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु
* * *
पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

विषय सूची — पृष्ठ संख्या

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश – के. सत्यनारायण राजु	2
मुख्य संपादक का संदेश – ई. रमेश	3
38वां अंक मेरी नज़र में	4
महिलाओं को प्रोत्साहन: राष्ट्र की उन्नति में सहयोग – अखिलेश शर्मा	5
भारत की प्रसिद्ध लेखिकाएं – अंकिता रानी	9
स्त्री सम्पूर्ण प्रकृति है... – मनजीत कौर	12
माँ – सचिन कुमार	13
मीराबाई चानू की कहानी – सोनिया कुमारी	14
बिटिया रानी – अमित कुमार	18
नारी नहीं अभिमान.... – विनोद कुमार बेदिया	20
स्टेशन जो छूट गया – मीता भाटिया	21
नारी तुम स्वतंत्र हो.... – ललिता त्रिपाठी	22
प्रधान कार्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	23
यूको बैंक हिंदी निबंध प्रतियोगिता – विजेता	24
बैंक ऑफ महाराष्ट्र हिंदी सेमिनार – विजेता	25
एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन	26
सृष्टि गीत – भरत आदित्य	27
बेटी – रेनी श्रीवास्तव	27
एक सलाम नारी शक्ति के नाम – विधि जटनीया	28
महिला सशक्तिकरण – श्वेता शर्मा	31
मानव कंप्यूटर – शकुंतला देवी – धीरज जुनेजा	32
कृतज्ञता – स्वीटी राज	34
नारी : एक जीवंत समाज का आधार – अश्वनी कुमार गुप्ता	35
मेरा संघर्ष – मो. जुहैब	36
मलयालम की महिला कहानीकार – एक परिचय – आर्या विश्वनाथ	37
काबिल – अर्चना	40
अपने घर की बेटी..... – प्रमोद रंजन	41
नारी – प्रतीक सैनी	42
खुद में मैं हूँ..... – निपुण टिग्गा	42
जीज़ाबाई – मौसुमो मोहान्तो	43
यह कैसी आस्था? – अल्पना शर्मा	45
महिला अभूतपूर्व है – आस्था आहूजा	47
मैं नारी हूँ, बनी रहूँ, बढ़ती रहूँ – सौम्या अग्रवाल	47
माँ तो माँ होती है – प्रिया पँवार	48

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय केनराइट्स !

केनरा बैंक की त्रैमासिक हिंदी गृह पत्रिका केनरा ज्योति के 39वें अंक को भावों के विभिन्न रंगों में समेटे हुए **महिला दिवस विशेषांक** के रूप में आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता एवं हर्ष की अनुभूति हो रही है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग के साथ-साथ आज समय की आवश्यकता यही है कि हम भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं को कारोबार की भाषा के रूप में अपनाते हुए बैंक के विकास में अपना सक्रिय योगदान दें। भाषा ग्राहक सेवा का एक **महत्वपूर्ण** अंग है। सभी बैंक एक ही तरह के उत्पाद प्रदान करते हैं, केवल उसे बेचने का सामर्थ्य रखने वाले ही उस क्षेत्र में निखर कर आते हैं। बेहतर ग्राहक सेवा देकर हम अपने बैंक के कासा तथा खुदरा उत्पादों को अधिक-से-अधिक ग्राहकों को प्रदान कर सकते हैं।

बेहतर ग्राहक सेवा की कड़ी में एक पहल करते हुए बैंक ने 02 अप्रैल, 2024 को एंड-टू-एंड डिजिटलाइज़ेशन करने के लिए कई उत्पादों जैसे केनरा एसएचजी- ई मनी, केनरा हील, केनरा एंजेल, केनरा रेडी कैश, केनरा माई मनी, केनरा यूपीआई123 पे तथा बैंक कर्मचारियों के लिए एचआरएमएस मोबाइल ऐप जैसे कई उत्पाद लॉन्च किए हैं जिसमें विशेष रूप से केनरा एंजेल, केनरा एसएचजी - ई मनी पैकज हमारी उन महिला ग्राहकों के लिए है जो अपनी व्यस्तता के चलते नियमित रूप से बैंक आने में असमर्थ हैं। इन पैकेज उत्पादों की सहायता से खाता खोलने से लेकर ऋण प्रदान करने तक की सेवा ग्राहक को उनकी सुविधा अनुसार प्रदान की जाएगी।

केनरा बैंक अपने ग्राहकों को निरंतर सेवाएं देने हेतु अग्रणी रहा है। दिनांक 08 मई, 2024 को घोषित हमारे बैंक के वित्त वर्ष 2023-24 के वित्तीय परिणामों से यह स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है। इस बार हमारे बैंक का वैश्विक कारोबार ₹ 22,72,368 लाख करोड़ हो गया है जो कुल 11.31% की वृद्धि है। हमारे बैंक के सकल अग्रिम में 11.34% वृद्धि हुई है और बैंक का निवल लाभ ₹ 3757 करोड़ रहा है, जोकि 18.33% वर्षानुवर्ष की वृद्धि है। बैंक की निवल ब्याज आय में 11.18% की वृद्धि हुई है। परिसंपत्ति गुणवत्ता के मामले में, बैंक की सकल अनर्जक आस्तियाँ 31 मार्च, 2024 तक कुल अग्रिम के 4.23% पर आ गईं हैं। इसी तरह निवल एनपीए भी घटकर 1.27% रह गई हैं। केनरा बैंक को समग्र रूप से देश का सर्वश्रेष्ठ बैंक बनाने की दिशा में हमें यह प्रयास जारी रखना है।

बैंकिंग परिदृश्य में तेज़ी से बदलाव आया है इस परिवर्तन के दो प्रमुख कारण हैं : नई तकनीक एवं ग्राहकों की अपेक्षाएँ। फिनटेक कंपनियों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के वित्तीय क्षेत्र में प्रवेश ने बैंकिंग में नए आयाम जोड़े हैं। आज बैंक और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ नवोन्मेषी तकनीकी सहायता से वित्तीय उत्पाद व सेवाएं प्रदान करने के लिए फिनटेक कंपनियों से गठजोड़ कर रही हैं। अपने बैंक के उत्पादों का अधिक-से-अधिक प्रचार-प्रसार करके हम बैंक के कारोबार में और भी अधिक वृद्धि कर सकते हैं। आइए, हम सब एक टीम के रूप में कार्य कर, इस संस्था को आने वाले वर्षों में और भी ऊँचाइयों पर ले जाने का प्रयास करें।

सभी लेखकों से अनुरोध है कि वे पत्रिका हेतु निरंतर बैंकिंग संबंधी लेख प्रेषित करते रहें तथा सभी पाठकगण निरंतर पत्रिका को पढ़ें व इसका संवर्धन करें। केनरा ज्योति पत्रिका का प्रकाशन एक सकारात्मक एवं सराहनीय प्रयास है, पत्रिका के पाठकों एवं संपादन मंडल को हार्दिक बधाई और पत्रिका के निरंतर प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

के. सत्यनारायण राजु
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मुख्य संपादक का संदेश

प्रिय पाठकों,

केनरा ज्योति पत्रिका का 39वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्षानुभूति हो रही है। केनरा ज्योति का यह विशेषांक महिलाओं को समर्पित है जो अपने योगदान से इस अद्भुत, सुंदर और अनूठे संसार को आकार देती हैं। सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, दार्शनिक तथा शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धि को याद करने हेतु प्रत्येक वर्ष विश्व स्तर पर 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। हमारे प्रतिभाशाली लेखकों द्वारा उनके लेख/ कविताओं/ आलेखों के माध्यम से इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के थीम **''महिलाओं में निवेश करें: प्रगति में तेज़ी लाएं''** को सार्थक रूप से व्यक्त किया गया है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमन्ते तत्र देवता। अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

समाज में समानता बनाए रखते हुए महिला एक माँ, बहन, पत्नी, पुत्री व पुत्र-वधु के रूप में अहम भूमिका निभाती है। घर चलाने से लेकर हवाई जहाज़ उड़ाने तक महिलाएं अपना योगदान दे रही हैं। देश के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति के रूप में श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, देश की वित्त मंत्री के रूप में श्रीमती निर्मला सीतारमण इस बात की पुष्टि करती हैं कि आज महिलाएं हर क्षेत्र में अपने वर्चस्व को बरकरार रखी हुई हैं। भारत की 'रॉकेट वूमेन' के नाम से प्रसिद्ध डॉ. ऋतु करिधल श्रीवास्तव, जो चंद्रयान-3 की मिशन डायरेक्टर हैं, जिनकी भारत को चंद्रमा की सतह पर पहुँचाने में अहम भूमिका है, जो महिला सशक्तिकरण का जीवंत उदाहरण है। महिला दिवस महिलाओं का हौंसला बढ़ाने, उनका सम्मान करने, उनको अधिकार दिलाने तथा उन्हें जागरुक करने के लिए मनाया जाता है ताकि देश व समाज की महिलाएं स्वयं को कमज़ोर न समझें तथा पुरुषों के साथ कदम-से-कदम मिलाकर आगे बढ़ सकें।

महिलाएं, राष्ट्र एवं समाज के निर्माण में बदलाव लाने, भविष्य के लिए संगठन का निर्माण करने, बेहतर कार्य करने हेतु सुरक्षित इको सिस्टम निर्मित करने तथा समाज को पुनः परिभाषित करने में अहम भूमिका निभाती हैं। हमारे बैंक की अनूठी पहल 'अद्वैत' ने अपनी महिला कर्मचारियों के संपूर्ण विकास व उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने का कार्य किया है।

इस वर्ष केनरा बैंक द्वारा इस क्षेत्र में अपना योगदान देते हुए बेंगलूरु नगर में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों तथा वित्तीय संस्थानों की महिला कर्मचारियों के लिए बृहद रूप से महिला सशक्तिकरण एवं नेतृत्व विकास पर आधारित कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसकी अन्य कार्यालयों द्वारा खूब सराहना भी की गई।

संपादक मंडल की ओर से, मैं उन सभी रचनाकारों और लेखकों को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस विशेषांक के प्रकाशन को सफल बनाने में योगदान दिया है। हमें प्रतीक्षा रहेगी आपकी प्रतिक्रियाओं की..... ।

अनेक शुभकामनाओं के साथ,

आपका,

ई रमेश
सहायक महाप्रबंधक

38वां अंक मेरी नज़र में

आपके प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित पत्रिका केनरा ज्योति का अंक 38 इस कार्यालय को प्रेषित करने के लिए मेरी ओर से कृपया धन्यवाद स्वीकार करें। इस अंक में विशेष रूप से बैंकिंग का सफर: नए इनोवेशन की ओर, हिंदी का मानक रूप : प्रयोग की व्यवहारिक समस्याएं, हमारी अपनी राजभाषा हिंदी उत्कृष्ट लेख हैं। साथ ही, इसरो : भारत की नई उम्मीद, सूरज बन जा तू एवं मैं मशाल लेकर दौड़ूंगा निश्चित रूप से प्रेरणादायक हैं। इस अंक में सचित्र महत्वपूर्ण जानकारियां उत्कृष्ट लगीं। इस अंक में आपके प्रतिष्ठान की संक्षिप्त किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी समाहित की गई है। पत्रिका के आवरण पृष्ठ एवं सभी चित्रमय सूचनात्मक गतिविधियां भी अत्यंत आकर्षक हैं। इस पत्रिका का संपादन निश्चित रूप से सराहनीय है।

मैं, संपादक समिति को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि इसी तरह आपके कुशल नेतृत्व में नई-नई विधाओं के अंक आपके प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित किए जाते रहेंगे। निश्चित रूप से यह अंक संग्रहणीय है। पत्रिका के संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

– हरीश सिंह चौहान
सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य)
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार

हमें खुशी है कि हमें आपकी तिमाही हिन्दी पत्रिका केनरा ज्योति की प्रतियाँ निरंतर मिलती रहती हैं।

हमेशा की तरह पत्रिका का 38वां अंक भी रोचक एवं सूचनाप्रद है। पत्रिका के समस्त लेख सराहनीय हैं। हमारी ओर से संपादक मण्डल को इस महत प्रयास के लिए बहुत-बहुत बधाईयां।

– अजय कुमार
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग, कार्पोरेट कार्यालय
इंडियन बैंक

आलेख

महिलाओं को प्रोत्साहन: राष्ट्र की उन्नति में सहयोग

अखिलेश शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक
वित्तीय सेवाएं विभाग (प्रतिनियुक्ति पर)

महिलाओं को प्रोत्साहन एक महत्वपूर्ण और आज के परिदृश्य में आवश्यक विषय है जो हमारे समाज में छाए गहरे संकटों, कुरीतियों और सामाजिक परंपराओं के खिलाफ लड़ाई में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है। इस विषय पर हमें एक काम तो अवश्य ही करना चाहिए कि कम से कम अपने घर, समाज, दोस्तों, रिश्तेदारों के बीच चर्चा-परिचर्चा ज़रुर करें।

बहरहाल, महिलाओं का सम्मान, समानता, सद्भाव और स्वतंत्रता का संघर्ष लगातार चला ही आ रहा है और इस संघर्ष में पूर्णतः सफल होने के लिए, हम सभी को लगातार महिलाओं को सभी क्षेत्रों में ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देना, उनको प्रोत्साहित करना, उनमें आत्मविश्वास जगाना इत्यादि जैसे कार्य करने होंगे। इस काम में अभी और भी ज्यादा कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है। इस नेक काम की शुरुआत तो हमें अपने घर से ही करनी चाहिए।

अक्षरशः हम बड़े परिदृश्य में देखें, तो पाएंगे कि किसी भी राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका को कतई अनदेखा नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए हम दुनिया के विकसित राष्ट्रों जैसे की ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा इत्यादि की ओर देख सकते हैं। वैसे भी कहा गया है कि महिला और पुरुष दोनों समान रूप से समाज के दो पहियों की तरह ही कार्य करते हैं और समाज को प्रगति की ओर ले जाते हैं। ठीक वैसे ही जैसे किसी भी गाड़ी को अच्छे तरीके से चलने के लिए दोनों पहियों को साथ-साथ और सामान रूप से चलना आवश्यक है। इसी तरह दोनों (महिला एवं पुरुष) की समान भूमिका को देखते हुए यह आवश्यक है कि उन्हें (महिलाओं) शिक्षा के साथ-साथ अन्य सभी क्षेत्रों में समान अवसर दिए जाएं, उन्हें बराबरी का दर्जा दिया जाए, उनके साथ भेद-भाव न हो। क्योंकि यदि कोई एक पक्ष भी कमज़ोर रह गया तो सामाजिक प्रगति संभव नहीं हो पाएगी और हमारा समाज ही यदि प्रगति नहीं कर पाया तो हम क्या प्रगति करेंगे? हमारा देश कैसे प्रगति करेगा?

बहरहाल, हम यदि अपने देश की बात करें तो हमें यह जान कर गौरवान्वित होना चाहिए कि हमारा भारत वर्ष अनादी काल से ही एक सम्पन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश रहा है, हमेशा से ही महिलाओं का हमारे समाज में प्रमुख स्थान रहा है। हमारे देश में महिलाएं बहुत से क्षेत्रों में अग्रणी रहीं है। इस बात का प्रमाण जानने के लिए हमें हमारे आदि - ग्रंथों को पढ़ना, देखना और समझना होगा कि हमारे यहाँ महिलाओं का कैसा आदर हुआ करता था। उनकी स्थिति कैसी रही होगी, इत्यादि। हमारे ग्रंथों में स्पष्ट रूप से नारी के महत्त्व को मानते हुए यहाँ तक बताया गया है कि '**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता**' अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

आगे, अगर हम प्राचीन वैदिक काल की तरफ देखें तो पाएंगे कि :

- भारत में महिला शिक्षा का इतिहास प्राचीन वैदिक काल से जुड़ा हुआ है। यहाँ उल्लेखनीय यह है कि लगभग 3000 से अधिक वर्ष पूर्व वैदिक काल के दौरान ही महिलाओं को समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था और उन्हें (महिलाओं को) भी पुरुषों के समान ही समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता था।
- वैदिक अवधारणा के स्त्री शक्ति सिद्धांत के अनुसार, महिलाओं की देवी के रूप में पूजा शुरू हुई - देवी को माँ का दर्जा दिया गया था। उदाहरण के लिए शिक्षा हेतु देवी सरस्वती माता की आराधना शुरू हुई। आतंरिक शक्ति, बल, शत्रु पर विजय इत्यादि प्राप्त करने के लिए देवी दुर्गा माता की पूजा शुरू हुई। धन अर्जन या धन पाने के लिए देवी लक्ष्मी माता की पूजा शुरू

हुई। यही नहीं, आगे हम अपने देश के सभी क्षेत्रों में बहने वाली अनेक नदियों को भी देखेंगे तो पाएंगे की लगभग सभी नदियों का नाम भी स्त्रियों के नाम पर ही है। हमारे देश को भी हम सब देशवासी, 'भारत माता' ही कहते हैं। कहा भी गया है जननी जन्म भुमिस्चः स्वर्गादपी गरीयसी।

- आगे हमारे वैदिक शास्त्रों में महिलाओं के उचित विकास के लिए यह भी कहा गया है कि लड़कों के साथ लड़कियों को उचित देखभाल के साथ पोषित और प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। उनके खान-पान, रहन-सहन, कपड़े इत्यादि जैसी बुनियादी चीज़ों की कभी भी कोई कमी नहीं छोड़नी चाहिए। चूँकि, महिला को हमारे वैदिक शास्त्र में जननी का दर्जा दिया गया है। महिलाओं को ही जन्म देने की शक्ति मिली हुई है। इसीलिए ये कहा गया है कि महिलाएं पुरुषों के समान ही पोषित होती रहें ताकि एक स्वस्थ समाज का सृजन होता रहे।
- हमारे वैदिक साहित्य में उन महिलाओं का भी स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है जिन्होंने वैदिक अध्ययन का रास्ता चुना, ज्ञान अर्जन किया और उस ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने का काम किया।
- जैसा की हम सब जानते हैं कि किसी भी महिला के लिए जीवन भर अपने कर्तव्यों को निभाना, अपने पूरे के पूरे परिवार को त्याग कर किसी अलग परिवार को अपना लेना, वहाँ जा कर अपना सब कुछ भूल कर उस नए परिवार के सभी लोगों के साथ घुलमिल कर रहना, बहुत ही बड़ा एवं कठिन कार्य होता है। मुझे ये कहते हुए कतई संकोच नहीं हो रहा है कि इस तरह का कार्य करना किसी भी पुरुष के लिए कठिन ही नहीं अपितु असंभव कार्य है। बहरहाल, हम अपने वैदिक काल की तरफ लौटे तो पता चलता है कि उनका (महिलाओं का) विवाह भी परिपक्वता की आयु में ही होता था तथा उन्हें अपने वर चुनने की आज़ादी भी होती थी। इस बात का प्रमाण हमें हमारे पौराणिक ग्रन्थ जैसे की रामायण, महाभारत आदि से मिल सकता है।

अब हम वैदिक काल से आगे बढ़ते हैं और अपने देश के ग्रामीण क्षेत्रों की तरफ देखने का प्रयास करते हैं। यदि हम भारत के ग्रामीण परिदृश्य की बात करें तो पाएंगे कि इस क्षेत्र (ग्रामीण) में महिलाओं की एक बहुत बड़ी आबादी रहती है। परन्तु, दुर्भाग्यवश विदेशी शासनकाल के समय में हमारे इसी समाज में अनेक कुरीतियां व विकृतियाँ पैदा हुईं, जिसके फलस्वरूप महिलाओं का बहुत ज्यादा उत्पीड़न हुआ, उनका

बहुत ही ज्यादा शोषण हुआ।

हालांकि, आजादी के बाद कुछ हद तक समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार ज़रुर आया एवं महिलाओं का समाज में कुछ हद तक सम्मान भी बढ़ा, लेकिन उनके सशक्तिकरण की गति कई-कई दशकों तक धीमी ही रही। अनेक बाधाओं के अलावा गरीबी व निरक्षरता महिलाओं की प्रगति में गंभीर बाधा रही है।

हालाँकि, अब आगे हम इस बात के निवारण की तरफ कार्य करने की सोचेंगे तो हम पाएंगे की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल के माध्यम से महिलाओं को व्यवसाय की ओर प्रोत्साहित कर इन्हें आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत आज़ादी के लिए उनको स्वयं सहायता समूह से जोड़ना और महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनना, स्वतंत्र तरीके से निर्णय ले पाना, परिवार, समाज में सम्मान बढ़ना, खुद पर भरोसा बढ़ना, किसी और पर आश्रित न रहना इत्यादि बहुत बड़े उदाहरण और प्रमाण हैं। आगे, विशेषकर कृषि प्रसंस्करण उद्योगों, बैंकिंग सेवाओं और डिजिटलीकरण की सहायता से महिलाओं के सामाजिक और वित्तीय सशक्तिकरण की शुरुआत की जा सकती है और इस कार्य को तेज गति दी जा सकती है।

भारतीय महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में पुर्णतः सक्षम हैं। भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने भी अपने शब्दों में कहा है, हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं, बल्कि इस रोशनी की लौ भी हैं। वैसे भी अनादि काल से ही

महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्रोत रही हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक, महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के उच्च कोटि के उदाहरण स्थापित किए हैं।

भारतीय इतिहास महिलाओं की उपलब्धि से भरा पड़ा है। आनंदीबाई गोपालराव जोशी पहली भारतीय महिला चिकित्सक थीं और यही नहीं वो संयुक्त राज्य अमेरिका में पश्चिमी चिकित्सा में दो साल की डिग्री के साथ स्नातक होने वाली पहली महिला चिकित्सक भी रही हैं। सरोजिनी नायडू ने साहित्य जगत में अपनी छाप छोड़ी है। हरियाणा की संतोष यादव ने दो बार माउंट एवरेस्ट फतेह किया है। बॉक्सर एमसी मैरी कॉम एक जाना-पहचाना नाम है। हाल ही के वर्षों में, हमने कई महिलाओं को भारत में शीर्ष पदों पर और बड़े संस्थानों का प्रबंधन करते हुए भी देखा है - अरुंधति भट्टाचार्य, एसबीआई की पहली महिला अध्यक्ष, अलका मित्तल, ओएनजीसी की पहली महिला सीएमडी, सोमा मंडल, सेल अध्यक्ष, कुछ ओर नामचीन महिलाएं हैं, जिन्होनें विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। हमारे देश की वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने अपने कुशल प्रबंधन से हमारे देश की वित्तीय स्थिति को मजबूती प्रदान की है और पूरे विश्व में इस बात की चर्चा होती है।

अभी कुछ वर्ष पूर्व ही आई बहुत बड़ी त्रासदी / महामारी कोविड-19 का प्रकोप तो भारत के साथ-साथ पूरा विश्व जानता है। इस भीषण त्रासदी के दौरान कोरोना योद्धाओं के रूप में महिला डाक्टरों, नर्सो, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपनी जान की परवाह न करते हुए मरीजों को उत्कृष्ट सेवाएं दी हैं। ये ऐसा भयावह समय था जब आदमी-आदमी को देख कर डरने लगा था, घबराने लगा था। लोगों ने एक दूसरे से बातचीत, हालचाल लेना तक लगभग बंद कर दिया था। उसी कोरोना काल में कोरोना के खिलाफ टीकाकरण अभियान को सफल बनाने में महिलाओं ने बेहद ही अहम भूमिका निभाई है। ऐसा मानवता पूर्ण कार्य वो भी पूरे नि:स्वार्थ भाव से वही कर सकता है जिसको दूसरे के प्रति ममता के भाव हो, करुणा के भाव हो और ये भाव तो केवल महिलाओं में ही पाए जा सकते हैं। अब चूंकि कोरोना काल की बात चली है तो हम सब को ज्ञात ही होगा कि भारत बायोटेक की संयुक्त एमडी सुचित्रा एला को स्वदेशी कोविड -19 वैक्सीन 'कोवैक्सिन' विकसित करने में उनकी शानदार भूमिका के लिए पद्म भूषण से हमारी भारत सरकार ने सम्मानित भी किया है। यही नहीं, इसी क्रम को आगे बढाते हुए, महिमा दतला, एमडी, बायोलॉजिकल ई, ने 12-18 वर्ष की आयु के लोगों को दी जाने वाली कोविड-19 वैक्सीन विकसित करने के लिए अपनी टीम का बड़ी ही कुशलता के साथ नेतृत्व किया है। उपरोक्त से हम इस निष्कर्ष पर तो पहुँच ही सकते हैं कि नि:स्संदेह ही महिलाएं और लड़कियां समाज में न्यायिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलाव की अग्रदूत रहीं हैं।

इसी उन्नति के क्रम को आगे बढ़ाते हुए, महिलाओं की स्थिति में अच्छा सुधार लाने के लिए तथा हमारे भारत देश को मानवता के लिए स्वर्ग समान जगह बनाने के लिए हमारी भारत सरकार सतत विकास लक्ष्यों की ओर तेजी से बढ़ चली है। हमारी सरकार के प्रयास अब जमीनी स्तर पर दिख भी रहे हैं। अब हम सभी देशवासी, चाहे किसी भी समुदाय, जाति, धर्म से जुड़े हों पर हम सब गौरव के साथ कह सकते हैं कि भारत सरकार के प्रमुख उद्देश्यों में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण करना सतत विकास लक्ष्यों में प्रमुखता रखता है। इस ओर हम देखेंगे तो पाएंगे की वर्तमान में और क्षेत्रों के अलावा भी प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, समावेशी आर्थिक और सामाजिक विकास जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार द्वारा विशेष ध्यान दिया गया है। जिसके फलस्वरूप अब लगभग सभी क्षेत्रों में हम महिलाओं की महत्वपूर्ण भागीदारी साफ़-साफ़ देख सकते हैं। यही नहीं अपनी योग्यता का लोहा मनवाते हुए महिलाओं ने कई क्षेत्रों में कई परिवर्तन लाएं हैं जो कि बहुत बड़ी बात है।

मुझे यह लिखते हुए बहुत ख़ुशी हो रही है कि महिलाओं में जन्मजात कुशलता के साथ नेतृत्व करने का गुण समाज के लिए बहुत बड़ी संपत्ति हैं। ये हमारे लिए एक धरोहर ही है। इस पल प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग की बात याद आ रही है और आज के परिदृश्य से बिलकुल सटीक ही लिखी गई है कि ''जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं। परन्तु, जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप पूरी एक पीढ़ी को ही शिक्षित करते हैं।''

महिलाओं के प्रति समाज में सम्मान और समर्थन आज एक सामाजिक आवश्यकता बन चुकी है। महिलाओं की सहभागिता और उनके समृद्धिशील होने के प्रयास न केवल उन्हें सशक्त बनाते हैं, बल्कि राष्ट्र की अनूठी पहचान भी उन्हें प्राप्त होती है।

महिलाओं का सामाजिक और आर्थिक संघर्ष:

विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं को आज भी सामाजिक और आर्थिक संघर्ष करना पड़ता है। उन्हें समाज में समर्थन की कमी, भेदभाव, विभिन्नता और आर्थिक असमानता का सामना करना पड़ता है। अनेक महिलाएँ शिक्षा, स्वास्थ्य और उचित रोजगार तक पहुँचने में

भी संघर्ष कर रही हैं। इसके अतिरिक्त, समाज में बदलाव के लिए महिलाओं को भी अपनी भूमिका स्वीकार करने में ज्यादा समय लगता है।

महिलाओं को प्रोत्साहन का महत्व:

महिलाओं को प्रोत्साहित करना एक महत्वपूर्ण कदम है जो समाज के लिए ही नहीं, बल्कि राष्ट्र के लिए भी आवश्यक है। महिलाओं को प्रोत्साहित करने से वे स्वतंत्रता, स्वाधीनता, और स्वाभिमान महसूस करती हैं। इसके अलावा, महिलाओं को समाज में उनकी असली अहमियत का एहसास होता है और वे अपने परिवार और समाज में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

समाज में महिलाओं की सहभागिता के लाभ:

अर्थात्मक विकास: महिलाओं की सहभागिता से समाज में अर्थात्मक विकास में मदद मिलती है। जब महिलाएं अपने क्षेत्र में सक्रिय रहती हैं, तो उन्हें विभिन्न आर्थिक अवसर मिलते हैं जो उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाते हैं।

सामाजिक समानता: महिलाओं की सहभागिता से समाज में समानता का माहौल बनता है। यह समाज में सभी वर्गों के लोगों के बीच संवेदनशीलता को बढ़ाता है।

समृद्धि का निर्माण: महिलाओं को प्रोत्साहित करने से वे अपने परिवार और समाज में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं, जिससे समाज में समृद्धि का निर्माण होता है।

नई सोच और नए विकास के साधन: महिलाओं के समृद्धिशील होने से नई सोच और नए विकास के साधन उत्पन्न होते हैं। वे नए और अनूठे विचारों के साथ आती हैं जो समाज को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं।

महिलाओं को प्रोत्साहन के उपाय:

शिक्षा का प्रोत्साहन: महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उचित शिक्षा के माध्यम से महिलाएं अपने आप को सशक्त और स्वाधीन महसूस करती हैं।

रोज़गार के अवसर: महिलाओं के लिए अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। सरकार और निजी क्षेत्र दोनों को महिलाओं के लिए उत्पादक और समर्थन कार्यक्रम प्रदान करने चाहिए।

सामाजिक जागरूकता: समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान और समर्थन की जागरूकता को बढ़ाने के लिए सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

नीतियाँ और कानून: सरकार को महिलाओं के संरक्षण और समर्थन के लिए उचित नीतियां और कानूनों को लागू करना चाहिए। इससे महिलाओं को अपने अधिकारों की सुरक्षा मिलेगी और वे स्वतंत्रता से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकेंगी।

समापन:

अंततः हम कह सकते हैं कि महिलाओं को प्रोत्साहन देना राष्ट्र की उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निश्चित ही महिलाओं को समाज में समानता और सम्मान के साथ अपनी भूमिका निभाने का अधिकार होना चाहिए। सरकार, समाज और व्यक्तिगत स्तर पर हम सब में महिलाओं को सशक्त बनाने और उनका समर्थन करने के लिए समर्थ होना चाहिए। महिलाओं के समृद्धिशील होने से ही हमारा समाज और राष्ट्र उन्नति की ओर बढ़ सकता है।

आलेख

भारत की प्रसिद्ध लेखिकाएं

अंकिता रानी
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, रांची

भारत के साहित्यिक खजाने में कई प्रसिद्ध और महान लेखिकाएं हैं जिनकी कविता और साहित्य ने पाठकों के दिलों में जगह बनाई है। स्त्री का जीवन प्राचीन काल से ही संघर्षों से परिपूर्ण रहा है, उसके सपने, संवेदनाएं, योग्यताएं सदैव अमानवीय तथा जर्जर मान्यताओं की जकड़न से दम तोड़ते रहे हैं। उनकी राह आसान नहीं रही, उनकी राह में बहुत सी विचारधाराएं रुकावट बनकर सामने आती रही हैं। कालांतर में समाज और साहित्य में स्त्री-चिंतन के प्रभाव से स्थिति में सुधार आया। बीसवीं सदी स्त्री के लिए वरदान साबित हुई है। मन में जल रही मुक्ति की लौ को आधुनिक विचारों की हवा ने ज्वाला का रूप दिया। फलस्वरूप स्त्री के जीवन तथा स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन आए और यह परिवर्तन आज भी हो रहे हैं। समकालीन स्त्री उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में स्त्री के बदलते जीवन संदर्भ, बदलती मानसिकता तथा संघर्ष को विशेष स्थान दिया। यह अस्तित्व, अस्मिता और समता के लिए संघर्षरत स्त्री की कथा है। कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, मन्नू भंडारी, चित्रा मुद्गल, शशि प्रभा शास्त्री, चन्द्रकिरण जैसी अनेक लेखिकाओं ने स्त्री-चिंतन और स्त्री-लेखन को सार्थकता दी। इनके उपन्यासों में चित्रित स्त्री पूर्वाग्रहों से मुक्त, स्वतंत्र, शिक्षित, आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी, सबला तथा निर्णय क्षमता से युक्त स्त्री है। वह अपने कार्यों और विचारों से बदलते मूल्यों को अभिव्यक्त करती है। विवाह, मातृत्व जैसे मूल्यों पर सवाल उठा रही है। जहाँ एक ओर वह पुरुषसत्ता का विरोध करती है तो दूसरी ओर उन परंपराओं को स्वीकारती भी है जो मानवता के पोषक हैं।

आज़ादी की लड़ाई के दौरान साहित्य में अधिकांश देश प्रेम की भावना दिखती थी। उषा देवी मित्रा, सरोजिनी नायडू, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने समकालीन विषयों को अभिव्यक्ति दी, भारत कोकिला के नाम से प्रसिद्ध सरोजिनी नायडू का मानना था कि भारतीय नारी कभी भी कृपा की पात्र नहीं थी, वह सदैव समानता की अधिकारी रही है।

आधुनिक युग की महिला कवयित्रियों में प्रथम नाम श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का आता है। छायावादी युग की प्रमुख कवयित्रियों में महादेवी वर्मा का नाम आता है। कविता के क्षेत्र में श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिन्हा रहीं। आज़ादी के बाद परिस्थितियां बदलने के साथ ही साहित्य और लेखन में महिलाओं के स्वर और विषयों में भी बदलाव दिखने लगा। नारी मुक्ति की भावना और अभिव्यक्ति ज्यादा मुखर रूप से उभर कर सामने आयी।

नए परिवेश में पुरुष के साथ बराबरी से कन्धा मिलाकर चलने, पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों में बदलाव के साथ-साथ वैयक्तिक चेतना ने महिला साहित्य में एक नए स्वर को जन्म दिया। अमृता प्रीतम, शिवानी, कृष्णा सोबती, निरुपमा सेवती, मेहरुन्निसा परवेज़ आदि के लेखन ने नारी मूल्यों को नए सिरे से गढ़ा और एक नयी पहचान दी।

लेखिकाओं ने बंधनों को तोड़ कर स्त्री पर नैतिकता, सहनशीलता और त्याग जैसे थोपे हुए मूल्यों को नकार दिया और उसकी स्वतंत्र अस्मिता को समाज की एक संपूर्ण ईकाई मान कर स्त्री मुक्ति का मुख्य मुद्दा बनाया।

इनके लेखन के केंद्र में स्त्री जीवन की ज्वलंत और भयावह समस्याएं हैं, उन मर्यादाओं की तीक्ष्ण आलोचना है, जिन्होंने हमेशा स्त्री समाज का खुला दमन और शोषण किया।

वर्तमान स्त्री अपने लेखन में स्वतंत्रता, समानता और न्याय जैसे मूलभूत अधिकारों के लिए संघर्षरत और सक्रिय स्त्री रचनाकार स्त्री-हितों की चर्चा स्वयं करने लगी है और अपनी अस्मिता को पहचान रही है।

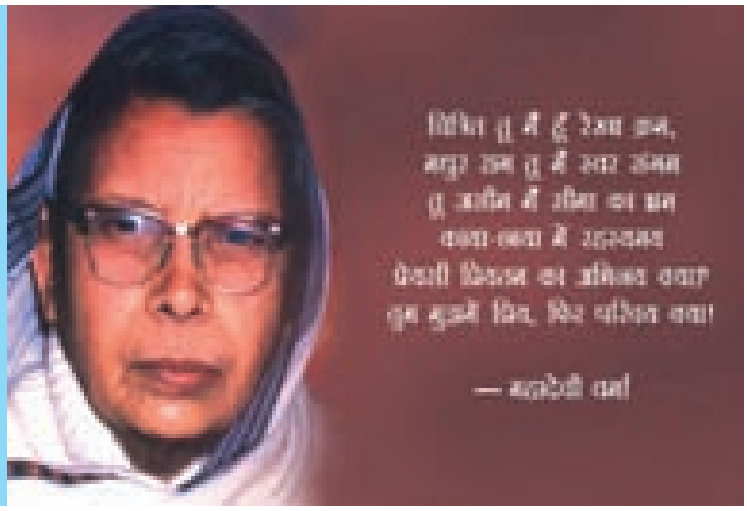

स्त्री रचनाकार एक बड़े बदलाव के साथ आत्मविश्वास से अपने सुख-दु:ख, आक्रोश और असहमति को व्यक्त कर रही है। वह समान नागरिक के रूप में पुरुष से किसी अतिरिक्त दया या सहानुभूति की अपेक्षा नहीं रखती। इनके लेखन के अनुभवों का दायरा वृहद है और इनकी अभिव्यक्ति में स्त्री मन की व्यथा, आकांक्षा और त्रासदी का जीवंत चित्रण है, क्योंकि इनका यथार्थ हमारे समय का भोगा हुआ यथार्थ है। स्त्री साहित्य में आज की स्त्री के जीवन की वास्तविकताएं, संभावनाएं और दासता की दारुण स्थितियों से मुक्ति की दिशाओं का उद्घाटन हुआ है। स्त्री की अपनी पहचान को स्थापित करते हुए इन रचनाकारों ने यह सिद्ध किया कि समाज में हर तरह के शोषण और अत्याचार का उपभोक्ता प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से अधिकतर स्त्री ही होती है, चाहे वह धार्मिक कुरीतियां हों, यौन हिंसा या आर्थिक पराधीनता, युद्ध हो या जातिगत दंगे-फसाद, इन सभी का सबसे बुरा प्रभाव स्त्री पर ही पड़ा है। लेखिकाओं ने बंधनों को तोड़ कर स्त्री पर नैतिकता, सहनशीलता और त्याग जैसे थोपे हुए मूल्यों को नकार दिया और उसकी स्वतंत्र अस्मिता को समाज की एक संपूर्ण ईकाई मान कर स्त्री मुक्ति को मुख्य मुद्दा बनाया।

साहित्य का आदिकाल महिलाओं की कोमल भावनाओं के अनुकूल नहीं था, अतः इस काल में कोई महिला साहित्यकार प्रकाश में नहीं आई परन्तु उसके पश्चात अन्य सभी कालों में महिलाओं ने साहित्य की वृद्धि में यथा शक्ति योगदान दिया। भक्तिकालीन महिला काव्यकारों में सहजोबाई, दयाबाई और मीराबाई का नाम विशेष है। अक़बर के शासनकाल में 'राय प्रवीण' का नाम भी है जो नृत्य और गीत के साथ सुन्दर कविता भी करती थीं। वह महाकवि केशव की शिष्या थी। इसके बाद 'ताज' का नाम आता है। यद्यपि वह मुसलमान थीं फिर भी इन्हें श्रीकृष्ण से प्रेम हो गया था, इनकी कविताएं भक्तिरस से ओत-प्रोत थीं। ताज के पश्चात शेख़ का नाम आता है, इन्होंने एक ब्राह्मण कवि से विवाह कर लिया था और उसका नाम आलम रखा था। दोनों पति-पत्नी आनन्द से कविता किया करते थे प्रथम पंक्ति में पति प्रश्न करते थे, दूसरी पंक्ति में शेख़ उसका उत्तर देती थीं। साहित्य की सभी विधाओं पर महिलाओं ने लेखनी चलाई है।

भक्तिकाल में कई कवयित्रियां हुईं और इन कवयित्रियों द्वारा कविताएं भी लिखी गईं परन्तु इनकी कविताएं लुप्त हो गईं। मीराबाई के लिखे कई पद राजस्थान व अन्य जातियों के घर-घर में गाए जाते थे और यही हाल कवयित्री लल्लेश्वरी का भी था। वह कश्मीर से थीं और घर-घर में उनकी कविताएँ गाईं जाती थीं।

आधुनिक काल में भी कई कवयित्रियों ने साहित्यिक जगत में अपना परचम लहराया है।

महादेवी वर्मा

हिंदी साहित्य के छायावादी युग की सबसे प्रमुख साहित्यकारों में महादेवी वर्मा का नाम शामिल है। वह हिंदी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से एक हैं। वह खड़ी बोली हिंदी में कोमल शब्दावली का उपयोग करती थी। महादेवी वर्मा की प्रमुख रचनाएं हैं, आत्मिका, परिक्रमा, संधिनी, यामा, गीतपर्व, दीपगीत, स्मारिका, नीलांबरा।

'मैं नीर भरी दु:ख की बदली। विस्तृत नभ का कोना कोना,
मेरा कभी न अपना होना, परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी थी कल मिट आज चली।'

महादेवी वर्मा का नाम सुनते ही स्कूल में पढ़ी उनकी दो कहानियां याद आ जाती हैं- गिल्लू और सोना। दिल को छू जाने वाली इन कहानियों को पढ़कर ये पता चलता है कि महादेवी वर्मा को जानवरों से कितना प्यार था। महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाने वाली, स्वतंत्रता सेनानी महादेवी वर्मा हिंदी भाषा की बेहतरीन कवयित्रियों में से एक हैं। हिंदी कविता में छायावाद युग के चार प्रमुख स्तंभों में एक नाम उनका भी है। साहित्य में अपनी उत्कृष्टता के लिए पद्म विभूषण और साहित्य अकादमी फ़ेलोशिप से सम्मानित महादेवी वर्मा का जन्म साल 1907 में फर्रुखाबाद में हुआ था। उनकी कविताओं में इंसान और पशु दोनों के लिए ममता और प्यार की झलक दिखती है। 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' और 'अधिकार' उनकी खास कृतियां हैं।

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल। युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर।

महादेवी वर्मा आधुनिक हिंदी की सशक्त कवयित्रियों में से एक थीं, इसलिए उन्हें आधुनिक मीरा भी कहा गया। कवि निराला जी ने तो उन्हें हिंदी साहित्य के विशाल मंदिर की सरस्वती भी कहा। वे इलाहाबाद प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य और कुलपति रहीं और इसके विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। 1932 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार संभाला। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत आदि उनकी प्रमुख कविता संग्रह हैं। 'पथ के साथी' और 'मेरा परिवार' उनके प्रमुख संस्मरण हैं और जैसा की मैंने पहले कहा, गिल्लू और सोना उनकी लोकप्रिय कहानियां हैं जो उनके अपने जीवन की घटनाओं से प्रेरित हैं। 1979 में साहित्य अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने वाली वे पहली महिला थीं। 1988 में उन्हें मरणोपरांत भारत सरकार द्वारा पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया।

कृष्णा सोबती

'मित्रों मरजानी' कृष्णा सोबती की सबसे लोकप्रिय किताब है। इनको उनके मुखर लेखन के लिए जाना जाता है। उनके बारे में कहा जाता है कि उनका 'कम लिखना' दरअसल 'विशिष्ट' लिखना है। साहित्य अकादमी और ज्ञानपीठ जैसे विशिष्ठ पुरस्कारों से सम्मानित कृष्णा जी ने 7 उपन्यास लिखे हैं जिनमें से कईयों का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। मित्रों मरजानी, ज़िंदगीनामा और ऐ लड़की उनकी प्रमुख रचनाएं हैं। 2010 में उन्हें पद्मभूषण दिया जाना था मगर कृष्णा जी ने ये कहकर मना कर दिया कि, 'एक लेखिका के तौर पर मुझे इन प्रतिष्ठानों से दूरी बनाकर रखनी चाहिए।'

मन्नू भंडारी

मन्नू भंडारी का 'स्वामी' एक प्रसिद्ध उपन्यास है। स्वामी दरअसल शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की इसी नाम के लघु उपन्यास का रूपांतरण है। मन्नू भंडारी जी हिंदी साहित्य की प्रमुख कहानीकारों में से एक हैं। कई वर्षों तक दिल्ली के मिरांडा हाउस में अध्यापिका रहीं। इन्हें हिंदी अकादमी – दिल्ली के शिखर सम्मान, व्यास सम्मान जैसे कई अन्य पुरस्कारों से नवाज़ा गया है। 'आपका बंटी' और 'महाभोज' उनकी सबसे सफल और चर्चित उपन्यास हैं। अपने पति (और प्रख्यात लेखक) श्री राजेंद्र यादव के साथ मिलकर उन्होंने 'एक इंच मुस्कान' लिखी है जो एक दु:खद प्रेम कथा है। साथ ही, उनकी लिखी 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' काफी चर्चित फिल्म है जिसे 1974 में सर्वश्रेठ फिल्म का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

मीरा बाई

सोलहवीं सदी में मीरा बाई ने अपनी कविताओं के ज़रिए श्रीकृष्ण के लिए प्रेम और भक्ति की अलख जगाई थी। उनका नाम भक्ति आन्दोलन के कुछ चुनिंदा कवि–कवयित्रियों में शुमार है। मीरा बाई की कविताएं कृष्ण की बात करती हैं, वो कृष्ण जो मीरा के हैं, जिनके गुणों की प्रशंसा और प्रेम ही मीरा के जीवन का लक्ष्य है। राजस्थान के पाली में जन्मी मीरा बाई ने दमनकारी और दिखावटी सामाजिक रीति–रिवाजों का भी निडरता से विरोध किया।

मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग हिंदी साहित्य की सबसे सफल और लोकप्रिय लेखिकाओं में से एक हैं। इन्होंने 3 साल तक दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन भी किया है। इनके उपन्यास और कहानियों का कई भाषा में अनुवाद किया गया है। चितकोबरा, कठगुलाब, मैं और मैं, मिलजुल मन, टुकड़ा टुकड़ा आदमी (कहानी संग्रह), उसके हिस्से की धूप, छत पर दस्तक (कहानी संग्रह) आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं। 1988 में उन्हें हिंदी अकादमी द्वारा साहित्यकार सम्मान दिया गया। इसके अलावा इन्हें व्यास सम्मान जैसे अन्य कई सम्मानों से नवाज़ा गया है। उनके उपन्यास 'मिलजुल मन' को साहित्य अकादमी पुरस्कार (2013) से सम्मानित किया गया।

शिवानी

शिवानी जी का वास्तविक नाम गौरा पंत था। इनकी पहली उपन्यास है – स्वयंसिद्ध। जितना प्रभावशाली इस किताब का शीर्षक है, उतनी ही प्रभावशाली है इस कहानी की महिला पात्र। शिवानी जी की लेखनी में दो ख़ास बातें हैं – उनकी कहानियां महिला प्रधान होती हैं और दूसरी उनकी कहानियों में कुमाऊं क्षेत्र के आसपास की लोक संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। शिवानी जी ने कई उपन्यास, लघु उपन्यास व कहानियां लिखी हैं। कृष्णकली, चौदह फेरे, अतिथि, चल खुसरो घर अपने, सुरंगमा, मायापुरी, कैंजा आदि उनकी प्रमुख रचनाएं हैं। हिंदी साहित्य में उनके योगदान के लिए, 1982 में शिवानी जी को पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

सुभद्रा कुमारी चौहान

जब कभी हिंदी साहित्य में वीर रस की बात होती है, सुभद्रा कुमारी चौहान का ज़िक्र खुद–ब–खुद आ जाता है। सन 1904 में निहालपुर गाँव में जन्मी सुभद्रा ने खुलकर ब्रिटिश शासन का विरोध किया। दो

बार जेल भी गईं पर कभी डिगी नहीं, उनकी कविताएं राष्ट्रवाद और देशभक्ति से ओत-प्रोत होती थी। उनकी रचना झांसी की रानी शायद हिंदी साहित्य में सबसे ज्यादा गाई-गुनगुनाई जाने वाली कविता है। उनकी प्रमुख पंक्तियाँ है।

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।

अमृता प्रीतम

पंजाबी और हिंदी-दोनों भाषाओं में समान अधिकार रखने वाली अमृता प्रीतम ने भारतीय साहित्य में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। उन्हें बीसवीं सदी की सबसे प्रमुख पंजाबी कवयित्री और उपन्यासकार माना जाता है। पंजाब के गुजरांवाला में जन्मी अमृता ने छह दशकों तक सौ से अधिक कहानियों और कविताओं की किताबें लिखी। वर्ष 1956 में अपनी कविता सुनेहदे के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाज़ा गया और इसके साथ ही उन्होंने ये सम्मान पाने वाली पहली महिला बनकर इतिहास रच दिया। आज ''आँखन वारिस शाह नू'' और ''पिंजर'' उनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं।

नारी भावनाओं की यह अभिव्यक्ति जो कई सदियों से भीतर ही भीतर छटपटा रही थी आज नारी लेखन में ही अभिव्यक्त हुई। नारी साहित्य लेखन एक ओर स्वत: सुखाय है तो दूसरी ओर जन हिताय है। नारी साहित्य इस परिवर्तन युग का शुभचिंतक है। **महिलाएं स्वयं रास्ते ढूंढ़ अपने हस्ताक्षर बना रही हैं**। अत्यंत शांत व शालीन बने रहकर सृजन करना एक चुनौती है और उसे निर्भयतापूर्वक सोचना और लिखना आज की ज़रूरत है। नारी धीरे-धीरे आत्मबोध से अलंकृत हुई है। वह अपने ढ़ंग से प्रतिष्ठित होने के लिए सदैव संघर्षशील रही है। विरोध-अवरोध, तिरस्कार-बहिष्कार को नकारते हुए वह आज समाज की अग्रिम पंक्ति में प्रतिष्ठित हुई है। आज की नारी अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्त करते हुए और भी सशक्त बनकर समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है।

आशा है कि निकट भविष्य में महिलाओं की नवीन साहित्य कृतियाँ, हिन्दी साहित्य को और भी अधिक समृद्धशाली बनाएंगी।

कविता

स्त्री सम्पूर्ण प्रकृति है...

मनजीत कौर
ग्राहक सेवा सहयोगी
सेक्टर 32 डी शाखा

स्त्री केवल स्त्री नहीं सम्पूर्ण प्रकृति है,
हृदय में गहराई है तो अपार समुद्र है,
शांत है तो विशाल पहाड़, रौद्र है तो ज्वाला है।

चंचल है तो बहती नदी सी है,
सूर्य का तेज़ है, चंद्रमा की शीतलता है,
प्रकृति को निरंतर चलाने का साधन और साधक भी है।

फूलों सी कोमलता है तो चट्टान की कठोरता समाए हुए है,
पानी सी सहनशीता है तो आग का ताप है,
देवी है तो विद्या, रक्षा, आश्रय,अन्न, वैभव प्रदायिनी है।

परिवार रुपी भवन की नींव है,
घर को सभी असहजता से बचाने वाली छत है,
जैसे वृक्ष नहीं खाता अपने फलों को, नहीं बैठता अपनी छाया में,
वैसे ही स्त्री के सारे परिश्रम है परिवार के, अपने हिस्से केवल त्याग है।

अबला नहीं है, बस नहीं दी कभी वरियता खुद को,
दुसरों को उन्नत करने हेतु तैयार है सदा खुद तपने को,
स्त्री केवल स्त्री नहीं सम्पूर्ण प्रकृति है।

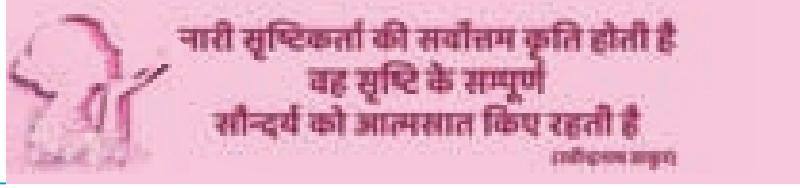

कविता

माँ

सचिन कुमार
अधिकारी
प्र.का. बेंगलूरु

आँख खुली तब तुम्हीं को पाया,
हे जननी मैं हूँ तुम्हारी छाया,
तुमने मुझे अपनी कोख में पाला,
हर बुरी नज़र से मुझे बचाया,
सत-सत नमन है तुझको,
चरणों मे वंदन है तुमको।।

बालपन में थपकी देकर मुझे सुलाया,
हर ज़ख्मों से मुझे बचाया।
प्यार से मुझे उपनाम दिया,
मेरे हर क्रंदन पर ध्यान दिया।
आपने भूखे रहकर भी मुझे निवाला खिलाया है।
मेरे मन के अंतर्मन में चल रही,
हर द्वंद को खूब समझती हो।
सत-सत नमन है तुझको,
चरणों मे वंदन है तुमको।।

मुझे डाँटकर खुद ही रोने लगती हो।
अपनी उम्र भी मुझे लगाने मंदिर - मस्जिद जाती हो।
त्याग, तपस्या और क्षमा की देवी,
तू ही सीता, तू ही सरस्वती, तुम ही रणचण्डी हो।
सभी समस्याओं के वृहद वन में,
तुम ही निर्मम छाया हो।
सत-सत नमन है तुझको,
चरणों मे वंदन है तुमको।।

अपने हृदय में बसी प्रेम की नदियों से,
मेरे जीवन के सूने उपवन में,
सूखती कली को सींचकर,
हरा-भरा कर देती हो।
मेरी हर नाकामी पर भी,
तुमने मुझे प्रकाश दिया।
तू ही दया, तू ही फरिश्ता,
तुम ही हो मेरे मन की शीतलता।
सत-सत नमन है तुझको,
चरणों मे वंदन है तुमको।।

आलेख

मीराबाई चानू की कहानी

सोनिया कुमारी
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, रोहतक

जोश, जज्बा, जुनून और हौसला जिनके पास हो, जो परिस्थितियों का सामना करने से न डरे, जो संघर्ष को अपनी आदत बना ले, वह इस दुनिया में कुछ भी हासिल कर सकता है। ऐसा ही कुछ कर दिखाया महज 24 वर्षीय वेटलिफ्टर माइचोम मीराबाई चानू ने। मशहूर भारतीय वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने राष्ट्रमंडल खेल वर्ष 2022 में स्वर्ण पदक जीता है। मीराबाई चानू वेटलिफ्टिंग में कोई आम नाम नहीं है। इनकी लंबाई से इनकी काबिलियत को आंकने की भूल करना इनके प्रतिद्वंदियों को भारी पड़ता है। जब मीराबाई चानू मुकाबले में उतरती हैं तो भारत को अपना एक मेडल पक्का तो लगता ही है, भले ही वह किसी भी टूर्नामेंट का क्यों न हो। इतनी कम उम्र में इन्होंने वह पा लिया है जो अभी तक कई खिलाड़ियों के लिए एक सपना ही है।

मीराबाई चानू का जन्म 8 अगस्त, 1994 को पिता साइकोहं कृति मैतेई एवं माँ साइकोहं तोम्बी लीमा के यहाँ मणिपुर राज्य के इम्फाल शहर में हुआ था। मीराबाई चानू बचपन से भारी भरकम सामान उठाने में माहिर थी। अपना घर चलाने के लिए ये जंगलों से भारी भरकम लकड़ियों के ढ़ेर लाया करती थी। इनके पिता साइकोहं कृति मैतेई लोक निर्माण विभाग के कर्मचारी हैं और इनकी माँ घर का कामकाज संभालने के अलावा एक दुकान भी चलाती हैं। मीरा छोटी उम्र में ही अपने भाई के साथ पहाड़ी क्षेत्रों से लकड़ियां लाने में मदद करती थीं। 12 वर्ष की उम्र में यह लकड़ी के बड़े गठ्ठर उठाने में सक्षम थी। एक तरह से यह अनौपचारिक रूप से वेट लिफ्टिंग की प्राकृतिक माहौल में प्रशिक्षण ले रही थी।

बचपन से मीरा बाई चानू एक भारोत्तोलक खिलाड़ी न बनकर एक तीरंदाज बनना चाहती थी लेकिन कक्षा आठ की एक किताब को पढ़कर इनकी सारी जिंदगी बदल गयी। दरअसल उस किताब में भारत की पूर्व भारोत्तोलक खिलाड़ी कुंजरानी देवी का जिक्र था, जो अब तक सबसे ज्यादा पदक जीतने का रिकार्ड रखती थी। उनके माता-पिता ने उनकी प्रतिभा को तब देखा जब वह महज 12 साल की आयु में आसानी से अपने घर में जलाऊ लकड़ी का भारी बोझ उठा सकती थी जिसे उठाने के लिए उनके भाई को भी संघर्ष करना पड़ता था।

एक सफल इन्सान की कहानी के पीछे बहुत सी विफलताओं की सीख और संघर्ष की दास्ताँ होती है। 49 किलोग्राम वर्ग में सिल्वर मेडल जीतने वाली मीराबाई का जीवन अभावों में शुरू हुआ और संघर्षों के बीच वह बड़ी हुई। मीराबाई चानू वर्ष 2016 के रियो ओलम्पिक में बुरी तरह मुक़ाबले से बाहर हो गई थी। एक बार भी ठीक तरह से वेट लिफ्ट न कर पाने के कारण उन्हें इतने बड़े टूर्नामेंट से बाहर होना पड़ा था। देशवासियों को मीरा बाई चानू से बहुत उम्मीदे थीं। उस समय टूर्नामेंट में विफलता और लोगों का भरोसा पूरा न कर पाने की कसक के चलते मीराबाई चानू लम्बे समय तक डिप्रेशन में चली गई थी। उन्होंने वेट लिफ्टिंग को छोड़ने का इरादा भी कर लिया था। मगर लम्बे वक्त बाद चानू हार के उस गम से उभरी तो एक के बाद एक नई कहानी लिखने का इतिहास बना डाला या यूं कहें कि वेट लिफ्टिंग के सारे कारनामे कर डाले। जिस भी प्रतियोगिता में मीराबाई ने भाग लिया, न केवल मेडल जीता बल्कि एक नया कीर्तिमान भी स्थापित किया और वही चानू 5 साल बाद ओलम्पिक रजत पदक विजेता बनकर देश की आँखों का तारा बन गईं। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने स्वयं उनसे फोन पर बात कर उन्हें देश का नाम रोशन करने के लिए बधाई भी दी थी।

चानू एक मध्यम वर्गीय परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। इनके परिवार में माता-पिता के अलावा चार बहनें और एक भाई भी हैं। मीरा के कोच नमेडरफ्यम कुंजरानी देवी हैं जो वर्ल्ड चैम्पियनशिप और एशियन गेम्स में भारत के लिए 9 मेडल जीत चुकी हैं और भारोत्तोलन में सबसे अधिक पदक जीतने वाली राष्ट्रीय महिला खिलाड़ी भी हैं। कुंजरानी देवी मीरा बाई चानू के लिए हमेशा पथ-प्रदर्शक की तरह रही हैं अर्थात हर वक्त जब भी मीराबाई चानू का साहस टूटा और अपने पथ

में विचलित हुई हैं तो इन्होंने उसे मजबूत बनाकर लड़ने के लिए प्रेरित किया है।

मीरा बाई चानू ने स्नातक तक की पढ़ाई की है तथा 48 किलोग्राम वर्ग में वेट लिफ्टिंग करती हैं। मीराबाई अभी तक अविवाहित है। उनका मानना हैं कि यदि वह विवाह करती हैं तो उनका करियर खत्म हो जाएगा। इस बात से आप अंदाजा लगा सकते हैं एक पेशेवर अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी के जीवन में खेल की अहमियत कितनी बड़ी होती है। उनके लिए व्यक्तिगत जीवन से अधिक करियर महत्वपूर्ण हो जाता है। जब मीरा 12 वर्ष की थी तभी जूनियर नेशनल गेम्स में भाग लेना शुरू कर दिया और अंडर 15 की विजेता बनी। 17 वर्ष की आयु में ये नेशनल जूनियर चैम्पियन भी बनी। वर्ष 2014 में ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों में भारतीय भारोत्तोलक टीम का प्रतिनिधित्व किया और 48 किलोग्राम वर्ग में रजत पदक जीता।

उन्होंने कुल 170 किलो वजन उठाया, जिसमें 75 वैच में और 95 क्लीन एण्ड जर्क में था। इन्होंने ब्राजील के रियो डी जेनेरो में आयोजित वर्ष 2016 ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक के लिए क्वालिफ़ाई तो किया किंतु क्लीन एण्ड जर्क में तीनों प्रयास असफल रहे और इस प्रकार पदक जीतने का अवसर भी गंवा दिया था। वर्ष 2017 में उन्होंने महिला 48 कि.ग्रा. श्रेणी में 194 कि.ग्रा. (85 कि.ग्रा. मैच तथा 109 कि.ग्रा. क्लीन एण्ड जर्क) का भार उठाकर वर्ष 2017 में विश्व भारोत्तोलन चैम्पियनशिप, संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वर्ण पदक जीता।

चानू ने 196 कि.ग्रा. जिसमें 86 कि.ग्रा. मैच में तथा 110 कि.ग्रा. क्लीन एण्ड जर्क में था, का वजन उठाकर वर्ष 2018 के राष्ट्रमण्डल खेल में भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाया। इसके साथ ही उन्होंने 48 कि.ग्रा. श्रेणी में राष्ट्रमण्डल खेलों का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया। कर्णम मल्लेश्वरी के बाद चानू विश्व चैम्पियन बनने वाली दूसरी भारतीय वेटलिफ्टर हैं। उन्होंने यह उपलब्धि नवंबर 2017 में हासिल की थी। तब उन्होंने 194 कि.ग्रा. (मैच में 85 कि.ग्रा. और क्लीन एड जर्क में 109 कि.ग्रा.) वजन उठाया था। उस वक्त चानू की उम्र 22 साल थी। विश्व भारोत्तोलन चैंपियनशिप में भारत को स्वर्ण पदक जीतने में 22 साल लग गए। कर्णम मल्लेश्वरी ने वर्ष 1994 और वर्ष 1995 में इस प्रतियोगिता में भारत के लिए स्वर्ण पदक जिताया था। विश्व भारोत्तोलन खेल में भारत को अभी दो ही स्वर्ण पदक प्राप्त हुए हैं। अप्रैल 2021 में ताशकंद में हुए एशियन वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप में मीराबाई चानू ने 86 कि.ग्रा. वजन उठाने के बाद क्लीन एंड जर्क में वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाते हुए 119 कि.ग्रा. का वजन उठाकर कुल 205 कि.ग्रा. वेटलिफ्टिंग का नया वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। 24 जुलाई,

2021 को टोक्यो ओलम्पिक में रजत पदक जीतकर भारत का पदक तालिका में खाता खोला। अभी तक के इतिहास में कोई भी भारतीय महिला वेटलिफ्टर कुंजरानी के द्वारा जीते गए पदकों की बराबरी नहीं कर पायी है। बस, यहीं से जन्म हुआ मीराबाई चानू के भारोत्तोलक खिलाड़ी बनने का सफर।

उस समय उसकी उम्र 10 साल थी। इम्फाल से 200 किमी दूर नोंगपोक काकचिंग गांव में गरीब परिवार में जन्मी और छह भाई बहनों में सबसे छोटी मीराबाई चानू अपने से चार साल बड़े भाई सैखोम सांतोम्बा मैतेई के साथ पास की पहाड़ी पर लकड़ी बीनने जाती थीं। एक दिन उसका भाई लकड़ी का गठ्ठर नहीं उठा पाया, लेकिन मीरा ने उसे आसानी से उठा लिया और वह उसे लगभग 2 किमी दूर अपने घर तक ले आई। शाम को पड़ोस के घर मीराबाई चानू टीवी देखने गई, तो वहां जंगल से उसके गठ्ठर लाने की चर्चा चल पड़ी। उसकी मां बोली, ''बेटी आज यदि हमारे पास बैल गाड़ी होती तो तुझे गठ्ठर उठाकर न लाना पड़ता।'' ''बैलगाड़ी कितने रूपए की आती है माँ?'' मीराबाई ने पूछा ''इतने पैसों की जितने हम कभी जिंदगी भर देख न पाएंगे।'' मीरा बाई ने बड़ी ही उत्सुकतावश कहा ''मगर क्यों नहीं देख पाएंगे, माँ, क्या पैसा कमाया नहीं जा सकता? कोई तो तरीका होगा बैलगाड़ी खरीदने के लिए पैसा कमाने का?'' चानू ने पूछा तो तब गांव के एक व्यक्ति ने कहा, ''देख बेटा, तू तो लड़कों से भी अधिक वजन उठा लेती है, यदि वजन उठाने वाली खिलाड़ी बन जाए तो एक दिन जरूर भारी-भारी वजन उठाकर खेल में सोना जीतकर उस मैडल को बेचकर बैलग़ाड़ी खरीद सकती है।''

''अच्छी बात है मैं जरूर सोना जीतकर और उसे बेचकर बैलगाड़ी खरीदूंगी।'' उसमें आत्मविश्वास था। उसने वजन उठाने वाले खेल के

बारे में जानकारी हासिल की, लेकिन उसके गांव में कोई वेटलिफ्टिंग सेंटर नहीं था, इसलिए उसने रोज़ ट्रेन से ही 60 किलोमीटर का सफर तय करने की सोची।

शुरुआत उसने इंफाल के खुमन लंपक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स से की। एक दिन उसकी रेल लेट हो गयी.. रात का समय हो गया। शहर में उसका कोई ठिकाना न था, कोई उसे जानता भी न था। उसने सोचा कि किसी मन्दिर में शरण ले लेगी और कल अभ्यास करके फिर अगले दिन शाम को गांव चली जाएगी।

एक अधूरा निर्माण हुआ भवन उसने देखा जिस पर आर्य समाज मन्दिर लिखा हुआ था। वह उसमें चली गई। वहां उसे एक पुरोहित मिला, जिसे उसने बाबा कहकर पुकारा और रात को शरण मांगी। ''बेटी मैं आपको शरण नहीं दे सकता, यह मन्दिर है और यहां एक ही कमरे पर छत है, जिसमें मैं सोता हूँ। दूसरे कमरे पर छत अभी डली नहीं है, केवल छत के ऊपर एंगल पड़ गई है, पत्थर की सिल्लियां आई पड़ी हैं लेकिन अब पैसे खत्म हो गए हैं। तुम कहीं और शरण ले लो।''

''मैं रात में कहाँ जाउँगी बाबा'' मीराबाई आगे बोली, मुझे बिन छत के कमरे में ही रहने की इजाजत दे दो। ''अच्छी बात है, जैसी तेरी मर्जी।'' बाबा ने कहा। मीराबाई उस कमरे में माटी को एकसार करके उसके उपर ही सो गई, अभी कमरे में फर्श तो डला नहीं था। जब छत नहीं थी तो फर्श कहां से होता भला। लेकिन अभी तकलीफ़ें कम नहीं हुई थी कि रात के समय बूंदाबांदी शुरू हो गई और उसकी आँख खुल गई। मीराबाई ने छत की ओर देखा। दीवार के ऊपर लोहे की एंगल लगी हुई थी, लेकिन सिल्लियां नीचे ही रखी हुई थी। आधा अधूरा जीना भी बना हुआ था। उसने नीचे से पत्थर की सिल्लिया उठाई और ऊपर एंगल पर जाकर रख दी और फिर थोड़ी ही देर में दर्जनों सिल्लियां कक्ष की दीवारों के ऊपर लगी एंगल पर रखते हुए पूरे कमरे को छाप दिया।

उसके बाद उसने देखा कि वहां एक बरसाती पन्नी पड़ी थी वह सिल्लियों पर डालकर नीचे से फावड़ा और तसला उठाकर मिट्टी भर-भरकर सिल्लियों पर डाल दी। इस प्रकार मीराबाई ने कुछ ही समय में छत तैयार कर दी।

बारिश तेज हो गई और अब वह अपने कमरे में आ गई। अब उसे भीगने का डर न था, क्योंकि उसने उस कमरे की छत खुद ही बना डाली थी। अगले दिन बाबा को जब सुबह पता चला कि मीराबाई ने कमरे की छत डाल दी तो उसे बहुत ही आश्चर्य हुआ और उसने उसे मन्दिर में हमेशा के लिए शरण दे दी, ताकि वह खेल की तैयारी वहीं रहकर कर सके, क्योंकि वहाँ से खुमन लंपक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स निकट था। बाबा उसके लिए खुद चावल तैयार करके खिलाते और बाबा जी ने मीराबाई के कमरे को गाय के गोबर और पीली माटी से लीपकर सुन्दर बना दिया था।

समय मिलने पर बाबा उसे एक किताब थमा देते, जिसे वह पढ़कर सुनाया करती और उस किताब से उसके अन्दर धर्म के प्रति आस्था तो जागी ही साथ ही देशभक्ति भी जाग उठी। इसके बाद मीराबाई चानू 11 साल की उम्र में अंडर-15 चैंपियन बन गई और 17 साल की उम्र में जूनियर चैंपियन का खिताब अपने नाम किया। लोहे की बार खरीदना परिवार के लिए भारी था। मानसिक रूप से परेशान हो उठी मीराबाई ने यह समस्या बाबा से बताई, तो बाबा बोले, ''बेटी चिंता न करो, शाम तक आवोगी तो बार तैयार मिलेगी।'' वह शाम तक आई तो बाबा ने बांस की बार बनाकर तैयार कर दी, ताकि वह अभ्यास कर सके। बाबा ने उनकी भेंट कुंजुरानी से करवाई। उन दिनों मणिपुर की महिला वेटलिफ़्टर कुंजुरानी देवी स्टार थी और एथेंस ओलंपिक में खेलने गई थी। इसके बाद तो मीराबाई ने कुंजुरानी को अपना आदर्श मान लिया और कुंजुरानी ने बाबा के आग्रह पर इसकी हर संभव सहायता करने का बीड़ा उठाया। जिस कुंजुरानी को देखकर मीरा के मन में विश्व चैंपियन बनने का सपना जागा था, अपनी उसी आइडल के 12 साल पुराने राष्ट्रीय रिकॉर्ड को मीरा ने वर्ष 2016 में तोड़ा, वह भी 192 किलोग्राम वज़न उठाकर। वर्ष 2017 में विश्व भारोत्तोलन चैम्पियनशिप, अनाहाइम, कैलीफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका में उसे भाग लेने का अवसर मिला। मुकाबले से पहले एक सहभोज में उसे भाग लेना पड़ा। सहभोज में अमेरिकी राष्ट्रपति मुख्य अतिथि थे। राष्ट्रपति ने देखा कि मीराबाई को उसके सामने ही पुराने बर्तनों में चावल परोसा गया, जबकि सब होटल के शानदार बर्तनों में शाही भोजन का लुत्फ ले रहे थे। राष्ट्रपति ने प्रश्न किया, ''इस खिलाड़ी को पुराने बर्तनों में चावल क्यों परोसा गया, क्या हमारा देश इतना गरीब है कि एक लड़की के लिए बर्तन कम पड़ गए, या फिर इससे भेदभाव किया जा रहा है, यह अछूत है क्या?''

''नहीं महामहिम ऐसी बात नहीं है'' उसे खाना परोस रहे लोगों से जवाब मिला, ''इसका नाम मीराबाई है। यह जिस भी देश में जाती है, वहाँ अपने देश भारत के चावल ले जाती है। यह विदेश में जहाँ भी होती है, भारत के ही चावल उबालकर खाती है। यहाँ भी ये चावल खुद ही अपने कमरे से उबालकर लाई है।''

''ऐसा क्यों?'' राष्ट्रपति ने मीराबाई की ओर देखते हुए उससे पूछा। ''महामहिम, मेरे देश का अन्न खाने के लिए देवता भी तरसते हैं, इसलिए मैं अपने ही देश का अन्न खाती हूँ''। ''ओह बहुत देशभक्त हो

तुम, जिस गांव में तुम्हारा जन्म हुआ, भारत में जाकर उस गांव के एकबार अवश्य दर्शन करूंगा।'' राष्ट्रपति बोले। ''महामहिम इसके लिए मेरे गांव में जाने की क्या जरूरत है?'' क्यों? ''मेरा गांव मेरे साथ है, मैं उसके दर्शन यहीं करा देती हूँ।''

''अच्छा कराइए दर्शन।'' कहते हुए उस मूर्ख लड़की की बात पर हंस पड़े राष्ट्रपति। मीराबाई अपने साथ हैंडबैग लिए हुए थी, उसने उसमें से एक पोटली खोली, फिर उसे पहले खुद माथे से लगाया फिर राष्ट्रपति की ओर करते हुए बोली, ''यह रहा मेरा पावन गांव और महान देश।'' ''यह क्या है?'' राष्ट्रपति पोटली देखते हुए बोले, ''इसमें तो मिट्टी है?'' ''हाँ यह मेरे गांव की पावन मिट्टी है, इसमें मेरे देश के देशभक्तों का लहू मिला हुआ है, सरदार भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद का लहू इस मिट्टी में मिला हुआ है, इसलिए यह मिट्टी नहीं, मेरा सम्पूर्ण भारत हैं..।''

''ऐसी शिक्षा तुमने किस विश्वविद्यालय से पाई चानू?'' ''महामहिम ऐसी शिक्षा विश्वविद्यालय में नहीं दी जाती, विश्वविद्यालय में तो मैकाले की शिक्षा दी जाती है, ऐसी शिक्षा तो गुरु के चरणों में मिलती है, मुझे आर्य समाज में हवन करने वाले बाबा से यह शिक्षा मिली है, मैं उन्हें सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर सुनाती थी, उसी से मुझे देशभक्ति की प्रेरणा मिली।'' ''सत्यार्थ प्रकाश?'' ''हाँ सत्यार्थ प्रकाश,'' चानू ने अपने हैंडबैग से सत्यार्थ प्रकाश की प्रति निकाली और राष्ट्रपति को थमा दी, ''आप रख लीजिए मैं हवन करने वाले बाबा से और ले लूंगी।''

''कल गोल्ड मैडल तुम्हीं जितोगी,'' राष्ट्रपति आगे बोले, ''मैंने पढ़ा है कि तुम्हारे भगवान हनुमानजी ने पहाड़ हाथों पर उठा लिया था, लेकिन कल यदि तुम्हारे मुकाबले हनुमानजी भी आ जाएं तो भी तुम ही जीतोगी... तुम्हारा भगवान भी हार जाएगा, तुम्हारे सामने कल।'' राष्ट्रपति ने वह किताब एक अधिकारी को देते हुए आदेश दिया, ''इस किताब को अनुसंधान के लिए भेज दो कि इसमें क्या है, जिसे पढ़ने के बाद इस लड़की में इतनी देशभक्ति उबाल मारने लगी कि अपनी ही धरती के चावल लाकर हमारे सबसे बड़े होटल में उबालकर खाने लगी।'' चानू चावल खा चुकी थी, उसमें एक चावल कहीं लगा रह गया, तो राष्ट्रपति ने उसकी प्लेट से वह चावल का दाना उठाया और मुँह में डालकर उठकर चलते बने। ''बस मुख से यही निकला,'' यकीनन कल का गोल्ड मैडल यही लड़की जीतेगी, देवभूमि का अन्न खाती है यह और अगले दिन मीराबाई ने स्वर्ण पदक जीत ही लिया, लेकिन किसी को इस पर आश्चर्य नहीं था, सिवाय भारत की जनता के... अमेरिका तो पहले ही जान चुका था कि वह जीतेगी, बीबीसी जीतने से पहले ही लीड खबर बना चुका था। जीतते ही बीबीसी

पाठकों के सामने था, जबकि भारतीय मीडिया अभी तक लीड खबर आने का इंतजार कर रही थी।

इसके बाद चानू ने अनेक रिकॉर्ड अपने नाम किए, जिनका जिक्र ऊपर किया जा चुका है। वर्ष 2018 राष्ट्रमण्डल खेलों में विश्व कीर्तिमान के साथ स्वर्ण जीतने पर मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने ₹15 लाख की नकद धनराशि देने की घोषणा की। वर्ष 2018 में उन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया। यह पुरस्कार मिलने पर मीराबाई ने सबसे पहले अपने घर के लिए एक बैलगाड़ी खरीदी और बाबा के मन्दिर को पक्का करने के लिए एक लाख रुपए उन्हें गुरु दक्षिणा में दिए।

आलेख

बिटिया रानी

अमित कुमार
अधिकारी
डुमराँव शाखा

बात उन दिनों की है जब मेरी पोस्टिंग अमिंगड़ (कर्नाटक) में थी। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा जब मुझे पहली बार जनवरी, 2020 में पता चला कि मैं पिता बनने वाला हूँ। सब कुछ ठीक – ठाक चल रहा था। फिर अचानक से भारत में कोरोना का महाप्रकोप आ गया और सभी लोग लॉकडाउन में जहाँ थे वहीं फस गए। हम लोग भी लॉकडॉउन के कारण अमिंगड़ में ही फस गए, हम लोग घर वापस आने में असमर्थ थे। इसी कारणवश मुझे अपनी पत्नी का इलाज वहीं से कराना पड़ा। चूंकि बैंककर्मी को कहीं भी लोकल क्षेत्र में आने जाने की रियायत थी तो मैं उस लॉकडॉउन में भी अपनी पत्नी को हर माह रेगुलर चेकअप के लिए बागलकोट (कर्नाटक) में प्राइवेट हॉस्पिटल (आशीर्वाद हॉस्पिटल) ले कर जाया करता था। डिलीवरी केस में पुलिस भी आने – जाने के लिए सपोर्ट करती थी। चूंकि बैंक खुले होने के कारण मुझे उस कॉरोना काल में भी हमेशा बैंक जाना पड़ता था। मुझे हमेशा इस बात की चिंता रहती थी कि अगर कहीं मुझे कोरोना हो गया तो मेरी पत्नी और मेरे होने वाले बच्चे पर भी इसका प्रभाव पड़ सकता था। इसलिए मैं ज्यादा सावधानी से रहता था। साथ ही साथ मैं और मेरी पत्नी भी वहाँ कोरोना से जंग लड़ते हुए सावधानीपूर्वक रहते थे। फिर धीरे–धीरे 3–4 महीने के बाद लॉकडाउन खुलने लगा और फिर जून–जुलाई, 2020 से हवाई यातायात सख्त नियम–कानून के साथ शुरू हो गए।

चूंकि उस समय कर्नाटक में कोरोना तेजी से बढ़ रहा था और बिहार में कोरोना की रफ्तार काफी धीमी थी इसलिए पत्नी को घर छोड़ देना ही मैंने उचित समझा। होने वाले बच्चे और अपनी पत्नी की सुरक्षा को लेकर, मैं भी अपनी पत्नी को हवाई यातायात से 30 जून, 2020 को उनके घर (मायका) छोड़ आया और मैं दूसरे दिन अमिंगड़, कर्नाटक आ गया पर बिहार में समस्या यह हो गई की जल्दी वहाँ कोई डॉक्टर देखने को राजी नहीं हो रहा था। बहुत प्रयास करने के बाद पटना के ही एक प्राइवेट हॉस्पिटल (कुर्जी हॉस्पिटल) में एक लेडी डॉक्टर देखने के लिए तैयार हो गई। फिर उसी हॉस्पिटल में हर माह मेरी पत्नी का इलाज शुरू हो गया। मैं फोन से ही सारा हाल – समाचार लेते रहता था। डॉक्टर ने करीब 5 अक्टूबर, 2020 को बच्चे के जन्म की अनुमानित तिथि की पुष्टी की थी। कुछ महीनों बाद पता चला कि बच्चे की शवसन गति और विकास दर काफी धीमी है जिसके कारण उसका ऑपरेशन सितंबर, 2020 के अंतिम सप्ताह में कभी भी किया जा सकता है। यह बात सुनकर मैं और मेरी पत्नी दोनों डर से गए की आगे क्या होगा।

इसी बीच बैंक की तरफ से अगस्त, 2020 के प्रथम सप्ताह में मेडिकल ग्राउंड या मैरिज ग्राउंड पर होम स्टेट रिक्वेस्ट ट्रांसफर के लिए परिपत्र जारी हुआ। मैंने भी तुरंत मेडिकल ग्राउंड पर होम स्टेट ट्रांसफर के लिए अप्लाई कर दिया। चूंकि मेरी पत्नी की डिलीवरी तथा माँ की तबीयत खराब रहने के कारण मुझे मेडिकल ग्राउंड पर होम स्टेट पटना के लिए ट्रांसफर ऑर्डर 28 अगस्त, 2020 को आ गया। मेरी खुशी का ठिकाना ना रहा, मैं तो खुशी से झूम उठा और घर पर भी तुरंत ये खुशखबरी दे दी कि सही समय पर भगवान ने मेरी विनती सुन ली और मैं अपने पहले बच्चे के जन्म के समय अपनी पत्नी के साथ ही रहूंगा। मेरी पत्नी और घरवाले भी बहुत खुश हो गए आखिर मुझे 3 साल के बाद होम स्टेट ट्रांसफर मिला था। मैं अब घर जाने की तैयारी में लग गया। बैंक और घर का सारा काम जल्दी–जल्दी निपटाने में लग गया। अपने मकान मालिक को भी बता दिया। ट्रांसपोर्ट वाले से भी सारे सामान को ट्रांसफर करने के लिए फाइनल कर लिया। सभी काम लगभग समाप्त हो गया था परन्तु मानो आपकी खुशियों में किसी की नज़र लग जाती है। एक सप्ताह के बाद भी, शाखा से मेरी रिलीविंग नहीं हो रही थी। मैनेजमेंट का कहना था कि जब तक कोई दूसरा स्टाफ मेरी जगह शाखा में नहीं आ जाता है तब तक वो लोग मुझे नहीं

छोड़ सकते हैं। मेरे शाखा प्रबंधक भी मेरी सहायता नहीं कर रहे थे जबकि उनको मेरे हालात के बारे में सबकुछ मालूम था। बच्चे की डिलीवरी का भी समय नजदीक आ रहा था। मैं तो बहुत टेंशन में आ गया था कि अब कैसे घर जाएंगे। शाखा में भी रोज मेरा दिन टेंशन में ही कट रहा था। मैं इतना परेशान था कि जिसे शब्दों में नहीं बता सकता हूँ, ऐसे मेरे साथ पहली बार हो रहा था, मानो भगवान मेरे धैर्य की परीक्षा ले रहे हों। मैंने सभी जगह (अंचल कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय इत्यादि) अपनी समस्या को बतलाया परन्तु बात नहीं बन रही थी। मेरी तो उम्मीद ही टूटने लगी। इसी बीच मुझे पता चला कि कोई दूसरा व्यक्ति मेरी जगह पर आने वाला है अगले सप्ताह। परंतु वो छुट्टी पर चला गया और बाद में जॉइन करेगा ऐसी सूचना मिली अगले दिन। इसी बीच मुझे घर से पता चला की पत्नी का डिलीवरी 28 या 29 सितंबर को करना पड़ेगा क्योंकि बच्चा बहुत कमजोर था। अब मुझ से रहा नहीं गया और मैंने अपने क्षेत्रीय प्रबंधक को फोन लगाया और अपनी जायज समस्या को बतलाया फिर उन्होंने आश्वस्त किया की 25 सितंबर, 2020 को शाखा प्रबंधक मुझे रिलीव कर देंगे। इतना सुनते ही मेरी जान में जान आई। कहते हैं ना कि अच्छे कर्मों का फल अच्छा ही होता है और शायद मेरा होनेवाला बच्चा मेरे लिए भाग्यवान था की मेरा ट्रांसफर फाइनल हो गया और मैं 25 सितंबर, 2020 को ही अमिंगड़ शाखा से रिलीव हो गया। अगले दिन सुबह मैंने घर का सारा सामान ट्रांसपोर्ट से भेजकर, वहां के सभी लोगों का प्यार, स्नेह और आशीर्वाद लेकर 27 सितंबर, 2020 को पटना आ गया।

यहाँ से मेरी दूसरी कठिन परीक्षा थी – एक पिता बनने की। मैंने पटना आने के बाद अगले दिन सुबह 28 सितंबर 2020 को अपनी पत्नी को कुर्जी हॉस्पिटल में एडमिट कराया। उसी दिन, रात में डॉक्टर ने बताया कि बच्चे की धड़कन धीमी है और बहुत कमजोर बच्चा है इसलिए कल सुबह ही ऑपरेशन करना पड़ेगा। उन्होंने, मुझ से अंतिम निर्णय पूछा और एक फार्म पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा। मैंने घर परिवार से विचार विमर्श करके हाँ बोल दी और उस फॉर्म पर भी तुरंत हस्ताक्षर कर दिया। रात भर मैं और मेरी पत्नी अपने होने वाले बच्चे के बारे में सोचते रहे और भगवान से प्रार्थना करते रहे कि सब अच्छे से हो जाए। फिर सुबह हुई और मेरी पत्नी को करीब 8 बजे सुबह ऑपरेशन रूम में ले जाया गया और करीब 9.10 बजे 29.09.2020 को मुझे डॉक्टर्स ने आकर खुशखबरी दी की आपको बेटी हुई है और आपके घर लक्ष्मी आयी है। यह खबर सुनकर मैं खुशी से झूम उठा। मैं तो फूले नहीं समा रहा था कि मैं पिता बन गया हूँ। मैंने पहली बार अपनी बिटिया रानी को गोद लिया तो एक अलग

अहसास हुआ जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता हूँ। आज मैं एक पिता बनकर गौरवान्वित महसूस कर रहा था। फिर कुछ घंटो बाद डॉक्टर्स ने हमें अपनी बिटिया रानी की किलकारी (रोने की आवाज) सुनाई और हमें देकर चले गए। डॉक्टर्स ने हमें एक सप्ताह तक अस्पताल में ही रहने को कहा तो हम लोग वहीं रुक गए, फिर अचानक से उसी रात मेरी बिटिया रानी बिल्कुल चुप हो गई, हमलोग उसे जगा रहे थे। बहुत उठा रहे थे फिर भी वो जरा सा भी टस से मस नहीं हो रही थी। मैं और मेरी पत्नी दोनों बहुत घबरा गए। मेरी पत्नी बहुत ज्यादा रोने लगी। मैंने तुरंत नर्स को बुलाया और सारी बात बतलाई। उस नर्स ने मेरी बिटिया के पैरों में हल्की सी चोट मारी तो बिटिया रानी अचानक से उठ गई और जोर-जोर से रोने लगी, तब जाकर हम लोगों के जान में जान आई। नर्स ने फिर बाद में बताया कि वो गहरी नींद में सो गई होगी इसलिए जग नहीं रही होगी, घबराने की कोई बात नहीं है। यह सुनकर हमलोगों को राहत मिली। इस तरह से हमारी बिटिया रानी का इस धरती पर संघर्षपूर्ण आगमन हुआ। लोग कहते है कि बेटी बहुत नसीब वाले लोगों को नसीब होती है इसलिए मैं अपनी बिटिया रानी को भाग्यशाली मानता हूँ कि उसके आते ही मेरा ट्रांसफर सीधे कर्नाटक से पटना हो गया, इससे बड़ी बात क्या हो सकती है। हमलोगों ने उसका नाम अनन्या रखा है और प्यार से लाडो रानी बुलाते हैं। भगवान और आप लोगों के आशीर्वाद से आज सबकुछ ठीक है।

कविता

नारी नहीं अभिमान...

विनोद कुमार बेदिया
वरिष्ठ प्रबंधक
तपुदाना शाखा

नारी नहीं अभिमान है वो,
पौरुष जीवन की आन है वो
जो बांधे रिश्तों के डोर को,
हर परिवार की कमान है वो !!

जो झुकने ना दे माँ, बाबा, भाई और पति का सर
घर-घर का सम्मान है वो!
हंसती खेलती और सबको हंसाती
नटखट, शरारती, चुलबुली और प्यारी सी बेटी
हर बाबा की जान है वो,
नारी नहीं अभिमान है वो!

जमीं से उठ कर अंतरिक्ष तक जा पहुंची,
रसोई से ले कर, फौजी विमान तक जा पहुंची,
दुश्मन भी ना हिला पाएं जिन्हें,
हिमालय सी अडिग चट्टान है वो,
नारी नहीं अभिमान है वो !!

जिनके बिना पुरुष है अधूरा,
और ना हो जीवन की परिकल्पना,
जो पति के परिवार को भी बना ले अपना,
पूरा करते हुए अपना सपना,
धरती में उपलब्ध ऑक्सीजन के समान है वो,
नारी नहीं अभिमान है वो!!

कभी झाँसी की रानी, कभी मदर टेरेसा,
कभी इंदिरा गाँधी, कभी अरुणा असफ अली,
कभी अहिल्या बाई तो कभी सरोजिनी नायडू,
कभी जीजा बाई तो कभी सावित्री बाई फुले,

वीर वीरांगनाएं हमें हर युग में मिले,
पुरे विश्व में परचम लहराने वाली,
भारत देश की आन बान और शान है वो,
नारी नहीं अभिमान है वो!!
नारी नहीं अभिमान है वो!!

यात्रा–वृत्तांत

स्टेशन जो छूट गया

मीता भाटिया
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत

राधा रात के लगभग दस बजे दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर खड़ी थी। उसकी हालत कुछ ठीक नहीं थी। वह भीड़ में अपना चेहरा छिपाकर रो रही थी। सामान के नाम पर उसके पास सिर्फ उसका पर्स था। वह बार–बार अपना फोन चेक कर रही थी, मानो जैसे चाहती हो कि फोन पर ही सही पर कोई उसे रोक ले। फोन तो नहीं आया, पर उसने जिस ट्रेन का टिकट कटाया था वह ट्रेन ज़रूर आ गई।

वह भारी मन से कुछ दुविधा में ट्रेन में चढ़ी। जब अपनी सीट पर पहुंची, तो देखा की पटरियों पर दौड़ती भागती रेल के अंदर की दुनिया गहरी नींद में थी। राधा को साइड वाला बर्थ मिला था, जिस पर वह इत्मीनान से बैठ गई। वह खिड़की से बाहर देखती हुई अपनी आँखों को आंसुओं से भीगो रही थी कि तभी ट्रेन किसी सूनसान जगह पर रुक गई। राधा को लगा कि ट्रेन को सिग्नल नहीं मिला होगा।

कुछ देर बाद ट्रेन वापस चल पड़ी। राधा ट्रेन की गति से अपने विचारों को दौड़ा रही थी कि तभी राधा की हमउम्र महिला राधा के पास आई और बोली, आपके साथवाली सीट मेरी है, राधा ने अपनी रुआंसी आँखों को छुपाते हुए अपने आपको समेटा। उस महिला ने अपना परिचय दिया, मेरा नाम मीरा शर्मा है और आपका? राधा इस संवाद को आगे नहीं बढ़ाना चाहती थी, पर शिष्टाचार निभाने के लिए उसने कहा, मेरा नाम राधा है आप यहां कहां से चढ़ी, यहां स्टेशन तो नहीं था।

मीरा ने जवाब दिया, मेरी ट्रेन दिल्ली स्टेशन से छूटी थी, तो मेरे कार ड्राइवर ने ड्राइव करके मुझे यहां छोड़ दिया। आप कहां जा रही हैं?

राधा ना चाहते हुए भी अब इस संवाद का हिस्सा बन गई। उसने जवाब दिया, जी, मैं मथुरा अपने मायके जा रही हूँ, और आप..? मीरा बोली, अरे अब तो यह ट्रेन मेरा घर है, मेरा आना–जाना लगा रहता है। हां, पर जाना तो वैसे मुझे भी मथुरा ही था, अब दोनों काफ़ी बातें करने लगी। औपचारिकता की सिलवट भी अब कुछ निकल–सी गई थी। मीरा ने पूछा, बुरा मत मानना, पर तुम कुछ परेशान–सी लग रही हो। चाहो तो हम बात कर सकते हैं, वैसे भी मथुरा आने में अभी समय है।

आधा कुछ असहज हुई, पर वह मीरा से बात करना चाहती थी, अब क्या बताऊं, मैंने और सागर ने दो साल पहले लव मैरिज की थी। एक साल तक सब ठीक था, पर पिछले कुछ दिनों से सागर के लिए मेरे अलावा सब कुछ महत्वपूर्ण हो गया है, आए दिन झगड़े होते हैं। कभी नौकरी की वजह से, कभी मेरे माता–पिता, तो कभी उसके पैरेंट्स की वजह से, शायद वह अब मुझसे प्यार नहीं करता। ना मुझे समय देता है और ना ही तवज्जो। इसलिए जा रही हूँ उसे हमेशा के लिए छोड़कर इतना कहकर राधा फफक पड़ी। मीरा ने कहा, तुम्हारे आँसू बता रहे हैं कि तुम उससे बहुत प्यार करती हो। देखो राधा, छोटी–छोटी घटनाओं से किसी बड़े निर्णय पर पहुँचना गलत है। मैंने भी ये गलतियां की हैं, अगर ऐसा लगे कि रिलेशनशिप में कोई एक डगमगा रहा है, तो उसका साथ मत छोड़ो, बल्कि उसका हाथ और कसकर पकड़ लो। लंबी सांस भरते हुए मीरा ने आगे कहा, ज़िंदगी कभी दूसरा मौक़ा नहीं देती, बिल्कुल किसी ट्रेन की तरह अगर एक बार स्टेशन छूट गया, सो छूट गया और अगर किसी से प्रेम है, तो कभी उससे कटु शब्द मत बोलो। क्या पता वह आपके साथ उसके आख़िरी शब्द हों, वह ज़िंदगीभर एक कटु स्मृति बनकर रह जाएं। आप जिससे प्रेम करते हैं, वह आपके पास है, आपके साथ है, यह सबसे महत्वपूर्ण है वापस जाओ, ऐसा न हो कि समय निकल जाए और तुम चाहकर भी अपने प्रेम के पास वापस ना लौट पाओ। राधा मीरा को सुनती जा रही थी।

उसने कहा, मीरा, शायद तुम जो कह रही हो वह सच है, मुझे सागर को ऐसे अचानक छोड़कर नहीं आना चाहिए था। पता नहीं गुस्सा दिमाग पर इतना हावी हुआ कि कुछ समझ नहीं आया। मैं कल मां से मिलकर तुरंत वापस लौट जाऊंगी।

राधा अब काफी हल्का महसूस कर रही थी। उसने आगे कहा, मीरा, मैं अपनी ट्रेन की दोस्ती को आगे बढ़ाना चाहती हूं, क्या तुम मुझे

अपना नंबर दोगी? मीरा ने राधा को अपना नंबर दिया, जो उसने एक काग़ज़ पर लिख लिया। रात की ख़ामोशी में राधा को कब नींद लगी उसे पता ही नहीं चला। नींद टूटी तब मथुरा आ गया था, रात के तीन बजे थे। मीरा अपनी सीट पर नहीं थी। राधा ने बहुत ढूंढ़ा, पर फिर उसने सोचा कि वह जल्दबाजी में स्टेशन पर उतर गई होगी। राधा अगले दिन मथुरा में अपनी माँ से मिलकर वापस दिल्ली लौट आई।

उसने आते ही सागर को गले लगा लिया उसके हाथों को अपने हाथों में लेकर कहा, पता है सागर, मैं तो तुम्हें और हमारे रिश्ते को हमेशा के लिए छोड़कर जा रही थी, ऐसा लगा कि तुम मेरे हाथों से रेत की तरह फिसलते जा रहे हो, फिर एक अजीब-सी बेचैनी हुई कि शायद मैं तुमसे कभी नहीं मिल पाऊंगी। मैं किसी भी तरह तुम्हें देखना चाहती थी। अब तुम अकेले नहीं हो। जीवन के हर अंधेरे में मैं तुम्हारा साथ दूंगी। सागर ने राधा का हाथ पकड़ा और कहा, मुझे तुम्हारी ज़रूरत है राधा। भला हो उस मीरा का जिसने तुम्हें मेरे पास वापस भेजा। पर वह कौन थी? अगर वह दिल्ली में रहती हैं, तो चलो उसके घर जाकर उसे धन्यवाद दे आएं। राधा ने कहा, हां, घर तो नहीं पता, पर उसने मुझे अपना नंबर ज़रूर दिया था। रुको मैं अभी कॉल करती हूँ। राधा ने मीरा को फोन मिलाया। रिंग जा रही थी और थोड़ी देर में किसी आदमी ने फोन उठाया राधा ने कहा, क्या मीरा शर्मा को फोन देंगे प्लीज़।

उस तरफ़ से आवाज़ आई, वह नहीं है, पर आपको मेरा नंबर किसने दिया।

राधा बोली, क्या आप उनके पति दीपक हैं?

दीपक ने कहा, हां

राधा ने कहा, मुझे आपका नंबर मीरा ने ही तीन दिन पहले ट्रेन में दिया था। हम दोनों साथ-साथ सफ़र कर रही थी। क्या प्लीज़ उसका मोबाइल नंबर देंगे। मुझे मीरा से बात करनी है। इतना सुनते ही दीपक ने कहा, यह कैसा मज़ाक है? क्या आप मेरे दु:ख का मज़ाक उड़ा रही हैं। मीरा 15 दिन पहले दिल्ली मथुरा रेल हादसे में मर चुकी है। मेरी मीरा चली गई, मैं उसके आख़िरी समय में उसके पास नहीं था। वह मुझ पर गुस्सा थी, घर छोड़कर अपनी माँ के पास मथुरा जा रही थी कि तभी यह हादसा हुआ। काश मैं लड़ने की जगह उससे आख़िरी बार यह कह पाता कि मुझे तुमसे प्यार है, मीरा मुझे तुम्हारी ज़रूरत है...

इतना सुनना था कि राधा के हाथों से फोन छूट गयाा। आँखों से आंसुओं की अविरल धारा बह रही थी और उसे कुछ याद आ रहा था, तो मीरा के आख़िरी शब्द, राधा ज़िंदगी किसी को दूसरा मौक़ा नहीं देती बिल्कुल किसी रेल की तरह..।

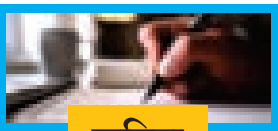

कविता

नारी तुम स्वतंत्र हो....

ललिता त्रिपाठी
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, रंगारेड्डी

नारी तुम स्वतंत्र हो,
जीवन धन यंत्र हो।

काल के कपाल पर,
लिखा सुख मंत्र हो।

सुरभित बनमान हो,
जीवन की ताल हो।
मधु से सिंचित सी, कविता कमाल हो।

जीवन की छाया हो,
मोहभरी माया हो।
हर पल जो साथ रहे, प्रेमसिक्त साया हो।

माता का मान हो,
पिता का सम्मान हो।
पति का अभिमान हो रिश्तों की शान हो।

घर की मर्यादा हो,
प्रेमपूर्ण वादा हो।
प्रेम के सानिध्य में, खुशी का इरादा हो।

रंग भरी होली हो,
फगुनाई टोली हो।
प्रेम रस पगी सी, कोयल सी बोली हो।

मन का अनुबंध हो,
प्रेम का प्रबंध हो
जीवन को परिभाषित करता निबंध हो।

नारी तुम स्वतंत्र हो,
जीवन धन यंत्र हो।

प्रधान कार्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह का आयोजन

यूको बैंक अखिल भारतीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता – पुरस्कार विजेता

बैंक ऑफ महाराष्ट्र अखिल भारतीय हिंदी सेमिनार – पुरस्कार विजेता

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में बेंगलूरु स्थित सरकारी कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों में कार्यरत महिला कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन

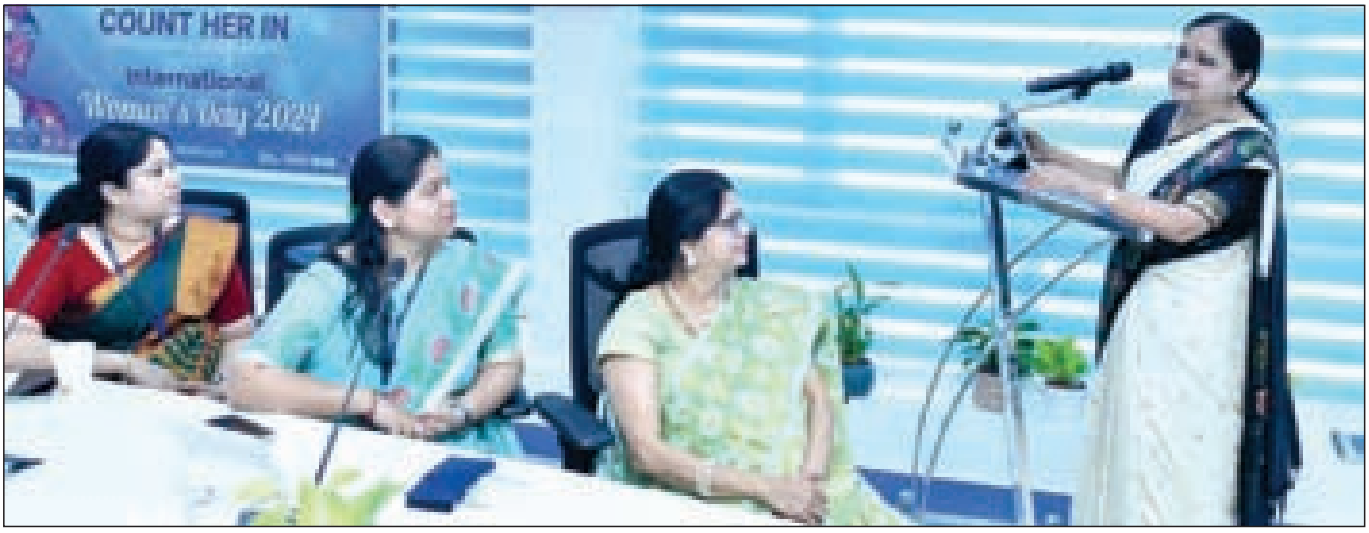

कविता

सृष्टि गीत

भरत आदित्य
प्रबंधक
घाटशिला

कुसुम कली और कंठ कठोर।
अगिनत तेरी छाया के छोर।।
हर रूप तू अपनाती है।
जो चाहे तू बन जाती है।।

सरल नहीं सम्पूर्ण समर्पण।
सरल नहीं जीवन का अर्पण।।
पर तू वह भी कर जाती है।
दुःख सह कर भी मुस्काती है।।

अर्थ नहीं इसका तू अबला।
प्राणदायनी है तू प्रबला।।
तू सब संभव कर जाती है।
यह जीवन तेरी थाती है।।

तू सशक्त है तू सक्षम है।
अटल निश्चयी दृढ़ संयम है।।
तू अपना मार्ग बनाती है।
जो चाहे कर दिखलाती है।।

इतिहास नहीं बस गौरव तेरा।
मुक्त क्षितिज है ललित सवेरा।।
भविष्य नवीन लिख विधि पन्नों पर।
सृष्टि गीत तू गाती है।।

तू सब संभव कर जाती नारी।
जीवन यह तेरी थाती है।।

रेनी श्रीवास्तव
अधिकारी
एसकेपी प्रयागराज

कविता

बेटी

छम-छम करे पायल,
ठुमक कर जब चले वो।
चमक उठे आँखें,
झूम कर नाचे वो।
चहक उठे आँगन कोना,
तुतला कर जब बोले वो।
माँ की आशा है वो,
पिता का है विश्वास,
उम्मीदों की है ज्योति,
सबसे अनमोल मोती है वो।
माथे का कुमकुम है वो,
गुड़िया सी मासूम है।

कभी कल-कल बहती नदी वो,
कभी निर्मल चाँदनी,
कभी रूप है शक्ति का,
कभी है ममता का।
परिवार का है आधार वो,
जीवन कर दे खुशहाल वो।

आलेख

एक सलाम नारी शक्ति के नाम

विधि जटनीया
अधिकारी
मुद्रा तिजोरी, राजकोट

जयशंकर प्रसाद जी ने कामायनी में लिखा है –

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग–पग–तल में,
पियूष श्रोत सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में।

भारतीय समाज में स्त्रियों को सम्मान पूर्ण स्थिति प्राप्त रही है। स्त्री को शक्ति की साकार प्रतिमा के रूप में जाना जाता है। यहां स्त्री को देवी की संज्ञा दी जाती है एवं लक्ष्मी, दुर्गा, शक्ति के रूप में पूजा जाता है। भारतीय इतिहास में दृष्टिपात करें तो इतिहास का प्रारंभ वैदिक युग से होता है और वैदिक काल में स्त्रियों को उच्च स्थान प्राप्त था। वैदिक युग में समाज में नारी का बहुत आदर था। गार्गी, मैत्रेयी उस युग की नारियाँ हैं, जिन्हें आज भी बहुत आदरणीय मानते हैं।

नारी समाज का आधार होती है। एक समाज के निर्माण में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारे वेदों तथा उपनिषद में नारी को संसार की जननी कहा गया है। वेद नारी को अत्यंत महत्वपूर्ण गरिमा और उच्च स्थान प्रदान करते हैं। वेदों में स्त्रियों की शिक्षा–दीक्षा, शील गुण, सामाजिक भूमिका और कर्तव्य का जो सुंदर वर्णन किया गया है, वह विश्व के अन्य किसी धर्म ग्रंथ में नहीं है। स्त्री को यज्ञीय अर्थात यज्ञ समान पूजनीय, ज्ञान देने वाली आदि अनेक आदर्श सूचक नाम दिए गए हैं।

यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैतास्तु न पूजयन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया।।

मनुस्मृति

जिस देश और समाज में नारियों की पूजा अर्थात सत्कार होता है वहां दिव्य गुण, दिव्य भोग और दिव्य संतान होती है और देवता वहां रहते हैं और जहां इनका सम्मान नहीं होता वहां सब कार्य निष्फल होते हैं।

आज की नारी शक्ति, साहस व विद्वता के क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ रही है। आज चाहे बिजनेस हो या बॉर्डर, डॉक्टर हो या पायलट, नारी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका विभिन्न क्षेत्र में निभा रही है। आज चाहे रणभूमि हो या कार्यस्थल दोनों जगह नारी अपनी क्षमता अच्छे से निभा रही है। नारी बहन, बेटी, पत्नी, माँ विभिन्न रूप में अपना कर्तव्य और दायित्व निभा रही है।

सच में,

अतीत गवाह है कि मैदाने जंग में,
कायरों की कोई जगह नहीं होती,
यहां उन्हीं को पनाह मिलती,
जिनकी रगों में हौसलों की खेती होती।

आज शिक्षा, साहित्य, संगीत, तकनीकी क्षेत्र और यहाँ तक कि खेलों में भी नारी आगे बढ़ रही है। खेलों में अवॉर्ड्स और मेडल्स पाकर नारी हमारे देश का गौरव बढ़ा रही हैं। खेलों के क्षेत्र में देखे तो आज कौन सा खेल है जो नारी से अछूता रह गया है। क्रिकेट, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, हॉकी, बास्केटबॉल, शूटिंग और अब बॉक्सिंग में भी नारी आगे बढ़ रही है। मैरीकॉम ने बॉक्सिंग के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धियां हासिल करके यह सिद्ध कर दिया कि नारी चाहे तो अपने सपने को पूरा कर सकती है।

खेल व्यक्ति को स्वस्थ रखने के लिए बहुत अच्छा है। मैरीकॉम के खेल में आने की संघर्ष गाथा सबसे अलग है। मैरीकॉम ने यह साबित किया है कि अगर दृढ़ इच्छाशक्ति व प्रचंड पुरुषार्थ की आग मन में हो तो कोई ताकत उसे नहीं रोक सकती। आज नारी शक्ति मैरी कॉम की आत्मकथा को टटोल कर उनसे प्रेरणा लेते हैं। उनके घर में एक समय खाने की भी दिक्कत थी। उनके पिता एक खेतिहर मजदूर थे और माँ

शॉल बुनती थी। उसके घर में मूलभूत सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं थी, इसके बावजूद मैरीकॉम ने बॉक्सिंग जैसा मुश्किल खेल चुना और खेल जगत में बहुत ही आगे बढ़ी।

बॉक्सिंग के शुरुआती दौर में बहुत कठिनाईयां आईं पर मैरीकॉम ने हार नहीं मानी। एक आम भारतीय नारी की तरह विवाह के बंधन में भी वह बंधी। विवाह के पश्चात उसके दो जुड़वा बेटे हुए, परंतु उसने बॉक्सिंग से हार नहीं मानी। परिवार व बच्चों की जिम्मेदारी पूर्ण रूप से निभाने के साथ वह फिर से रिंग में उतर आई। उसके पति ऑनलेर ने भी उसे पूरा सहयोग दिया। वह अपनी बॉक्सिंग की प्रैक्टिस भी करती रही। उसके बाद उसने एक बेटे को जन्म दिया। अब तीन बच्चों की माँ मैरीकॉम ने मन से बॉक्सिंग नहीं छोड़ी, वह फिर भी रिंग में प्रैक्टिस करने लगी। नारी शक्ति की अद्भुत उदाहरण रूप है मैरीकॉम। वह नारी को प्रेरणा देती है कि नारी में अद्भुत शक्ति है और वह आगे बढ़ सकती है।

मैरीकॉम के मामले में उसके पति ऑनलेर का सहयोग भी काबिले तारीफ है, उसने हर बार पूर्ण सहयोग से मैरीकॉम को आगे बढ़ाया। मैरीकॉम जब एशियाई पदक विजेताओं के लिए एक समारोह में शामिल हुईं तब एक बहुमूल्य खिलाड़ी के रूप में उन्हें सम्मानित किया गया। मैरीकॉम ने सभी को प्रेरणा रूप प्रवचन देते हुए कहा कि महिलाओं को खेलों में खुद ही आगे आना होगा। रास्ते में आने वाली कठिनाइयों को उन्हें खुद ही दूर करना होगा। महिलाएं खेल में जरूर आगे बढ़ सकती है, बस ज़रूरत है समाज में महिलाओं के प्रति फैली धारणा को बदलने की। जब तक महिलाओं के प्रति धारित मानसिकता को नहीं बदलेंगे, वह आगे नहीं आ सकती।

फिल्म निर्माता-निर्देशक श्री संजय लीला भंसाली ने 2011 में इच्छा जताई कि वह मैरीकॉम के जीवन पर फिल्म बनाना चाहते हैं। मैरीकॉम के किरदार को बॉलीवुड एक्ट्रेस प्रियंका चोपड़ा ने बखूबी निभाया है। यह बहुत ही खूबसूरत, असरदार और शानदार फिल्म बनी और सुपरहिट भी साबित हुई। जिसने भी वह फिल्म देखी वह मैरीकॉम के जीवन से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। इस तरह मैरीकॉम केवल महिलाओं के लिए नहीं, पूरे मानव समाज के लिए एक प्रेरणादायी उदाहरण हैं। जीवन में व्यक्ति जो चाहे वो कर सकता है, वह आगे बढ़ सकता है, जिस भी क्षेत्र में चाहे उसमें वह नए कीर्तिमान स्थापित कर सकता है। विभिन्न क्षेत्र उपलब्ध हैं - आप खेलकूद में आगे बढ़ो, आप व्यवसाय में या व्यापार में आगे बढ़ो, आप प्रशासन, सामाजिक, आर्थिक या किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हो बशर्ते आपको पुरुषार्थ करना होगा। प्रचंड पुरुषार्थ और दृढ़ इच्छाशक्ति से

किसी भी क्षेत्र में आप आगे बढ़ सकते है। यदि बस यही कहोगे कि यह क्यों आगे बढ़ गए या इसे कैसे सफलता प्राप्त हुई तो आप खुद आगे नहीं बढ़ सकते। खुद की मेहनत, पुरुषार्थ से कोई भी किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है। ईश्वर ने सभी को शक्ति प्रदान की है।

जो व्यक्ति जीवन में सफलता पाना चाहते हैं, कुछ कर दिखाना चाहते हैं, आगे बढ़ना चाहते है, उनके लिए मैरीकॉम का जीवन एक आदर्श उदाहरण है। सफलता पाने में चुनौतियां और संघर्ष तो आएंगे ही, अगर प्रचंड पुरुषार्थ, दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कड़ी मेहनत की जाए तो कोई भी व्यक्ति अपना लक्ष्य हासिल कर सकता है।

घोंसलों में आई चिड़िया से पूछा चूजों ने,
माँ आकाश कितना बड़ा है,
चूजों को पंख में समाती बोली चिड़िया
सो जाओ इन पंखों से छोटा है।

बुलंद हौसले के साथ अगर मेहनत की जाए तो व्यक्ति कोई भी लक्ष्य हासिल कर सकता है।

मैरीकॉम ने जीवन में बहुत उपलब्धियां हासिल की हैं, कई सारे पदक प्राप्त किए हैं, कई सारे सम्मान और पुरस्कार प्राप्त किए हैं। मैरीकॉम हम सभी के लिए एक नारी शक्ति का अगम्य उदाहरण है।

मैरीकॉम के उदाहरण से हम यह कह सकते हैं कि महिलाओं के लिए कोई भी काम कठिन नहीं है अगर वो दिल में ठान ले। नारी शक्ति, समर्पण, त्याग व सहनशीलता की मूर्ति है। नारी आज हर क्षेत्र में अपना संपूर्ण योगदान प्रदान कर रही है।

प्रसिद्ध लेखक व विचारक डेल कार्नेगी ने क्या खूब कहा है कि –

मैं हवाओं का रुख नहीं बदल सकता पर अपनी नांव की दिशा ज़रूर ठीक कर सकता हूँ, ताकि लक्ष्य पर पहुँच सकूं।

आइए, नारी को समान अवसर दें। सभी मिलकर निश्चय करें कि नारी का सम्मान करेंगे, नारी को सहयोग देंगे तथा नारी को आगे बढ़ने देंगे।

बाबा साहेब अम्बेडकर का यह कथन मानव कल्याण को स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करता है –

मैं किसी समुदाय की प्रगति की माप महिलाओं द्वारा हासिल की गई प्रगति से करता हूँ।

अमेरिका की अश्वेत कवयित्री माया एंजेलो – जिन्होंने महिला उत्थान साहित्य में महत्वपूर्ण कार्य किया है उनके कार्यों के लिए उन्हें 50 मानद उपाधियां मिली और विश्व के लाखों लोगों को उनके साहित्य से प्रेरणा मिली। उन्होंने अपने जीवन से सिद्ध किया कि नारी शक्ति है और यदि वह एक बार ठान लें तो कोई भी ताकत उसका मार्ग नहीं रोक सकती। उनके जीवन और संघर्ष से प्रेरणा लेकर आज विश्व महिला दिवस पर हर एक महिला को नमन करते हुए उनकी कृति 'फिर भी मैं उठ खड़ी हो जाऊंगी' की कुछ पंक्तियां समर्पित है।

**** फिर भी मैं उठ खड़ी हो जाऊंगी ****

आप मुझे अपने तोड़े मरोड़े,
कटु झूठ से भरा इतिहास
लिखकर नीचा दिखा सकते हैं,
आप मुझे धूल में मिला सकते हैं,
फिर भी मैं सच्ची धूल की तरह
आंधी बन उठ खड़ी हो जाऊंगी।

क्या मेरी जिंदादिली
तुम्हें परेशान करती है,
क्योंकि मैं ऐसे जीती हूं
जैसे मेरे आंगन में,
कुएं नहीं तेल के झरने हों।

चांद और सूरज की शक्ति से
कुलचे भरते ज्वार भाटे की तरह,
उठती हुई मेरी आशाओं के साथ
तूफान बन मैं उठ खड़ी हो जाऊंगी।
पीछे छोड़ पाए और
आतंक को मैं उठती हूँ
एक निर्मल और आज से भरी सुबह से
मैं उठती हूँ
लेकर पूर्वजों की उस स्थिति को
लो में उठती हूँ
लो मैं उठती हूँ
लो मैं अब उठती हूँ।

विश्व महिला दिवस पर विश्व की हर नारी शक्ति को मेरा शत शत वंदन।

मौसम बदले हैं, उत्सव बदले हैं
हूक बदली है, कूक बदली है,
सारी बंद खिड़कियां खुल गई हैं,
सामने उन्मुक्त आकाश दिख रहा है।
आओ धरती का इससे
एक नया रिश्ता जोड़े,
जड़ता तोड़े और नए विचार को जन्म लेने दें।
मुक्त आकाश में स्त्रियों को विहरने दें।

कविता

महिला सशक्तिकरण

श्वेता शर्मा
अधिकारी
बिष्टुपुर शाखा

एक लड़के ने अपनी माँ से पूछा,
क्यों महिला सशक्तिकरण का नारा गूंजा?
महिलाएं तो शुरू से ही सशक्त रहीं,
उनका दर्जा हमेशा से रहा था ऊँचा।
माँ बोली बात है बहुत पुरानी,
स्त्री हमेशा से थी ज्ञानी।
पुराने काल से दर्जा ना हुआ दूजा,
स्त्री के आँचल में समाया रहा सबकुछ समूचा।
धीरे-धीरे जब समय गुजरा,
पुरुष को लगने लगा भय,
कहीं स्त्री ना करें बगावत,
कहीं पुरुष वर्चस्व ना हो जाए कम।
इसलिए लिए गए निर्णय,
स्त्री करें घर के सारे काम,
और पुरुष को मिला घर के बाहर सम्मान,
वो भूल गयी अपनी अहमियत,
देती रही योगदान नित।

फिर से समय गुजरा फिज़ाएं बदली,
किसी ने कहा देना ही पड़ेगा महिला को उन्हें हक़ और सम्मान।
क्यूंकि प्रति दिन देती वो नए योगदान।
आज के युग की महिला हो गयी है जागरूक,
लड़ती है करती है और जताती नहीं अपना दु:ख।
खुद करती अपना संपूर्ण काम,
देती हर क्षेत्र में अपना पूर्ण श्रमदान।
ना रूकती ना थकती, करती नित नए ऐलान,
हर दिन की जंग जीत कर पाती अभिमान।
वैसे तो हर स्त्री बहुत पुराने समय से थी सशक्त,
किन्तु धीरे-धीरे मिला उनको अपना मंच और आया उनका भी स्वर्णिम वक़्त,
एक महिला हुई अगर जागृत,
पूरा परिवार और आस-पास हो जायेगा अलंकृत,
सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक सब तरह से है स्त्री सुसंस्कृत,
पूरे राष्ट्र को कर सकती है विकसित।
महिलाओं के अधिकार हैं तो बहुत सारे,
लेकिन हर बार उन्हें दिखाए जाते हैं दायरे,
जब स्त्री को समावेशन का मिलेगा उत्साह,
तब सभी लोगों का होगा विकास कि दिशा में प्रवाह।
महिला समावेशन से ही बनेगा बेहतर भविष्य, नए युग का दिखेगा सदृश्य।

आलेख

मानव कंप्यूटर – शकुंतला देवी

धीरज जुनेजा
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत

भारत में हर सदी में कोई न कोई ऐसी महान और पुण्य आत्मा ने जन्म लिया है, जिनके जन्म से मानव जीवन का उत्थान हुआ है। इन्हीं में से एक शकुंतला देवी भी थी, जिन्हें दुनिया का मानव कंप्यूटर यानी कि ह्यूमन कंप्यूटर के नाम से भी जाना जाता है। बचपन से ही गणित की प्रतिभा रखने वाली शकुंतला देवी की जीवन यात्रा से प्रेरणा लेकर लाखों युवाओं ने अपने सपनों को साकार किया है। शकुंतला देवी बचपन से ही अदभुत प्रतिभा की धनी एवं गणितज्ञ थी। संख्यात्मक परिगणना में गजब की फुर्ती और सरलता से हल करने की क्षमता होने के कारण वह 'मानव कंप्यूटर' नाम से विख्यात हुईं। उन्होंने अपने समय के सबसे तेज माने जाने वाले कंप्यूटरों को गणना में मात दी थी। खास बात यह है कि शकुंतला देवी ने यह कारनामा उस दौर में किया जब दुनिया में कंप्यूटर के बारे में कोई भी नहीं जानता था और न ही कैलकुलेटर तैयार हुए थे। उस दौर में शकुंतला देवी गणित के बड़े-बड़े सवाल मिनटों में जुबानी हल कर देती थी।

शकुंतला देवी का बचपन

शकुंतला देवी का जन्म 4 नवंबर 1929 को भारत राष्ट्र के कर्नाटक राज्य के बेंगलूरु शहर में हुआ था। शकुंतला देवी एक निर्धन कन्नड़ ब्राह्मण परिवार से थीं। शकुंतला देवी के पिताजी एक सर्कस कंपनी में काम कर जीविका चलाते थे। उनके परिवार की आमदनी उस समय बहुत कम होने के कारण वे औपचारिक शिक्षा भी नहीं ले पाईं तथा स्कूली पढ़ाई बीच में ही छूट गई। उस तरह की तकलीफें भी शकुंतला की प्रतिभा को रोक नहीं पाईं। मात्र तीन वर्ष की आयु में उनके पिता जी ने उनकी गणित की प्रतिभा को पहचान लिया था। वह तीन साल की उम्र में जब अपने पिता के साथ ताश खेलती थी तो बार – बार वह अपने पिता को हरा देती थी। उनके पिता को ताज्जुब हुआ कि 'कैसे कोई इतनी कम उम्र में ताश के क्रम को याद रखकर आगे की चाल समझ सकता है। उनके पिता को यह भी आशंका हुई कि कहीं उनकी बच्ची उन्हें धोखा तो नहीं दे रही है। बिना कोई शिक्षा ग्रहण किए ही जब वह आसानी से गणित के बड़े से बड़े हिसाब चुटकियों में हल कर लेती थी तब उनके पिता को बेटी शकुंतला की मानसिक योग्यता एवं क्षमता का पता चला। शकुंतला देवी की असामान्य स्मरण शक्ति एवं गणित की प्रतिभा का पता चलने के बाद उनके पिता ने सर्कस की नौकरी छोड़ शकुंतला देवी पर सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित करना आरंभ किया। शकुंतला देवी ने केवल तीन साल की उम्र से ही अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करना शुरू कर दिया था। छह साल की उम्र में प्रवेश करते ही शकुंतला देवी ने मैसूर विश्वविद्यालय में अपनी गणितीय क्षमताओं का प्रदर्शन किया, जिसमें उन्होंने अपनी गणितीय प्रतिभाओं के आधार पर कई गणितीय समस्याओं को सरलता से हल किया। बाद में वह प्रदर्शन के लिए अन्नामलाई विश्वविद्यालय एवं उस्मानिया विश्वविद्यालय गईं। जब उनकी उम्र 15 साल की थी, उस समय अपने पिता के साथ लंदन चली गईं तथा यहाँ बहुत सी संस्थाओं में अपनी प्रतिभा एवं कला का प्रदर्शन किया। 5 अक्तूबर, 1950 को बीबीसी चैनल ने शकुंतला देवी के साथ एक कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम के समय होस्ट लेस्ली मिचेल ने उनसे अंकगणित का एक जटिल सवाल पूछा तो शकुंतला देवी ने कुछ ही सेकेंडों में जवाब दे दिया, लेकिन शकुंतला देवी द्वारा प्रस्तुत उत्तर को पहले तो गलत माना गया लेकिन पुन: गणना करने के बाद शकुंतला देवी के उत्तर को सही माना गया और यह खबर पूरी दुनिया में तेजी से फैल गयी और शकुंतला देवी को 'मानव कंप्यूटर' की उपाधि दी गयी। शकुंतला देवी अपने दिमाग में गणना करने में बहुत तेज थीं। अनेक बार कुछ ही सेकेंडो में बड़े-बड़े आकलन करके उन्होंने विशेषज्ञों को हैरान कर दिया, जिससे राष्ट्रीय मीडिया सहित अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में उन्हें पहचान मिलने लगी।

शकुंतला देवी का गणित में योगदान

शकुंतला देवी का गणित में योगदान अविस्मरणीय है, जिसको निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

- शकुंतला देवी की अद्भुत क्षमता को हर कोई परखना चाहता था। 1977 में सथरन मेथोडिस्ट यूनिवर्सिटी के लोगों ने शकुंतला देवी को आमंत्रित किया और इसी दौरान उन्हें अमेरिका जाने का मौका मिला। डल्लास में उनका मुकाबला आधुनिक तकनीकों से लैस यूनिवैक कम्प्यूटर से हुआ। उन्हें 201 अंकों की एक संख्या का 23वां वर्गमूल निकालना था। यह सवाल शकुंतला देवी ने बिना कागज़ कलम के सिर्फ 50 सेकेंड में हल किया जबकि यूनिवैक ने इसके लिए 62 सेकेंड का वक्त लिया, लेकिन शकुंतला देवी का जवाब सही या गलत है यह जानने के लिए अमेरिकन ब्यूरो आफ स्टैंडर्ड संस्था को यूनिवैक 1101 कंप्यूटर में एक विशेष प्रोग्राम को तैयार करना पड़ा, जिससे यह पता चला कि शकुंतला देवी ने उस समय स्मरण शक्ति के आधुनिक कंप्यूटरों को बारह सेकेंड से मात दे दी थी। इस सबसे तेज मानव गणना के कारण, उनका नाम गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है।
- अपनी प्रतिभा को साबित करने के लिए 1980 में शकुंतला देवी को दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित लंदन के इंपीरियल कॉलेज में बुलाया गया। यहाँ भी उनका मुकाबला एक कंम्प्यूटर से हुआ। उन्हें 13 अंको की दो संख्याओं (7,686,369,774,870, 2,465,099,745,779) का गुणनफल निकालने का काम दिया गया और यहाँ भी उन्होंने सिर्फ 28 सेकेंड में उत्तर देकर अपने आप को कंम्प्यूटर से भी तेज साबित किया। उनकी इस उपलब्धि को गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के 1982वें एडिशन में जगह दी गई। अमेरिका में यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बेवर्ली के मनोविज्ञान प्राध्यापक अरथर जेनसन ने 1988 में शकुंतला देवी के ज्ञान की उपलब्धियों का अध्ययन किया। अनेक मुश्किल सवालों को जेनसन द्वारा कागज पर लिखने से पहले ही बहुत कम समय में शकुंतला देवी समाधान कर सबको अचरज में डाल देती थीं।
- वर्ष 1988 में, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी, यूएस में, शकुंतला देवी ने मात्र 2 सेकंड में 95443993 का घनमूल 457 निकाला। इसी दौरान उन्होंने 10 सेकंड में 2373927704 का घनमूल 1334 भी निकाला।
- शकुंतला देवी ने मात्र 10 सेकंड में 20047612231936 के 8वें मूल की गणना करके भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।
- शकुंतला देवी ने अपने जीवन को गणित के लिए पूर्ण समर्पित किया, उनका कहना था कि कंप्यूटर को मानव ने बनाया है, इसीलिए मानव मशीन से हमेशा बेहतर ही रहेगा।

शकुंतला देवी केवल गणित में ही विशेषज्ञ नहीं थीं बल्कि एक अच्छी लेखिका के रूप में भी उन्होंने गणित, वैज्ञानिक अंकों एवं पहेलियों के

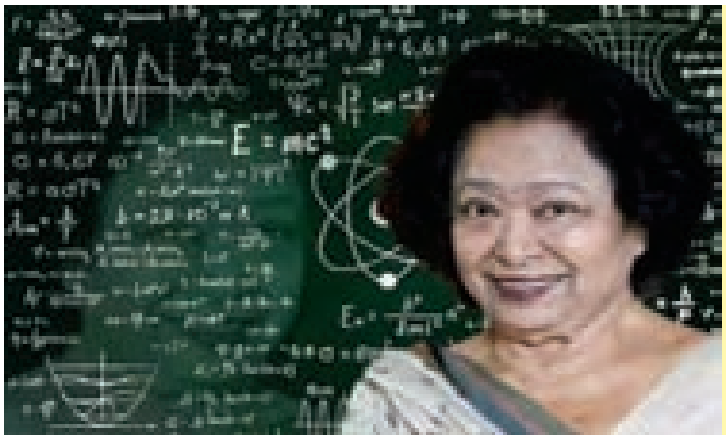

बारे में अपने लेखों में लिखा है। शकुंतला देवी ने गणित की शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के लिए कई गणितीय पुस्तकें और लेख लिखे। इसके साथ-साथ शकुंतला देवी ने विश्व भर में गणित के कार्यक्रमों में भाग लेकर अपना प्रभावशाली प्रदर्शन किया। शकुंतला देवी ने महिलाओं को गणित में सफल होने के लिए सदैव प्रोत्साहित किया और उन्होंने कई महिलाओं को गणित में करियर बनाने के लिए मदद भी की। अपने मानसिक हिसाब के कामों को बढ़ावा देने के साथ ही उन्होंने ज्योतिष शास्त्र पर भी बहुत सी किताबें लिखी है।

शकुंतला देवी द्वारा लिखी गई पुस्तकें

शकुंतला देवी ने गणित में अपना अविस्मरणीय योगदान देते हुए, अनेक पुस्तकें लिखीं, जिनके नाम आप निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से जान सकते हैं:

- वर्ष 1977 में, शकुंतला देवी ने द मैथमैटिकल मिस्ट्री ऑफ द ब्रहमांड नामक एक पुस्तक लिखी।
- वर्ष 1988 में, द ह्यूमन कंप्यूटर नामक पुस्तक के माध्यम से उनके जीवन के कुछ बेहतरीन किस्से आपको पढ़ने के लिए मिल जायेंगे।
- वर्ष 1994 में, फिगरिंग: द जॉय ऑफ नंबर्स नाम की पुस्तक ने गणित के नए आयाम को समाज के आगे प्रस्तुत किया।
- वर्ष 1997 में, गणित: एक अद्भुत दुनिया नामक पुस्तक ने गणित की अद्भुत दुनिया पर प्रकाश डाला।
- वर्ष 2000 में, द मैजिकल माइंड ऑफ शकुंतला देवी में शकुंतला देवी जी की प्रतिभा की सराहना की गयी है।
- वर्ष 2004 में, अंकों का जादू नामक पुस्तक में गणित की कईएल्गोरिदमको सरलता से सुलझता हुआ दिखाया गया है।
- वर्ष 2007 में, प्रतिभा: एक रहस्य इसमें प्रतिभा को एक रहस्य की तरह सुलझता हुआ दिखाया गया है।

उनकी प्रमुख रचनाएं 'फन विद नंबर्स', 'एस्ट्रोलजी फॉर यू', 'फजल्स टू पजल्स यू', 'मैचब्लीट' आदि हैं। 1969 में फिलिपिन्स विश्वविद्यालय ने उन्हें 'मोस्ट डिस्टिंग्विश्ड वुमन ऑफ दी इयर' का दर्जा देकर सम्मानित किया। 1988 में वाशिंग्टन डीसी ने उन्हें 'रामानुजम गणित ज्ञाता' का पुरस्कार दिया। शकुंतला देवी 1980 में लोकसभा चुनाव में स्वतंत्र रूप से दक्षिण बॉम्बे और आन्ध्र प्रदेश के मेदक से इंदिरा गाँधी के खिलाफ खड़ी हुईं लेकिन वे चुनाव में हार गईं। गणित में अगणित प्रतिभा की धनी शकुंतला देवी की मृत्यु 83 साल की उम्र में 21 अप्रैल, 2013 को बेंगलूरु के एक अस्पताल में किडनी और दिल में भारी कमजोरी होने की वजह से हुई। उनके 84वें जन्मदिन के अवसर पर गूगल ने अपने डूडल को इनके नाम पर करते हुए सम्मानित किया। गूगल खोलने पर शकुंतला देवी के मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ डिजिटल नंबर्स में गूगल लिखा आता है। ऐसी पहचान पाने वाले बहुत कम भारतीयों में से शकुंतला देवी एक हैं। शकुंतला देवी पर एक बॉलीवुड फिल्म बनाई गई है, जो गणितीय प्रतिभा (मानव कंप्यूटर) शकुंतला देवी के जीवन पर आधारित है। फिल्म का निर्देशन अनु मेनन ने किया है, जिसमें विद्या बालन ने शकुंतला देवी का किरदार निभाया है।

कविता

कृतज्ञता

स्वीटी राज
अधिकारी
सीपीएच, पटना

जिसने जीवन दिया उसको ही भूल गए, ये कैसी कृतज्ञता है।
खड़े होना चलना बोलना जिसने सिखाया
उसकी लाठी न बन सके ये कैसी कृतज्ञता है।
रोटी का पहला निवाला जिसने खिलाया,
उसकी थाली आज खाली है, ये कैसी कृतज्ञता है।
हल्की चोट पर जो दौड़ आते थे थामने को
आज अकेले ठोकर खा रहे उसके पाँव, ये कैसी कृतज्ञता है।
पहला शब्द बोलना-समझना जिसने सिखाया था
आज तरसते हैं अपनों के बोल सुनने को, ये कैसी कृतज्ञता है।
हल्के बुखार पर पूरे घर को सर पर उठा लिया था जिसने
आज अकेले दवा का पैकेट खोल रहीं काँपती काया,
ये कैसी कृतज्ञता है।
स्कूल कालेज जाने की होड़ में, सुबह उठकर सब संभाला था जिसने
आज अकेले बैठे आँगन निहारती हैं वही आंखे, ये कैसी कृतज्ञता है।
दिन रात, सुख-चैन सब बिसार कर तुम्हारे नन्हें मुन्नों को
संभाला था जिसने
आज टकटकी लगाए बच्चों के बोल सुनने को तरस रही,
ये कैसी कृतज्ञता है।

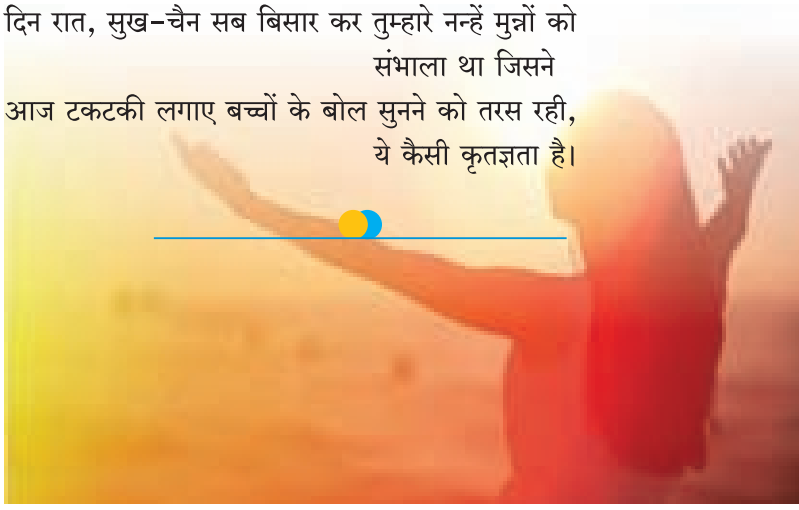

आलेख

नारी : एक जीवंत समाज का आधार

अश्वनी कुमार गुप्ता
अधिकारी
प्र. का., बेंगलूरु

भारत में नारी को देवी का रूप माना गया है। कहा जाता है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। प्राचीन काल से ही यहां महिलाओं को समाज में विशिष्ट आदर एवं सम्मान दिया जाता है। भारत वह देश है जहां महिलाओं की सुरक्षा और इज्जत का खास ख्याल रखा जाता है। अगर हम इक्कीसवीं सदी की बात करें तो यहां की महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर काम कर रही हैं। हमारे देश में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार है। महिलाएं देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं तथा विकास में भी बराबर की भागीदार हैं। आज के युग में महिला, पुरुषों के साथ ही नहीं बल्कि उनसे दो कदम आगे निकल चुकी हैं। अगर हम महिलाओं को समाज संयोजक की संज्ञा दें तो गलत नहीं होगा। महिलाओं के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। भारतीय संविधान के अनुसार महिलाओं को भी पुरुषों के समान जीवन जीने का हक है। आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसमें महिलाओं की प्रतिभागिता और प्रतिनिधित्व न हो।

लेकिन दिन-प्रतिदिन महिलाओं के प्रति अपराध और हिंसा का बढ़ना एक चिंता का विषय है। थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन की ओर से जारी किए गए एक सर्वे में भारत को पूरी दुनिया में महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित देश माना गया है। महिलाओं के प्रति यौन हिंसा, मानव तस्करी और यौन व्यापार में ढ़केले जाने के आधार पर भारत को महिलाओं के लिए खतरनाक बताया गया है। इस सर्वे के अनुसार महिलाओं के मुद्दे पर युद्धग्रस्त अफगानिस्तान और सीरिया क्रमशः दूसरे और तीसरे, सोमालिया चौथे और सउदी अरब पांचवें स्थान पर हैं। इस सर्वे में 193 देशों को शामिल किया गया था। इससे यह साबित होता है कि 2012 में दिल्ली में एक चलती बस में हुए सामूहिक बलात्कार के बाद अभी तक महिलाओं की सुरक्षा को लेकर पर्याप्त उपाय नहीं किए गए हैं। 2012 में हुए निर्भया कांड के बाद महिलाओं की सुरक्षा और उनके खिलाफ होने वाली हिंसा देश के लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया था।

अब प्रश्न यह है कि क्या भारत, सच में महिलाओं के लिए सुरक्षित स्थान नहीं है?

पाश्चात्य देशों का भारत के प्रति रुख कभी सकारात्मक नहीं रहा है। आज भारत, जहां एक ओर विकास की लम्बी छलांग लगा रहा है वहीं दूसरी ओर कुछ विदेशी संस्थान दूर बैठ कर भारत के ऊपर नकारात्मक रिपोर्ट बना रहे हैं। कुछ घटनाएं वाकई में शर्मनाक हैं लेकिन उन घटनाओं (जो कि नहीं होनी चाहिए थी) के लिए पूरे देश को ज़िम्मेदार तो नहीं ठहराया जा सकता है। इस रिपोर्ट में अपराधिक

घटनाओं में वृद्धि इसलिए दिखाई दे रही है क्योंकि रिपोर्ट बनाने से पहले उनके द्वारा इस प्रकार का माहौल बनाया जाता है। जहां तक बात आती है महिलाओं की सुरक्षा की, तो पिछले कुछ वर्षों में भारत ने अभूतपूर्व निर्णयों से महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई प्रबंध किए हैं। ऐसे में भारत के प्रति ऐसी नकारात्मक रिपोर्ट भारत में खबर बनाने की विदेशी संस्थाओं की सोची समझी साजिश के अलावा कुछ और प्रतीत नहीं होती। भारत में महिलाएं पहले की अपेक्षा अधिक सुरक्षित हैं। आज जहां महिलाएं नई ऊंचाइयों को छू रहीं हैं वहीं दूसरी ओर शीर्ष पदों में भी देश का गौरव बढ़ा रहीं हैं।

अगर मैं व्यक्तिगत रूप से कहूं तो मैं खुद एक ऐसे राज्य से संबंध रखता हूँ जहां की संस्कृति में ही महिलाओं का सम्मान कूट-कूट कर भरा है। वहां महिलाओं को दुर्गा का स्वरूप समझा जाता है। ये धारणा भी है महिलाएं नर्मदिली से अगर परिवार का पालन-पोषण कर सकती हैं तो वो आवश्यकता पड़ने पर दुर्गा का रूप धारण कर दुष्टों का विनाश भी कर सकती हैं।

देश में महिलाओं के प्रति खराब होते माहौल को बदलने की ज़िम्मेदारी सिर्फ सरकार की ही नहीं अपितु आम आदमी की भी है। हम सभी को आगे आकर महिला सुरक्षा की लड़ाई में महिलाओं का साथ देना होगा तभी देश की मातृ शक्ति सिर उठा कर शान से चल सकेगी। एक महिला की सहनशीलता और धैर्य एक पुरुष की अपेक्षा अधिक होती है। अब महिलाओं को समझना होगा कि आज समाज में उनकी दयनीय स्थिति समाज में चली आ रही परम्पराओं का परिणाम है। इन परम्पराओं को बदलने का बीड़ा स्वयं महिलाओं को ही उठाना होगा।

कविता

मेरा संघर्ष

मो. जुहैब
अधिकारी
एमएसएमई सुलभ, अयोध्या

अभी नन्हीं आंखे खोली हैं मुट्ठियों को भींच के,
रो रही है माँ मेरे बेटी होने का सोच के।

अभी पालने में हूँ कुछ भी नहीं जानती,
माँ की गोद के सिवा कुछ नहीं पहचानती।

नन्हें कदम रखें हैं जमीन पर चलने को,
मन मचल रहा आसमान में उड़ने को।

पापा की परी बन जाऊं कैसे, ये सोचती हूँ,
पर पापा के गुस्से को देख कर डरती हूँ।

अब स्कूल जाने को बस्ता उठाया है,
दुनिया जानने को अब कदम बढ़ाया है।

बड़े हो कर बहुत कुछ बनने की ठानी है,
किया फैसला कि अपनी किस्मत खुद बनानी है।

माना ये रास्ता आसान नहीं मेरे खातिर,
लेकिन मुश्किलों से पार पाने में हूँ माहिर।

हर कठिनाई को मैं मुस्कुरा के झेलूंगी,
मेरी राह में आने वाले हर खतरों से खेलूंगी।

दिखा दूंगी, मैं किसी से कम नहीं हरगिज़,
कर ले चाहे ज़माने जितनी भी साज़िश।

लंबी रात है और सदियों का अंधेरा है,
जाग रहा है समाज, उम्मीद का सवेरा है।

अभी वक्त बदला है, दौर भी बदलेगा,
वर्तमान है कठिन पर भविष्य जरूर संभलेगा।

अभी शुरुवात है, ये मेरे सपनों की जुबानी है,
मेरे संघर्ष की कहानी जन-जन को सुनानी है।

आलेख

मलयालम की महिला कहानीकार – एक परिचय

आर्या विश्वनाथ
वरिष्ठ प्रबंधक
प्र. का., बेंगलूरु

स्त्री अपने व्यक्तित्व को बनाए रखने के लिए जो प्रयास करती है, उन प्रयासों को नारी अस्मिता कहते हैं। जब एक नारी इस प्रकार कहती है तो उसके सामने प्रश्न आ जाते हैं कि कैसे प्रयास? क्यों प्रयास कर रही हो? हमने तो स्त्रियों के लिए आरक्षण भी दिया है, महिलाओं को काम करने की स्वतंत्रता दी है, यहाँ तक की समाज में अपनी पहचान बनाने की स्वतंत्रता भी दी है। लेकिन मुझे अभी तक यह समझ में नहीं आया है कि मुझे स्वतंत्रता भीख में देने वाले आप कौन है ? नारी उत्पीड़न या पुरुषवर्चस्ववादी समाज की बात करते हैं तो अनजान बनके पूछते हैं ये क्या चीज़ है? तो मैं नारीवाद से ही शुरूआत करती हूँ। नारी ने अपनी अस्मिता और अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जो संघर्ष शुरू किया है, उसका सिद्धांत के रूप में जो प्रतिफलन हुआ है वह है नारीवाद। नारीवाद का संबंध नारी जीवन की समस्याओं एवं उसके सुझावों से है। नारीवाद को परिभाषित करने का प्रयास 'इन साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' में इस प्रकार है यह एक ऐसा आंदोलन है जो नारी को पुरुष के समान सम्मान और अधिकार प्रदान करेगा और अपनी जीविका और जीवन पद्धति के संबंध में स्वाधीन रूप से निर्णय देने का अधिकार देगा। नारीवाद का आरंभ या उदय अमेरिका में हुआ और 1960 के पश्चात इसका प्रचार ज़ोरों से चला। भारत जैसे राष्ट्रों में भी इस आंदोलन ने ज़ोर पकड़ा।

कुछ लोग नारीवादी लेखन को पुरुष से स्त्री को दूर करने के लिए या पुरुष के ऊपर स्त्री को प्रतिष्ठित करने का लेखन कार्य मानते हैं। लेकिन सच तो यह है कि नारीवादी लेखन का लक्ष्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जो नारी को घर की चार दीवारों से मुक्त करता है। स्त्रीवादी लेखन पुरुष विरोधी संघर्ष नहीं है वह तो मानसिक, सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक धरातल पर नारी को पुरुष के समान स्थान देने का प्रयास है। नारीवादी लेखन स्त्री की विभिन्न समस्याओं पर विचार करके उन समस्याओं से उसे मुक्त करने की कोशिश में है। नारी इतने सालों के बाद भी किसी की परछाई बनकर रह जाती है। परछाई की आवाज़ नहीं होती है। स्त्रियों से बस यही निवेदन है कि किसी और की परछाई बनकर न रहें, उसे अपने व्यक्तित्व को पहचानना है। पुराने ज़माने की तुलना में आज की नारी शिक्षित है, उसे अपने अधिकारों के संबंध में जानकारी है, उसके पास अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों से लड़ने की ताकत है। विभिन्न साहित्यिक विधाओं में नारी की इस लड़ाई को दिखाने का प्रयास हुआ है।

मलयालम की कहानीकारों ने समाज की यथार्थता को बखूबी उकेरा है। मलयालम की प्रथम महिला कहानीकार है एस सरस्वती बाई। उनका सन 1911 में 'भाषा पोषिणी' पत्रिका में प्रकाशित तलच्चोरिल्लात्त स्त्रीकल नामक कहानी में पुरुष साहित्यकारों की महिला साहित्यकारों के प्रति जो सोच है, उसे बदलने की आवश्यकता को दर्शाती है। मलयालम की अन्य एक महिला कहानीकार हैं बी.के अम्माल। उनकी ओरु पोडिक्कै नामक कहानी में एक पति के अत्याचार से बचने की कोशिश करती नारी और उन कोशिशों को अंजाम देने के लिए नायिका का साथ दे रहे पुरुष को दिखाया है। मलयालम साहित्यिक क्षेत्र के सबसे मशहूर साहित्यकार है ललितांबिका अंतर्जनम। ललितांबिका अंतर्जनम को साहित्यिक क्षेत्र में आने के लिए कई मुश्किलों को झेलना पड़ा। समाज में नारियों के प्रति हो रहे ऊँच–नीच, भेद – भाव को उन्होंने अपनी रचनाओं में दिखाया है। उनकी बहु चर्चित कहानी यात्रयुडे अवसानम में एक युवा विधवा से शादी करने का साहस दिखाने वाले एक ब्राह्मण युवक को दर्शाया है। उनकी प्रसिद्ध कहानी प्रतिकार देवता में पुरुष वर्चस्ववादी समाज के सामने आवाज़ उठाती कुरियेडत्तु तात्री नामक महिला पात्र को बखूबी दर्शाया है।

स्वतंत्रता के पश्चात भी मलयालम की कई महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में नारी शोषण के खिलाफ अपनी लेखनी चलायी है। उनमें से कुछ कहानीकार हैं माधविक्कुट्टि, पी वत्सला, सारा

जोसफ, ग्रेसी, चंद्रमति, मानसी आदि। माधविक्कुट्टि ने कडल, मयूरम, कोलाड, पीडितरुडे कथकल, प्रभात, वेनल ओषिवु आदि कहानियों में समाज के विभिन्न स्तरों की महिलाओं को अपनी कहानी का विषय बनाया है। उनकी बहु चर्चित कहानी कोलाड में घर गृहस्थी में फंसी हुई एक नायिका को दर्शाया गया है। वह एक गृहणी / नौकरानी के पेशे से परे सम्मान चाहती थी। एक गृहणी के मानसिक द्वंद्वों को कहानीकार ने इस कहानी में दिखाया है। पी वत्सला ने 'तिरक्किल अल्पम स्थलम', 'पेंपी', 'अनिक्कोरन चटोपाध्याय', 'उच्चयुडे निषल', 'कलंकम' आदि बहु चर्चित कहानियों की रचना की है। उनकी बहु चर्चित कहानी 'पेंपी' में आदिवासी स्त्री को प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में समाज के उच्च वर्ग के लोगों द्वारा आदिवासी लोगों पर होते अत्याचारों को दिखाया गया है। इस कहानी के मुख्य पात्र पेंपी को जब पता चलता है कि उसके साथ धोखा हुआ है तो वह कुछ क्षण के लिए भी वहाँ नहीं रुकती है। यह एक नारी का ही नहीं बल्कि वर्चस्ववादी समाज द्वारा उपेक्षित एकवर्ग का विरोध है।

मलयालम साहित्य की प्रिय कहानीकार हैं सारा जोसफ। स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं को खुबसूरती के साथ उन्होंने अपनी कहानियों में दर्शाया है। 'मनसिन्डे ती मात्रम', 'काडीन्डे संगीतम', 'निलावु अरियुन्नु', 'काडित कंडायो कांता' आदि उनकी चर्चित कहानी संकलन है। 1990 में चर्चित उनकी कहानी 'पापत्तरा' ने उन्हें नारीवादी लेखिकाओं में एक अग्रणी स्थान प्रदान किया है। इस कहानी में एक माँ की मानसिकता को चित्रित किया गया है। लगातार वह बच्चियों को जन्म देती है लेकिन उन्हें लाड-प्यार करने का मौका नहीं मिलता है क्योंकि भारत के कई परिवारों में अभी भी बच्चियों को जन्म लेने का अधिकार नहीं है। लेकिन इस कहानी की नायिका अंत में फैसला लेती है कि वह इस बार ऐसा नहीं होने देगी। वह प्रतिज्ञा लेती है कि वह बच्ची को ऐसे एक गांव लेकर जाएगी जहाँ नारी को सम्मान मिलता हो।

मलयालम की एक चर्चित कहानीकार हैं ग्रेसी। उन्होंने अपनी कहानियों में नारी को आवाज़ देने की कोशिश की है। नरक वातिल, भ्रांतन पूक्कलम, रंड स्वप्रदर्शिनिकल, वषिक्कण्णु आदि उनके चर्चित कहानी संग्रह हैं। उनकी एक चर्चित कहानी है 'शुभं' इस कहानी में त्यौहारों के समय में या भीड़ में पुरुषों द्वारा नारियों पर करते छेड़-छाड़ और उससे मानसिक रूप से अस्वस्थ नारी को दर्शाया गया है। सिनेमा में भी इस प्रकार के कार्यों को यानि पुरुष द्वारा नारियों पर व्यंग्य करना, उनको स्पर्श करना 'हीरोयिसम' के रूप में दिखाया जाता है। लेकिन जो नारी इन अत्याचारों से गुज़रती है उसे कई तरह के मानसिक द्वंद्व से भी गुज़रना पड़ता है। इस कहानी की नायिका को जब कैंसर के कारण

उस अंग को, जिसपर मर्द ने स्पर्श किया था, अपने शरीर से अलग करना पड़ता है तो उसे शांति का अनुभव होता है। मानसिक द्वंद्व से गुज़रती नारी के विचारों को बखूबी उतारने में कहानीकार पूरी तरह से सफल हुई हैं।

मलयालम की एक अन्य प्रमुख कहानीकार हैं चंद्रमति। उनकी 'आर्यावर्तनम', 'देवीग्रामं', 'स्वयं', 'दैवं स्वर्गत्तिल', 'तट्टरकुटियिले विग्रहंगल' आदि बहु चर्चित कहानी संग्रह हैं। उनकी चर्चित कहानी 'निलत्तिलपोरु' एवं 'अमलयुडे मोचनम' आदि कहानियों में नौकरीपेशा नारी के प्रति समाज या पुरुष के नज़रिए को दर्शाया गया है। 'निलत्तिलपोरु' कहानी में पति यह चाहता है कि पत्नी नौकरी को शौक के रूप में ही ले। नौकरी पेशा नारी को एक सर्कस के खिलाड़ी जैसे कार्य करना पड़ता है। इसे एक पहिए के रूप में अपना परिवार और नौकरी का संतुलन कर कार्य करना पड़ता है। एक नौकरीपेशा नारी की मात्र बेबसी को ही इस कहानी में न दिखाकर अपने आकांक्षाओं को अपने पति को समझाने में सफल महिला को चंद्रमति ने इस कहानी में दिखाया है। उनकी 'अमलयुडे मोचनम' कहानी में नारी समाज में किस प्रकार बंधित है, इसी को दर्शाया है। इस कहानी में उसको धोखा देनेवाला पति तलाक देने की स्वतंत्रता तक नहीं देता है। लेकिन वह उस पुरुष के साथ रहने के लिए साफ-साफ इनकार करती है जो कभी उसके या बच्चों के बारे में सोचता भी नहीं है। अमला अपने पैरों पर खड़ी थी इसलिए वह समाज के विरोध में जाकर अपने लिए फैसला ले पायी थी। इस कहानी के द्वारा कहानीकार ने एक नारी को शिक्षित एवं अपने पैरों पर खड़े होने की आवश्यकता को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है क्योंकि स्वावलंबन हमेशा व्यक्ति को प्रगति की ओर ले जाता है।

मलयालम की एक और चर्चित कहानीकार हैं मानसी। मंजिल पक्षी, चांदी के बर्तन आदि उनकी प्रमुख कहानी संकलन है। मानसी की एक

चर्चित कहानी है 'अक्षरतेट्टुकल'। इस कहानी की नायिका उमा एक अकेली माँ है। वह अपने बच्चों के नाम के साथ खुद का नाम जोड़ना चाहती है। उसने ही अपने बच्चों का पालन पोषण किया था। इस कार्य में न उसके पति ने या न समाज ने उसका साथ दिया था। यह कहानी एक अकेली माँ की लड़ाई को दिखाती है। मलयालम की अन्य एक महिला कहानीकार हैं अषिता। अषिता की 'उमा' नामक कहानी में ससुराल में एक नारी के साथ होते अत्याचारों को दर्शाया गया है। उनकी 'चतुरंगम' कहानी में अपनी इज्जत के लिए लड़ती नारी को दर्शाया गया है। इस कहानी की नायिका अपनी ज़िंदगी का फैसला किसी और के हाथों में देना नहीं चाहती है। वह खुद इसकी ज़िम्मेदारी लेती है और इस कार्य में सफल भी होती है। मलयालम की प्रसिद्ध कहानीकार बी.एस. सुहरा ने नारी जीवन के पहलुओं को बखूबी से अपनी कहानियों में दर्शाया है। उनकी एक प्रसिद्ध कहानी है 'भ्रांत'। इस कहानी में नायिका एक दिन बिस्तर से सुबह नहीं उठती है और सुबह का नाश्ता नहीं बनाती है। वह सोचती है कि वह गृहणी के जीवन में से कुछ घंटों के लिए छुट्टी ले। लेकिन इस पर परिवार वाले उसे पागल ठहराते हैं और अस्पताल में भर्ती करवा देते हैं। यह कहानी नारी की गृहणी की भूमिका की मुश्किलों भरी ज़िंदगी की एक झलक दिखाती है।

मलयालम की महिला कहानीकार प्रिया एस की 'चंदेरियुडे चिरि' नामक कहानी में एक बूढी माँ चंदेरी को चित्रित किया है जो अपने बच्चों के लिए अपनी पूरी ज़िंदगी समर्पित कर देती है। भारतीय समाज में माँ को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है। एक अनपढ़ नारी के जीवन संघर्ष को एक छोटी सी कहानी में प्रिया एस ने चित्रित किया है। इसके अलावा मलयालम के अन्य कहानीकारों ने भी नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपनी कहानियों में चित्रित किया है। गीता हिरण्यन की 'असंघटिता', के आर मीरा की 'ओर्मयुडे न्जरंबुकल', इंदु मेनोन की 'लेसबियन पशु', के.पी सुधीरा की 'उमयुडे मकन' आदि कहानियों में समकालीन युग में महिला के सामने आती मुश्किलों को आगे बढ़ने के लिए उसके प्रयत्नों को उजागर किया गया है।

पुरुष की तुलना में नारी का जीवन अधिक संघर्षमयी है। समाज में पुरुष की सोच या उसके शब्दों की स्वीकार्यता स्त्री से अधिक है। समाज के इस दोहरे नज़रिए को बदलने का स्त्री सदियों से प्रयत्न कर रही है। इस कार्य में कई महिलाएँ सफल भी हुई हैं। महिला साहित्यकारों ने उनके इन प्रयासों को अपनी कहानियों के द्वारा दर्शाया है। उन्होंने अपनी साहित्यिक रचनाओं द्वारा समाज में नारियों के लिए समानता की मांग़ की है। महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में अनपढ़, शिक्षित, गृहणी, नौकरीपेशा, दलित, उच्चवर्ग-निम्नवर्ग आदि नारियों को वाणी दी है। उनकी कहानियों में महिलाएँ एक ऐसा समाज चाहती हैं जहाँ वह अपनी इच्छा के अनुकूल जी सकें, जहाँ पर वह लड़कियों को जन्म दे सकें, नौकरी कर सकें। वह किसी का अधिकार छीनने का नहीं लेकिन अपने लिए समान जगह बनाने का प्रयास करती हैं। मलयालम की महिला कहानीकार इन प्रयासों को वाणी देने में सफल हुई हैं।

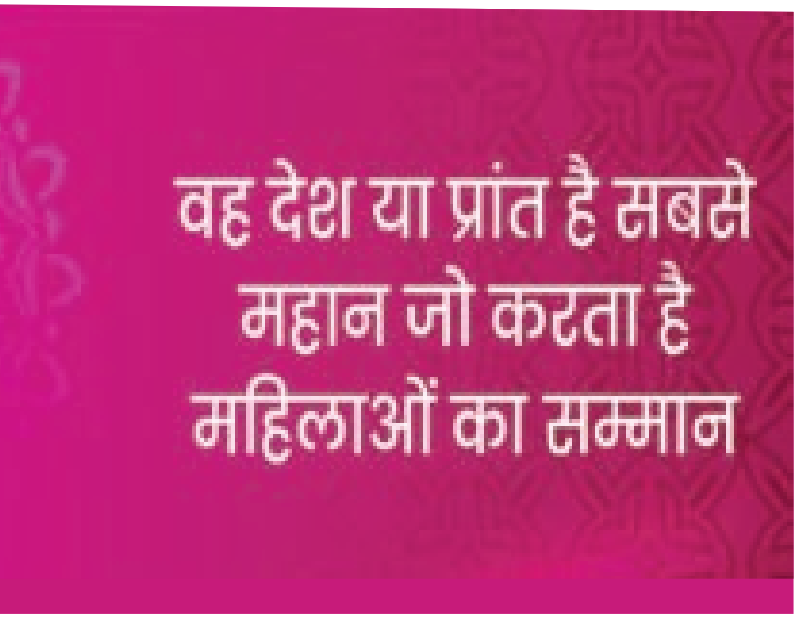

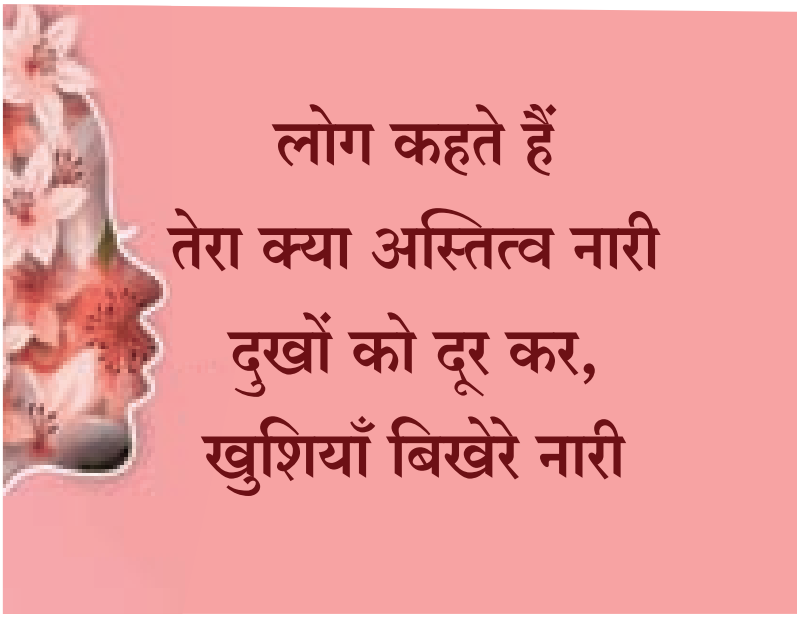

आलेख

काबिल

अर्चना
ग्राहक सेवा सहयोगी
जागमारा शाखा

हर दिन मेरा कार में आना जाना, हवेली में उठना बैठना, मेरा हाई फाई स्टेटस देख के उसने शायद मुझे अमीरों की लिस्ट में रख लिया था। रोज वहीं एक ही जगह में, मतलब मेरे घर के बगल में जो लाइट पोस्ट है, उसके नीचे, मैं उसे हमेशा देखती हूँ। सुबह 8 से शाम 8 तक उसकी ड्यूटी। भीख मांगने की ड्यूटी। मैं जब भी घर से निकलती हूँ, लाइट पोस्ट के पास मेरी गाड़ी धीरे होते ही वो भाग के आ जाता था और 'भगवान के नाम पर कुछ दे दो' बोल के गिड़गिड़ाता रहता था, पर उसका मांगना और मेरा न देना रोज़ का चलता था। मैं हमेशा से सोचती थी कि उसका भीख मांगना कैसे बंद करूं। उसको समझाने से वो समझेगा क्या। किसी और के सामने उसे बोलने को या डांटने को दिल नहीं करता था।

उस दिन मेरे घर से थोड़ी ही दूर मेरी गाड़ी खराब हो गई तो ड्राइवर को ठीक करने के लिए बोल के मैं पैदल आ रही थी। वो मुझे देखते ही रोज़ की तरह पास आ कर हाथ जोड़कर मांगने लगा। तरस आता था उस पर फिर भी मैं बोली, ये हवेली ये गाड़ी ये मेरा ड्रेसअप देख कर तुम क्या मुझे अमीर समझ रहे हो? पर मैं भी तुम्हारी तरह बेरोज़गार हूँ। तुम दूसरे के पैसों पे जीते हो और मैं अपने पापा के पैसों पे। हम दोनों में कुछ अंतर नहीं है, पर मैं कभी भीख नहीं मांगती हूं। मांगने से मुझे सख्त नफरत है।

मैंने उससे पूछा नहीं कि वो क्यों गरीब है। भीख क्यों मांग रहा है, पर इतना बोला, पर मैं रोजगार ढूंढने की कोशिश करती हूँ। पापा के ढ़ेर सारे पैसों का लालच नहीं है मुझे, मैं खुद कुछ करने के लिए पढ़ रही हूँ। हार नहीं मानी मैंने।

वो मेरी बातों पर हंसा और कहा, मैडम, हम बचपन से ही गरीबी देख रहे हैं। जिनके पास खाने के लिए एक निवाला नहीं होता, वो पढ़ाई कैसे करेगा। आप तो अमीर हो, बिना माँगे सब मिल जाता होगा। इसलिए इतनी बड़ी – बड़ी बातें कर रहे हो, पर मैं इस हालत में और इसी उम्र में भीख मांग कर मेरे परिवार को पालता हूँ।

मेरी आंखें भर आईं। बिना कुछ बोले उसको बस देखती ही रह गई। फिर बोली, पहले तो सब पढ़ाई में हीं ध्यान देते थे। दसवीं पास नहीं होगी तो कॉलेज नहीं मिलेगा। ग्रेजुएशन नहीं होगी तो नौकरी नहीं मिलेगी। इंजीनियरिंग हो तो अच्छी सैलरी आयेगी, पर अब तो एक पांच साल का बच्चा एमबीए कर रहा है। आठ साल में कोई एवरेस्ट चढ़ कर नाम कमा रहा है। कोई ग्यारह साल में पुलिस बन गया तो कोई अपना हुनर दिखा के पैसा कमा रहा है। सबसे बड़ी बात है लालच। मन में इच्छा हो और करने का सामर्थ हो, तो कोई ऐसी गरीबी में नहीं जिएगा। तुम ही सोचो तुम्हारे अंदर के हुनर क्या हैं और पहचानो अपने आप को।

वो बच्चा चुप ही खड़ा था। सर नीचे किए, कुछ सोच रहा था शायद मेरी बातों को गौर नहीं किया या फिर अपने अंदर के हुनर को ढूंढ़ रहा था। मैंने मेरे पर्स में से एक दो हजार रुपये का नोट निकाला और उसको देकर बोली, ये मेरे पापा के पैसे हैं। मैं खुद कुछ हासिल करने के लिए लाई थी। इसको ऐसे बेकार में खर्च मत कर देना। सोचती हूँ तुम इसकी कीमत समझ पाओगे। वो ले नहीं रहा था। मैं ज़ोर से उसको पकड़ा कर घर लौट आई।

उस दिन के बाद मैंने कभी भी उस बच्चे को वहाँ नहीं देखा। सोचा, शायद उसे बुरा लग गया, शायद नाराज़ हो कर वो यहां से चला गया या फिर दूसरी किसी जगह पर भीख मांग रहा होगा। ऐसे कुछ दिन तक मन ही मन में ढूंढा उसको। फिर समय के साथ उसे भुला दिया। कुछ महीने बाद मेरा रिज़ल्ट आया। मैंने जॉब के लिए अप्लाई किया था और मैं पास हो गई। ज्वाइनिंग अगले हफ्ते थी, मैं बहुत खुश थी। सोच रही थी अगर उसके साथ कभी मुलाकात हुई तो बताऊंगी की मैं सक्षम हो गई हूँ, पर वो तो लापता था।

अगले दिन अखबार में उसकी फोटो देख कर मैं हैरान हो गई। क्या ये सच है? या फिर मेरा कोई भ्रम। मैं सच में मेरी नौकरी लगने की खुशी

काबिल बनने की प्यास दिन गुज़रने नहीं देती,
तारीफ की भूख रात ढलने नहीं देती।

से भी ज़्यादा खुश हुई। हेड लाइन में लिखा हुआ था 'गटर में कमल'। वो बच्चा वही लाइट पोस्ट के नीचे बैठ के कभी-कभी बंसी बजाता था। मैं भी कई बार सुन कर भावुक हुई हूँ, और उसी प्रतिभा की वजह से और खुद की कोशिश से वो आज संगीत नृत्य अकेडमी का एक प्रतिष्ठित बंसी वादक बन गया। खुद की गरीबी को पीछे छोड़ कर वो आज यहां पे खड़ा हुआ है। बड़े-बड़े बंसी वादक के बीच में उसने अपनी जगह बना ली है। मैं खुशी से रो पड़ी। उसकी तारीफ करने के लिए मैं भावुक हो कर लाइट पोस्ट तक दौड़ चली और वो सच में वहां पर था मेरे इंतज़ार में। वो गरीबी की निशानी उसके चेहरे से साफ उतर चुकी थी। अच्छे कपड़े पहन कर, एक हाथ में बंसी और दूसरे में मिठाई का डब्बा लेके खड़ा हुआ था। खुशी से बोल रहा था, मैं अपने हुनर को पहचान नहीं पाया जितना आप पहचान पाईं। दो हज़ार रुपए लेकर मैं अपने परिवार की भूख मिटा सकता था पर आपके पैसे को ऐसे बरबाद करने को मन नहीं किया। मुझे भी कुछ करना था और आज मैं सफल हो गया। ये जो देख रहे हैं ना, ये ड्रेस, ये बंसी, ये मिठाई, खुद मैं भी, जो भी है। बस आपका दिया हुआ है।

उसके देने से पहले मैंने खुद उसके हाथों से मिठाई ले कर खाई। उसके कंधे पर हाथ रख कर थोड़ी देर उसको देखा मैंने। उसको बोली, आप तो इतने आगे निकल गए, मैं और मेरी जॉब आपके सामने कुछ भी नहीं हैं। मेरी नौकरी के लिए मेरे ऑफिस के लोग ही मुझे पहचानेंगे पर आपको तो पूरे देश ने पहचान लिया। हम दोनों खुशी से रो रहे थे। दूर से पापा की आवाज़ सुनाई दे रही थी, ये गरीबों के मुंह मत लगना, ये भरोसे के लायक नहीं है। पर मुझे थोड़ा-सा भी फरक नहीं पड़ रहा था।

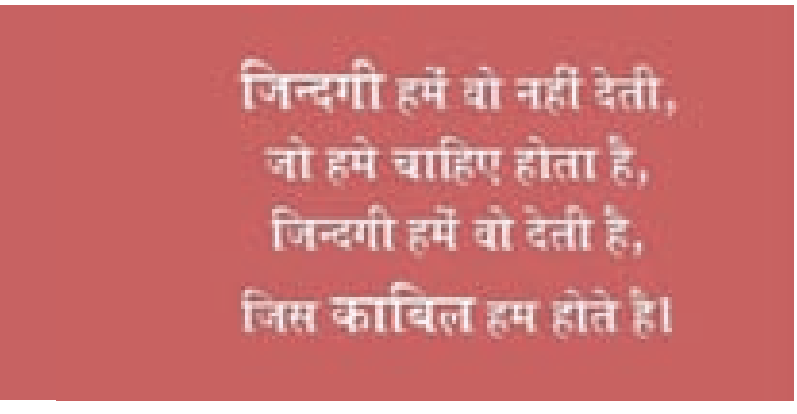

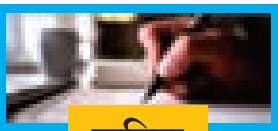

कविता

अपने घर की बेटी...

प्रमोद रंजन
प्रबंधक
बेतिया शाखा

रातों के अँधेरों में,
छोटी सी जुगनु हो तुम।
खुले आसमान में,
उड़ती हुई चुरुंगुन हो तुम।

कांटो के बीच में,
प्यारा-सा गुलाब हो तुम।
रेगिस्तान की मिट्टी में,
पानी से भरा तालाब हो तुम।

तुम अमावस के रात की
वो नन्ही सी दिया हो,
जो खुद जल के
दूसरों को रोशनी देती है।

जो दूसरों के बारे में सोचती है
जो खुद भूखा रहकर दूसरे को खिलाती है,
वो नन्ही सी जान,
अपने घर की बेटी कहलाती है।

कविता

नारी

प्रतीक सैनी
ग्राहक सेवा सहयोगी
गोगुंदा शाखा

दुनिया के चुनिंदा अलफाज़ों से बयान करता हूँ।
चलो आज उसके बेमतलब से कामों पे बात करता हूँ।
सुने होंगे बेशक तुमने ये नगमे नुक्कड़ मोहल्लों में।
मैं फिर भी याद दिलाने की कोशिश इक बार करता हूँ।।

क्यों दिन कोई भी याद नहीं जब वो गहरी सी सोई थी।
कब चाक चूल्हे से हल्की हुई कब फिर बर्तन में खोई थी।
लगता है रोज़ वो नपी तुली सी ही हंसी हंसती होगी।
लाज के परदों को हर रात समेट कर रखती होगी।।

ज़िंदगी उलझी है पर घर को सुलझा लेती है।
वो हर रोज़ दिल को बहला लेती है।
हां गुस्सा है कभी कभी गमगीन हो जाती है।
मायके की चिट्ठी से झट रंगीन हो जाती है।।

बचत की पूंजी में सपनों को समझा लेती है।
इतनी खोई है रिश्तों में कि खुद को उलझा लेती है।
झगड़ती है कभी पर हर बार गलत बन जाती है।
खुद सही हो बेशक पर घर को ही सही बताती है।।

हम चश्मदीद हैं पर शायद देखना नहीं चाहते।
उनके त्याग को ठीक से समझना नहीं चाहते।
तुम मानो ना मानो वो फिर भी निभाएगी।
मां है पत्नी है बेटी है वो हार कर भी जीत जाएगी।

कविता

खुद में मैं हूँ.....

निपुण टिग्गा
अधिकारी
अंचल कार्यालय, कोलकाता

मैं सब कुछ ढूंढ़ लेती हूँ
रुमाल, घड़ी,
मोज़े, किताबें,
पिन, सुई..
खोई हुई बालियां.
इधर उधर रखी गई चाबियां..
सब कुछ ...

हर एक चीज़
जो घर में किसी को नहीं मिली
मैंने ढूंढ़ ली।

पर मैं ढूंढ़ ही नहीं पा रहीं हूं
ख़ुद को ...
कि मैं मिल जाऊं किसी रोज़
अपने घर के किसी कोने में
और कहूं अपने आप से

देखो ...
अब मिल गई हो तुम
अब खोना नहीं।।

आलेख

जीज़ाबाई

मौसुमो मोहान्तो
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर - II

18वीं सदी में फ्रांस के सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था ''मुझे एक शिक्षित माँ दीजिए मैं आप से एक सभ्य राष्ट्र के निर्माण का वादा करता हूँ।'' एक माँ ही बच्चे के जीवन में प्रथम शिक्षक होती है। बच्चे के कोमल मन को माँ ही सबसे पहले स्पर्श करती है। सही ग़लत का अंतर करना एक बच्चा अपने माँ से ही प्रारंभिक जीवन में सीखता है। माँ एक बच्चे के जीवन में काफ़ी महत्वपूर्ण और प्रभावशाली भूमिका निभाती है। एक महिला की सोच विचार अपने साथ - साथ उसके आगे की पीढ़ियों का भी भाग्य निर्धारित करती है। इस महिला दिवस के अवसर पर हम स्मरण करते हैं ऐसी ही एक अनोखी महिला- राजमाता जीज़ाबाई शाहजीराजे भोंसले, जिन्होंने अपनी कोशिश और अदम्य साहस से एक साम्राज्य का भविष्य बदल डाला।

12 जनवरी स्वामी विवेकानंद की जयंती के रूप में मनाया जाता है, लेकिन बहुत कम लोग यह जानते हैं कि उसी दिन राजमाता जीज़ाबाई की भी जयंती है। जीज़ाबाई शाहजी भोंसले, मराठा राजा शिवाजी की माँ थी, जिस शिवाजी ने भारत के इतिहास में सबसे बड़े साम्राज्यों में से एक की स्थापना की थी। शिवाजी भोंसले जो छत्रपति शिवाजी महाराज के नाम से जाने जाते हैं, वे 17वीं शताब्दी में पश्चिमी भारत में मराठा साम्राज्य के संस्थापक थे। शिवाजी की माँ जीज़ाबाई ने उनके पालन-पोषण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वह जीज़ाबाई ही थीं जिन्होंने बचपन से ही शिवाजी के मन में राष्ट्रवादी गौरव की प्रबल भावना पैदा की। जीज़ाबाई की शिक्षा और मार्गदर्शन, दोनों ही चीज़ों ने शिवाजी के चरित्र को काफ़ी प्रभावित किया। इन सभी का प्रभाव शिवाजी महाराज की भविष्य के नेतृत्व में स्पष्ट है। शिवाजी महाराज को आज भी इतिहास में सबसे प्रभावशाली और मुगल साम्राज्य के ख़िलाफ़ प्रतिरोध में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति माना जाता है। जीज़ाबाई ही शिवाजी को एक महान नेता, योद्धा और राजा बनाने के पीछे मुख्य प्रेरणा थीं। जीज़ाबाई अपने गुणों, वीरता और दूरदर्शिता के लिए जानी जाती थीं, यह गुण उन्होंने अपने बेटे शिवाजी को भी दिए।

जीज़ाबाई ने शिवाजी को सबसे महान सम्राट के रूप में खड़ा करने का निर्णय लिया था। उन्होंने शिवाजी के लिए एक स्वप्न देखा था और उसी स्वप्न को साकार करने के लिए काफ़ी प्रयत्न भी किए थे। शिवाजी की शिक्षा और नैतिकता की जड़ की स्थापना जीज़ाबाई से हुई थी। इसीलिए उन्होंने शिवाजी को कई सकारात्मक नैतिक मूल्य सिखाए। उन में से तीन प्रमुख नैतिक मूल कथा जो शिवाजी के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, वे थे:

अपने बच्चों या कनिष्ठों को कभी भी अपनी अपरियाप्तता या डर का एहसास न कराएं।

भय की कल्पना ही हमें ज़्यादा भयभीत करवाती है। जीज़ाबाई ने सदैव शिवाजी को निडर होकर कठिनाइयों का डट के सामना करना सिखाया। उन्होंने शिवाजी को काफ़ी कम उम्र से ही रामायण, महाभारत जैसी पुस्तकों का अध्ययन करवाया था। उस के साथ-साथ उन्हें नैतिक सिद्धांतों और चरित्र गुणों के बारे में शिक्षित किया था। जीज़ाबाई ने शिवाजी का बचपन से पालन पोषण सभी संस्कारों के साथ किया था जिससे कि वे भविष्य में सकुशल राज्य का नेतृत्व कर सकें।

सतर्क और चौकस रहें और आवश्यक विशेषज्ञता वाली रणनीति बनाएं।

किसी भी युद्ध को जीतने के लिए आवश्यक रणनीति ही पहला पड़ाव है। परिवर्तन ही जीवन का स्थायी सच है। जीज़ाबाई ने शिवाजी को हमेशा सतर्क और चौकस रहने की सीख दी थी। यह एक भावी सम्राट

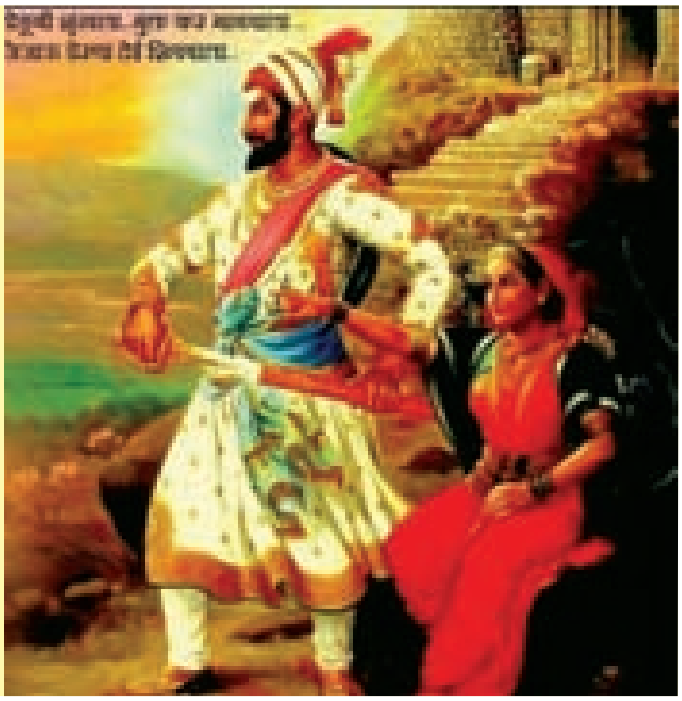

के लिए अतिआवश्यक गुण है। एक कुशल रणनीति महान अवसर प्रदान कर सकती है। आने वाली हर परिस्थितियों के लिए पहले से प्रस्तुत रहना एक कुशल शासक का लक्षण है। न केवल उन्हें अपनी बल्कि अपने आस-पास की गतिविधियों पर भी चौकस रहने की सीख मिली थी जो निर्णय लेने की क्षमता को भी बेहतर बनाता है।

महिलाओं का सम्मान करना।

जीज़ाबाई ने बचपन से ही शिवाजी को सदाचार, सहजता तथा महिलाओं का सम्मान करने की सीख देकर बड़ा किया था। इसलिए शिवाजी महिलाओं के ख़िलाफ़ किसी भी प्रकार के उत्पीड़न, अपमान और अन्याय के ख़िलाफ़ थे। महाराज शिवाजी सदैव महिलाओं का सम्मान करते थे, यहाँ तक कि वह अपनी सेना से भी दुश्मन की महिलाओं के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करने को कहते थे।

जीज़ाबाई ने शिवाजी का पालन-पोषण एक ऐसे युग में किया जहां महिलाओं को उतनी आज़ादी नहीं थी जो आज की महिलाओं को है। शिवाजी एक ऐसे पुरुष के रूप में विकसित हुए जो हर महिला के साथ सम्मान के साथ व्यवहार करते थे। शिवाजी ने महिलाओं की सुरक्षा को हमेशा ही सर्वोच्च प्राथमिकता दिया।

एक माँ के रूप में जीज़ाबाई ने अपने बेटे शिवाजी को बड़े सपने देखने और मराठाओं के लिए लड़ने के लिए हमेशा से ही प्रेरित किया था। चुनौतियों का सामना करना ना कि चुनौतियों से हार मानना। अनुकूल परिस्थितियों में भी उन्होंने अनुचित चीजों के ख़िलाफ़ डटके मुक़ाबला किया।

जीवन में परिवर्तन अपरिहार्य है। जीज़ाबाई की जीवन से यह प्रेरणा मिलती है कि हमें जीवन में शिकायतों पर ध्यान केंद्रित करने की बजाय नई स्थितियों में उम्मीद की किरण तलाशने का प्रयास करना चाहिए।

परिवर्तन को अपनाने से हमें व्यक्तिगत और सामूहिक सुधार के अवसरों को विकसित करने और खोजने की अनुमति मिलती है।

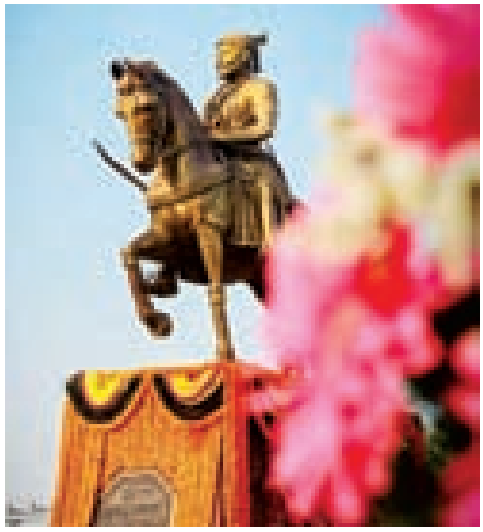

शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण है जिसे जीज़ाबाई ने पहचाना और महत्व भी दिया। शिक्षा में निवेश युवा पीढ़ी को सशक्त बनाता है, जिससे उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त होता है।

जीज़ाबाई के तारकीय गुण- जैसे उनका स्वतंत्र स्वभाव, नेतृत्व कौशल, बुराई के ख़िलाफ़ मज़बूती से खड़े रहने का अदम्य साहस, निर्णय लेने की क्षमता और सपनों के लिए जुनून सभी महिलाओं के लिए प्रेरणा है।

जीज़ाबाई भोंसले एक सकुशल राजमाता, महान महिला, सशक्त माँ और सभी के लिए एक आदर्श हैं। केवल 8 मार्च को महिला दिवस मानने से हम महिलाओं को सशक्त नहीं कर सकते हैं। इस के लिए आवश्यक है विचारों में बदलाव। यदि प्रत्येक बच्चे को जीज़ाबाई द्वारा शिवाजी को दी गई सीख (अत: महिलाओं का सदा सम्मान और सत्कार करना) को सिखाया जाए तो अगली पीढ़ी के विचार में बदलाव लाया जा सकता है। जिस प्रकार एक महिला अपने और अपने परिवार के भविष्य बदलने की क्षमता रखती है, एक सशक्त महिला पूरे देश का भाग्य बदल सकती है। यह व्यापक प्रभाव आने वाली पीढ़ियों के लिए बदलाव ला सकता है।

आलेख

यह कैसी आस्था?

अल्पना शर्मा
ग्राहक सेवा सहयोगी
मेरठ गंगानगर शाखा

मैं जल्दी से स्कूटी खड़ी कर, लगभग दौड़ते हुए दफ़्तर तक पहुँची। 9 बजकर 56 मिनट हो चुके थे और 10:00 बजे के बाद हाजिरी लगाने का मतलब था एक और स्पष्टीकरण पत्र का जवाब देना, पर माँ को यह सब कौन समझाए। नवरात्रि के दिन थे और पूजा, व्रत का सामान रखने में मुझे रोज़ ही देर हो रही थी। 9 बजकर 59 मिनट पर अँगूठा लगाकर मैंने शांति से बैग उतारकर रखा और अपनी सीट पर बैठ गई। कुछ अलग-सी ही बात होती है नवरात्रि के दिनों की। वो छोटे होते हुए दिन दूर से किसी पटाखे की आवाज़, रास्ते में एलेस्टोनिया के फूलों की खुशबू और हर घर से आती ज्योत की महक। इस साल माँ से लड़-लड़ कर मैंने नौ के नौ व्रत रखे थे। मैंने तो कई बार माँ से कहा कि व्रत तो इसलिए होता है कि हम संयम से खाएँ, पर माँ तब भी धीरे से कभी मखाने तो कभी मूँगफली, कभी केले तो कभी सूखे आलू मेरे साथ रख देती है। मैं तो कह-कहकर हार गई, पर माँ को भी कितना समझाऊँ। फिर यही सोच लेती हूँ कि आखिर एक माँ की श्रद्धा में मैंने व्रत रखे तो दूसरी की बात मान भी लेनी चाहिए। और यही सोच मेरी धार्मिक और आध्यात्मिक धारणा को मज़बूत करती है। जितना हम आध्यात्म को रोज़ की ज़िंदगी से जोड़ेंगे, उतना ही सँवर पाएंगे।

अरे मैडम, क्या है यह सब? ना सुबह समय से आना, ना शाम को समय से जाना। सुकुमार जी की व्यंग्यात्मक टोन ने सुबह-सुबह की मेरी सोच को बिगाड़ दिया।

मन में तो आया कि कह दूँ कि मैं हर घड़ी आपकी तरह घर के काम करने भी तो नहीं भागती। ना ही हर समय चाय और कुछ खाने-पीने को बाहर झाँकती हूँ। पर मैंने बहुत पहले ही समझ लिया था कि सुकुमार जी को कुछ कहने का मतलब है कीचड़ में पत्थर मारना। उनका हर बात पर व्यंग्य करना और लड़ने-झगड़ने की आदत से सहकर्मी तो क्या, ग्राहक भी परेशान थे। हर छोटी बात को उलझा देना और फिर दफ़्तर का माहौल बिगाड़ना जैसे उनका रोज़ का काम था। और कुछ कहो तो खुद ही पीड़ित बन रोने-गाने लगते। बस इसीलिए मैं उनसे कम ही बोलती हूँ। कभी जवाब दिया, कभी ना दिया, पर उनके हौंसले पस्त नहीं होते।

मैंने उनकी बात को अनसुना किया और अपने सामने पड़ी फ़ाइलों को देखने लगी। 10:30 बजे से भीड़ का जो ताँता शुरू हुआ, सिर उठाने का समय तक नहीं मिला। शाम तक मैं पूरी तरह थक चुकी थी, जिसका कुछ कारण तो मैं व्रत को भी मानती हूँ। कुछ भी कहो, पर व्रत से थकावट हो ही जाती है, सिर में थोड़ा दर्द भी था। बस घर जाकर एक प्याली चाय मिल जाए तो काम बन जाए। यही सोचकर मैं सामान समेटने लगी।

दफ़्तर बंद होने लगा। आज दफ़्तर की एक चाबी मैडम के पास थी और एक सुकुमार जी के पास। अभी हम सब दफ़्तर के बाहर ही खड़े थे कि मैडम के पास किसी सीनियर का फोन आ गया। शायद कोई ज़रूरी फाइल थी जो तभी मेल की जानी थी। हम भी खड़े होकर सुनने लगे। फोन बंद करके उन्होंने सुकुमार जी की तरफ़ देखकर कहा-

एक बार दफ़्तर खोलना पड़ेगा सुकुमार जी। एक मेल करना है।

उनकी त्योरियाँ चढ़ गईं। अब क्या मतलब है खोलने का। अब तो यह सुबह 10 बजे ही खुलेगा।

अरे सर बस एक मिनट लगेगा। चाबी मैं खुद घर पहुँचा दूँगी।

मैं चाबी छोड़ के जाऊँगा ही नहीं। जब दफ़्तर बंद हो गया तो हो गया। बात खत्म।

और सुकुमार जी बाइक स्टार्ट करके चले गए। सच कहूँ तो उनसे दफ़्तर खुलवाने का हमारा कोई हक़ भी नहीं था। पर शायद इंसानियत

में या इसलिए कि आखिर हम साथ बैठकर ही काम करते हैं, मुझे उनका यूँ मना कर देना, सही नहीं लगा। दफ्तर के सामने मैडम, मैं और हमारा चपरासी खड़े रहे।

थोड़ी देर बाद चपरासी ने बताया– अरे मैडम, आपके कहने का समय गलत था। इस समय तो इनको अपनी 'दवाई' चाहिए होती है। इस समय तो उन्हें फ़रिश्ते भी नहीं रोक सकते।

सुकुमार जी हफ्ते में दो दिन, मंगलवार और शनिवार के अलावा हर दिन नॉन–वेज खरीदने दफ़्तर से जल्दी निकल जाते थे। उसी समय उन्हें अपनी 'दवाई' चाहिए होती है। तभी मैडम के पास फिर फोन आ गया, जिस पर मैडम ने दफ़्तर ना खोल पाने पर अपनी असमर्थता जता दी। उन सीनियर ने मदद के लिए किसी और को भेजने की बात कही और वहीं थोड़ी देर रुकने को कहा। जब चपरासी को पता चला कि अभी और रुकना है तो कोई बहाना बनाकर वो भी निकल गया। इस समय शायद ये बता देना सही होगा कि हमारी अफ़सर बंगाली हैं। और बंगालियों के लिए नवरात्रि का बहुत महत्व होता है। हमारे फैमिली डॉक्टर भी बंगाली हैं। वो बताते रहते हैं कि बंगाल में नवरात्रि कितने जोर–शोर से मनाई जाती है। हर घर का एक पंडाल होता है, झाँकियाँ लगतीं हैं। लोग नौ के नौ दिन नए कपड़े पहनकर सड़कों पर घूमने निकलते हैं। उस दिन उन मैडम का निर्जल व्रत था। शायद शाम में कोई पूजा करके या मंदिर जाकर व्रत खोलना हो। पर अब वो संभव नहीं था।

थोड़ी देर खड़े रहकर वो वहीं सीढ़ियों पर बैठ गई। मैं भी उनके साथ बैठ गई। उन्होंने कई बार जाने को कहा भी, पर वो इंसानियत थी या सामान्य शिष्टाचार, मैं उन्हें अकेले छोड़कर नहीं जा पाई। हम दोनों लगभग डेढ़ घंटे वहीं बैठे रहे। शायद मेरे वहाँ होने से कुछ तो फ़र्क पड़ा ही होगा। जब वो साहब आए, तब भी काम खत्म करवाकर मैंने ही स्कूटी पर उन्हें घर छोड़ा। रास्ते भर सोचती आई कि हम 2 मिनट के काम में 2 घंटे खर्च करके आ रहे हैं।

नवरात्रि में हम देवी का पूजन करते हैं। भागवत पुराण में कथा है कि रंभ नामक एक असुर था, जिसने अग्निदेव की तपस्या करके एक पुत्र प्राप्त किया था। वह एक महिषी यानि भैंसे के रूप में उत्पन्न हुआ, इसलिए महिषासुर कहलाया। वह असुर, वरदान के कारण जब चाहे मनुष्य या भैंसे का रूप ले सकता था। ब्रह्माजी की तपस्या करके उसने यह वरदान पा लिया था कि कोई स्त्री ही उसका अंत कर सकती थी। इसलिए वह देवताओं के लिए अजेय था। शक्ति के मद में आकर उसने देवलोक पर अधिकार कर लिया। महिषासुर के शासन में देवता और मनुष्य भयभीत रहने लगे। तब देवी ने महिषासुर को युद्ध के लिए ललकारा। देवी और महिषासुर में नौ दिन तक महायुद्ध हुआ और

नवमी की रात्रि को दुर्गा माँ ने उसका वध कर दिया। उस समय से देवी को 'महिषासुरमर्दिनी' के नाम से जाना जाता है। तभी से माँ दुर्गा की शक्ति को समर्पित नवरात्रि का व्रत करते हुए 9 स्वरूपों की पूजा की जाती है।

भारत में शायद ही कोई घर होगा, जहाँ इस देवी पूजन को न किया जाता हो, तब भी प्रथा और वास्तविकता के अंतर को आज भी पाटा नहीं जा सका है। अष्टमी या नवमी को कन्याएँ जिमाई जाती हैं। उन्हें आसपास के घरों से बुलाते हैं, उनके पैर छूते हैं, पूजा करते हैं, पर क्या ये देवी–पूजन सिर्फ़ उसी दिन के लिए है? मेरा हमेशा से मानना रहा है कि हम व्रत, त्यौहार या पूजा इसलिए करते हैं कि वो हमें जीने का ढंग सिखाते हैं। हमारे मन और आत्मा को शुद्ध करते हैं। हम देवी की पूजा करते हैं तो हमें इंसानियत की पूजा भी करनी चाहिए। हम कथाएँ पढ़ते हैं तो भावनाओं को भी पढ़ना चाहिए।

अगले दिन छुट्टी थी। पूजा करके मैं मंदिर गई तो आसपास घर होने के कारण पता चला, सुकुमार जी भी उसी मंदिर में जाते हैं। नवरात्रि में भीड़ बहुत होती है। सबको दुर्गा माँ से कुछ ना कुछ चाहिए होता है। सुकुमार जी मुझसे कुछ आगे थे। मैंने देखा–उन्होंने अपनी लोटे के जल से माता के चरण धोए, फूल चढ़ाए। मंत्रोच्चार के बाद उन्हें भोग लगाया और फिर पैरों को हाथ लगाकर, हाथ जोड़कर बहुत देर तक आँखें बंद करके खड़े रहे। पता नहीं उन्होंने क्या–क्या मांगा होगा दुर्गा माँ से। मैं दूर खड़ी यही सोच रही थी कि क्या इस समय उन्हें एक बार भी शाम की वो घटना याद नहीं आई होगी। क्या उन्हें एक बार भी उस निर्जला अफ़सर में देवी का कोई स्वरूप नहीं दिखा होगा।

कविता

महिला अभूतपूर्व है

आस्था आहूजा
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, रंगारेड्डी

वह दुगुने भार से काम करती है
नौकरी और घर का काम करती है
परिवार संभालने की उम्मीद है
और संतुलन बनाकर काम करे,
कभी-कभी यह आसान नहीं होता।

फिर भी वह कठिनाइयों में भी मुस्कुराती है
लेकिन वह उलझन में है
सभी विरोधी विचारों से
उससे आधुनिक होते हुए भी पारंपरिक
होने की उम्मीद की जाती है।

वह बहुत सारी सामाजिक अपेक्षाओं के अधीन है
दोनों को सही अनुपात में संतुलित करना एक कला है
जिसे उसने जीवित रहने के लिए सीखा है
उनसे महान महिलाओं के उदाहरणों का
अनुसरण करने की अपेक्षा की जाती है।

बिना सहारे के भी
वह मजबूती से खड़ी है
वह अपनी अलग पहचान बना रही है
सफल होने के बाद भी वह अपने परिवार को नहीं भूली।

वह अपने परिवार के लिए स्तंभ है
वह एक अद्भुत महिला है
वह आपके आसपास की महिला है,

आपकी माँ
आपकी बहन
आपकी पत्नी
आपकी बेटी।

कविता

मैं नारी हूँ, बनी रहूँ, बढ़ती रहूँ

सौम्या अग्रवाल
प्रबंधक
अध्ययन व विकास केंद्र, कोलकाता

बनी रहूँ मैं सजीव,
अपने सपनों को साकार करूँ,
मेरे आँचल में छुपा सब कुछ,
मैं हूँ वह रहस्य, मैं हूँ वह रहस्य।

हृदय मेरा अनंत है, अशेष है,
प्रेम, करुणा, समर्पण से परिपूर्ण है,
मैं हूँ शक्ति का स्रोत,
मेरी मुस्कान में छुपा अनमोल रत्न है।

मैं सशक्त हूँ, सम्पन्न हूँ,
जी रही हूँ अपनी पहचान,
सफलता की ऊँचाईयों तक,
मैं बढ़ती रहूँ, मैं बढ़ती रहूँ।

बहुत कुछ कर लिया है,
बनी रही हूँ मैं सहारा,
प्यार से जुड़ी हैं मेरी कहानियाँ,
मैं सुनाती रहूँ, मैं सुनाती रहूँ।

मेरी आँखों में है बहुत कुछ,
सपनें, उम्मीदें और ख्वाब,
मैं हूँ आसमान की चमक,
छू जाती है मेरी मुस्कान सभी के मन को।

मैं नारी हूँ, मेरे अंदर का सौंदर्य,
शक्ति, समर्पण और सहानुभूति,
मैं हूँ जीवन का रंग-बिरंगा फूल,
बनी रहूँ मैं, बनी रहूँ मैं।

रहूँ मैं अग्रसर,
अपने सपनों की राहों में,
मैं हूँ नारी, मेरी पहचान है विशेष,
बनी रहूँ मैं, बनी रहूँ मैं।

आलेख

माँ तो माँ होती है

माँ रसोई में काम कर रही थी, तभी उसका 10 वर्ष का बेटा उसके पास आया और बिना कुछ कहे एक कागज़ का टुकड़ा आगे बढ़ा दिया, माँ के हाथ गीले थे, पहले उसने अपने हाथ पोंछे, फिर उस कागज़ को लेकर पढ़ने लगी।

उस पर लिखा था:

पौधों की सफाई करने के	–	10 रूपये
इस सप्ताह अपना कमरा साफ करने के	–	20 रूपये
छोटे भाई का ध्यान रखने के	–	30 रूपये
कचरा बाहर फेंकने के	–	20 रूपये
दुकान से समान लाने के	–	20 रूपये
पूरा हिसाब	–	100 रूपये

बेटे ने उस सप्ताह जितने काम किए थे उसका हिसाब उसने कागज़ पर लिख दिया था। पूरा हिसाब पढ़ने के बाद माँ ने नज़र उठाकर अपने बेटे को देखा और कुछ सोचने लगी। फिर उसी कागज़ को पलटकर पीछे कुछ लिखने बैठ गई। लिखने के बाद उसने वह कागज़ अपने बेटे को दे दिया।

उस पर लिखा हुआ था:

नौ महीने जो मैंने तुम्हें अपनी कोख में रखा, उसकी कीमत – कुछ नहीं

तुम जब छोटे थे और जब भी तुम बीमार पड़े, तब सारी रात जागकर तुम्हारी सेवा करने की कीमत – कुछ नहीं

तुम्हारे खिलौने, कपड़े, किताबें, खाने–पीने की चीज़ें और यहाँ तक की तुम्हारी परवरिश करने की कीमत – कुछ नहीं

इन सब में जब तुम मेरा प्यार शामिल करोगे तो उसकी कीमत तो लगाई ही नहीं जा सकती। मैं तुम्हें इतना प्यार करती हूँ।

बेटे ने जब अपनी माँ की लिखी हुई बातें पढ़ी, तो उसकी आँखों में आँसू आ गए।

प्रिया पँवार
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, गाज़ियाबाद

उसने अपनी माँ की आँखों मे देखा और बोला **आई लव यू मम्मी,** फिर उसने पेन लिया और बड़े अक्षरों में उस कागज़ पर लिखा **पेड इन फुल**

मेरी गलतियों को माफ कर देती है,
जब गुस्से में होती है, तो भी प्यार देती है।
होठों पे उसके हमेशा दुआ होती है,
ऐसी सिर्फ और सिर्फ माँ होती है।।

दोस्तों, हमारे जीवन में माँ की जगह कोई नहीं ले सकता। एक माँ ही ऐसी होती है जो हमारा चिल्लाना भी सह जाती है। जीवन में किसी और व्यक्ति पर चिल्लाकर देखिए, वह आपको चार बात सुना कर चला जाएगा, हो सकता है आपको दो थप्पड़ भी मार दे। किन्तु एक माँ ही ऐसी होती है जो आपका गुस्सा भी चुप हो के सह लेती है, क्यूँकि माँ तो माँ होती है।

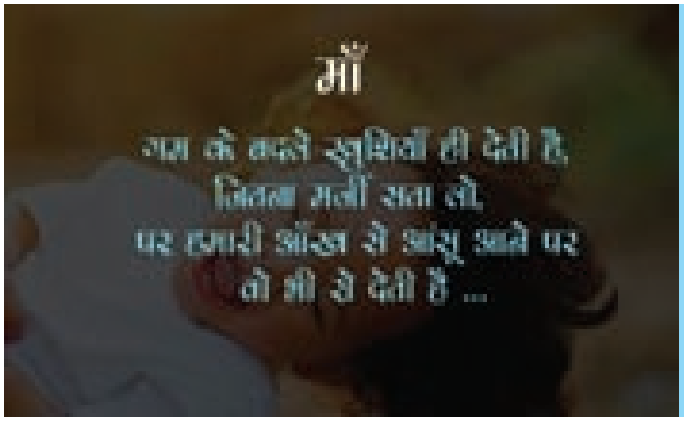

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। माननीय सदस्य एवं कार्यवाहक संयोजक डॉ अमी याज्ञिक तथा श्रीमती कांता कर्दम से प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए गोवा क्षेत्रीय प्रमुख श्री आर गणेश। साथ ही प्रधान कार्यालय से महाप्रबंधक श्री टी. के. वेणुगोपाल, अं.का. मणिपाल से उप महाप्रबंधक श्री भूपतिपल्ली सत्यनारायण तथा डीएफएस एवं बैंक के अधिकारीगण तस्वीर में नज़र आ रहे हैं।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, पानीपत का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। समिति की ओर से माननीय सदस्य एवं संयोजक डॉ मनोज राजोरिया, डॉ अमी याज्ञिक, श्रीमती कांता कर्दम तथा अन्य माननीय सांसद उपस्थित रहे। साथ ही प्रधान कार्यालय से महाप्रबंधक श्री टी. के. वेणुगोपाल, अं.का. करनाल से महाप्रबंधक श्री अभय कुमार एवं पानीपत क्षेत्रीय प्रमुख श्रीमती सुनीता कुमारी तथा डीएफएस एवं बैंक के अधिकारीगण तस्वीर में नज़र आ रहे हैं।

केनरा बैंक
Canara Bank
भारत सरकार का उपक्रम

Together We Can

समर्थ शक्ति की नई उड़ान

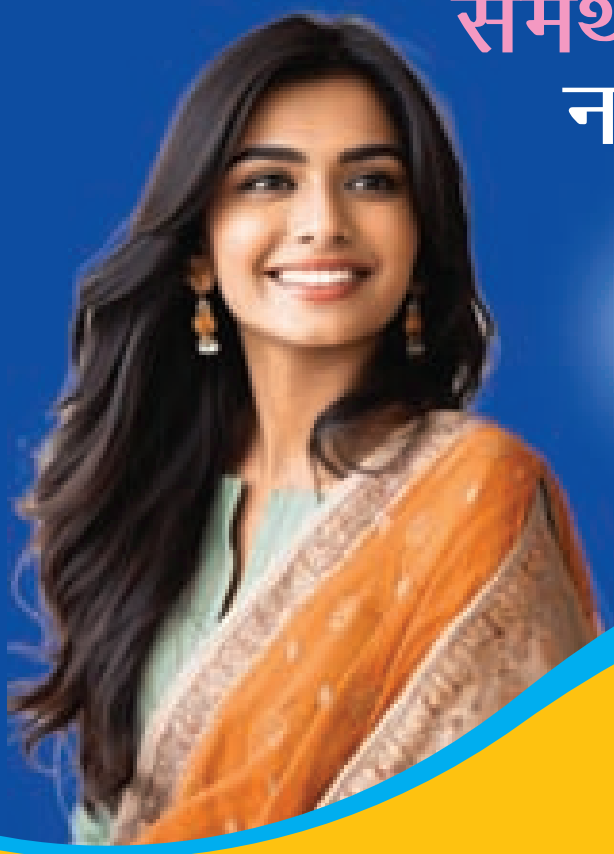

केनरा एंजेल

सपनों से आगे

महिला बचत बैंक खाता

विशेष सुविधाएं

- **कैंसर केयर** बीमा **10 लाख** रु. तक
- **वैयक्तिक दुर्घटना बीमा 26 लाख*** रु. तक
- **निःशुल्क** एनईएफटी/आरटीजीएस/आईएमपीएस
- **असीमित निःशुल्क** लॉकर संचालन
- लॉकर किराये के शुल्क पर **15% तक की छूट**

कैंसर केयर एवं दुर्घटना कवर

अद्वितीय सुविधाएं

- कार्ड आधारित **निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच**
- **निःशुल्क** प्लेटिनम रुपे कार्ड
- परिवार के अधिकतम 3 सदस्यों (पति/पत्नी या बच्चे) के लिए अतिरिक्त शून्य शेष राशि के साथ **पारिवारिक बैंकिंग** सेवाएँ
- **निःशुल्क** एसएमएस अलर्ट
- **अर्बन कंपनी, मिंत्रा, अमेज़न, स्विगी, बुक माय शो** जैसे शीर्ष ब्रांडों से **विशेष कार्ड ऑफर** के साथ

भरपूर ऑफर के साथ

*शर्तें लागू

90760 30001 | www.canarabank.com | 1 Bank Number 1800 1030